www.thearyasamaj.org

Fortnightly per copy Rs. 12/- only

ओ३म्

3rd December 2016

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

पत्रांक :-फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/16/ *दिनांक:-17-11-2016*

आमंत्रण-पत्र

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

दिनांक : 2, 3 व 4 फरवरी, 2017 **स्थान : हैदराबाद (तेलंगाना)**

आदरणीय............................

सादर नमस्ते!

आपकी सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता से विचार-विमर्श करने तथा भावी दिशा निर्धारित करने के लिए **सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना** के सौजन्य से आगामी **2 से 4 फरवरी, 2017 तक तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में राष्ट्रीय स्तर का आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन आयोजित** किया जा रहा है।

यह सम्मेलन आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए आयोजित किया जा रहा है क्योंकि आर्य समाज तथा उससे बाहर के समस्त प्रबुद्धजन यह अनुभव कर रहे हैं कि आर्य समाज सक्रिय, तेजस्वी और प्रभावशाली कैसे बने? वर्तमान में राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान हेतु आर्य समाज की दिशा व दृष्टिकोण क्या हो? आर्य समाज के छठे नियम में निर्दिष्ट मुख्य उद्देश्य के क्रियान्वयन की क्या योजना बने? इस तरह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण व ज्वलन्त विषयों पर चिन्तन करने हेतु यह सम्मेलन अति आवश्यक व सामयिक है।

सम्मेलन में विचारणीय विषय अधोलिखित हैं। इन विषयों पर आप अपने गहन विचारों को संक्षेप में लिखित रूप में अवश्य भेज दें या साथ लेते आवें।

1. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान एवं उपायों के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या हो? वर्तमान में आर्य समाज आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषयों पर क्या कार्यशैली अपनाये ताकि आम जनता के साथ आर्य समाज सीधा जुड़ सके।

www.thearyasamaj.org

2. वर्तमान के समस्त प्रचार माध्यमों यथा प्रिन्ट मीडिया (अखबार व पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रानिक मीडिया (टी.वी., रोडिया आदि) के द्वारा वेद, दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार की योजना क्या हो?
3. सिद्धान्तों के गहन विषयों पर विशेष शोध एवं शंका समाधान हेतु विद्वत समिति की रूपरेखा।
4. वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म कैसे बने विषय पर विशेष चर्चा।
5. आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव, साप्ताहिक सत्संग व अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में उपस्थिति के सम्बन्ध में प्रभावशाली योजना क्या हो?
6. आर्यों में तथा सामान्य जनता में आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ाने की योजना क्या बने?
7. बालक, बालिकाओं व युवक-युवतियों को संस्कारित करने तथा आर्य समाज में दीक्षित करने हेतु चरित्र निर्माण शिविरों, वाद-विवाद, भाषण, लेखन आदि प्रतियोगिताओं की योजना एवं अन्य कार्यक्रम क्या हों?
8. गुरुकुलों के स्नातकों एवं आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आर्य समाज के कार्यों में उपयोग की योजना।
9. आर्य समाज की स्थानीय इकाई को जन सामान्य के लिए उपयोगी बनाने तथा इसके माध्यम से ऐसे जनसेवा के कार्य करने जिनसे सामान्य जनता आर्य समाज से जुड़े आदि की योजना।

सम्मेलन में आर्य समाज के वरिष्ठ आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, वरिष्ठ उपदेशकों, गुरुकुलों के वरिष्ठ आचार्यों, वरिष्ठ आर्य भजनोपदेशकों, वरिष्ठ आर्य बुद्धिजीवियों तथा वरिष्ठ आर्य नेताओं को आमंत्रित किया जा रहा है। आप आर्य समाज के लब्ध प्रतिष्ठ व्यक्तित्व हैं। आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप इसमें अवश्य पधारकर अपनी गरिमामयी उपस्थिति एवं लिखित सुझाव व विचारों से सम्मेलन की सफलता में अपना योगदान प्रदान करें।

ऐतिहासिक धरती हैदराबाद से, आर्य समाज नए इतिहास को रचने में सफल हों इसी आकांक्षा से हम सभी को आमन्त्रित कर रहे हैं।
हैदराबाद आपका स्वागत करता है।

निवेदक

(प्रो. विट्ठल राव आर्य)
सभा मंत्री
प्रधान, आ.प्र.सभा आन्ध्र प्रदेश-तेलंगाना
मो.:-09849560691

(आचार्य सोमदेव शास्त्री-मुम्बई)
संयोजक
मो.:-09869668130

(स्वामी आर्यवेश)
सभा प्रधान
मो.:-9013783101

సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యమున

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో

హైదరాబాదు నగరంలో

జాతీయ స్థాయి విద్వాంసుల - బుద్ధిజీవుల బృహద్ సమ్మేళనం

2 నుండి 5 ఫిబ్రవరి 2017 వరకు

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హింది-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २४ अंक : २३
दयानन्दाब्द : १९३
सृष्टि संवत् : १९६०८५३११७
वि.सं. : २०७३
दुर्मुखि नाम संवत्सर मार्गशिर शुक्ल पक्ष
३-१२-२०१६

प्रधान सम्पादक
विठ्ठलराव आर्य

सम्पादक मण्डल
हरिकिशन वेदालंकार
डॉ. वसुधा शास्त्री
लक्ष्मण सिंह ठाकुर
रामचन्द्र कुमार
अशोक श्रीवास्तव
डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या

वार्षिक मूल्य रू. 250-00

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद
दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24756983
फ्याक्सः 040-24557946, 24760030
Email :
aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com
acharyavithal@gmail.com
aryavithal@yahoo.co.in.
Mobile No. : 09849560691
Editor : Vithal Rao Arya
Annual subscription: **Rs.250/-**

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

प्रत्येक मनुष्य को पुरूषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा कियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

''कृणवन्तो विश्वमार्यम्'' की ओर एक विचार....

आर्य समाज की दिशा व कार्यशैली को निर्धारित करने का ऐतिहासिक मौका

२००८ के जनवरी मास में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल को निमंत्रित कर चार दिवसीय राष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन हैदराबाद में आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. के तत्वावधान में किया गया था। सम्मेलन में यह कोशीश की गई थी कि आर्य समाज समाज देश में बदलते समय के अनुसार अपने मन्तव्यों पर कायम रहते हुए भी समस्याओं के संदर्भ में समीचीन और सशक्त बनकर उभरे। राष्ट्रीय स्तर के महात्माओं और विद्वानों के समक्ष उनके प्रयासों से एक नया नेतृत्व देने के लिए विरक्त मण्डल का गठन हुआ था। जिस आशय के साथ विरक्त मण्डल का गठन हुआ उसमें बहुत कुछ प्रगति महात्माओं ने करने की कोशीश की है। इसके बावजूद भी आज के सन्दर्भो में बाहर की दुनिया आर्य समाज को न के बराबर जानती है। दयानन्द के दर्शन को भी दुनिया के विद्वतगण बहुत कम जानते है। दुनिया तो बहुत दूर की बात पर भारत के ही कई विश्व विद्यालयों में पढ़ाने वाले प्रोफेसर्स को भी बहुत कम जानकारी है। यह क्यों है ? ऐसा क्यों हुआ है ? इस पर गहनतम चिन्तन करने की जरूरत है। इस बीच हमारे कुछ आर्य बन्धु विदेशों में सम्मेलनों को आयोजित कर वेद प्रचार की दुंदुभि बजाने की प्रशंसनीय बात करते है। देश हो या विदेश में यह मात्र कुछ परम्पराओं को निभाने के अतिरिक्त ऐतिहास में जो आर्य समाज का जो स्वरूप था वहां तक लेजाने की प्रक्रिया नहीं कही जा सकती। छोटा हो या बड़ा आत्मप्रशंसा में चाहे कितना ही कुछ कह लें पर यह यथार्थ है कि आज स्कूलों में, कॉलेजों में या सामान्य तौर पर बाहर की दुनियां में आर्य समाज और ऋषि दयानन्द के बारे में बहुत कम जानकारी है। यह भी यथार्थ है कि आर्य समाज दुनिया से या समाज से कट रहा हैं।

आत्मश्लाघा अपनी-अपनी प्रशंसा के लिए उनकी दृष्टि से ठीक हो सकता है पर इतिहास में अपने आपको और जनता के लिए खड़ा नहीं कर पायेंगे। यह विचार कुछ नकारात्मक भी लग सकते है पर यह कोई निराशा पैदा करने के लिए नहीं बल्की एक सकारात्मक सोंच को पैदा करने के लिए आत्म विश्लेषण करना बहुत जरूरी है।

एक महा पुरुष ने कहा था कि इतिहास बनाने का संकल्प रखने वाले व्यक्ति को या व्यक्ति समुदाय को या संगठन को दुनिया को बदलने का साफ नज़रिया होना चाहिए। विचार में ही स्पष्टता (Clarity) न हो तो वह व्यक्ति, व्यक्ति समुदाय या सम्बधित संगठन हमेशा संशयात्मक स्थिति में रहेगा (Confused State)। गीताकार ने भी बहुत ही साफ शब्दों में कहा कि **''संशयात्मा विनश्यति''** संशय के स्थिति में उस विचार पर विश्वास भी कम होता है संशय रहित विचार हों, उस पर पूरा भरोसा हो और उसको हासिल करने कि कार्यनीति हो

फल न देने वाला (वैयक्तिक और सामूहिक) विचार केवल भावानात्मक होता है और कार्यनीति रहित भावना निरर्थक होती है। भावना (emotion) अपने-आप में कोई फल नहीं देती। इसी प्रकार कार्य नीति रहित विचार भी कोई परिणाम नहीं देता। सुस्पष्ट विचार हो उसके अनुकूल भावना हो तथा विचार और भावना के अनुसार कार्यनीति और कार्यशैली हो। विचार मंथन के लिए हम एक बात और विद्वानों के सम्मुख रख रहे हैं हम सबका एक भावनात्मक नारा है **''कृणवन्तो विश्वमार्यम्''**। हम सब जानते है या पूर्वाग्रह छोड़कर विचार करें तो दुनिया में विभिन्न सभ्यताओं को मानने वाले उस पर चलने वाले अनेक वर्ग के लोग हैं। भिन्न-भिन्न वर्ग के लोगों की भाषाएं भी भिन्न-भिन्न है। आचरण भी अलग-अलग है। क्या यह सम्भव है कि सभी की भाषा एक ही हो जाय या सभी सन्ध्या-हवन ही करें। इस समय क्या आर्य समाज सन्ध्या-हवन की परम्परा और कुछ एक संस्कारों की परम्परा मात्र का निर्वाह करके **''कृणवन्तो विश्वमार्यम्''** के ध्येय को प्राप्त कर सकते हैं ? इसीलिए हमारा कहना है कि गहनतम चिन्तन-मनन होना चाहिए। परम्परागत तरीके से एक नहीं दस सम्मेलन मनालो हमारे हिसाब से विशेष परिणाम निकालने वाला नहीं है। सम्मेलन चाहे कोई कर लें। देश में करें या विदेश में। भारत के ही हिन्दु समुदाय के लोग अपनी मजबूरी से विदेशों में बसे हुए है। आप यहाँ के हिन्दुओं के बीच करले या विदेशों में रह रहे हिन्दुओं के बीच में। यह यथार्थ है कि विदेशों में किसी भी विदेशी नागरिक को आर्य समाजी नहीं बना सकें। मेरा नम्र निवेदन है कि आर्य समाज को एक पंथ के रूप में न खड़ा करें। आर्य समाज की जो क्रांतिकारिता रही है उस ओर हम सबको ईमानदारी से सोंचने की जरूरत है।

www.thearyasamaj.org

दयानंद की प्रासंगिकता

स्वामी अग्निवेश

महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपने विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व से उन्नीसवीं सदी के पराधीन और जर्जरित भारत को गहराई तक झकझोरा था । उसका प्रभाव हम इक्कीसवीं सदी में भी महसूस कर रहे हैं और उनसे प्रेरणा पाकर उन सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक, अंधविश्वासों से लोहा ले रहे हैं जो दीमक बनकर समाज व धर्म को भीतर ही भीतर खोखला कर रहे हैं । सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक जगत की व्याधियों, दुर्बलताओं और त्रुटियों का तलस्पर्श अध्ययन उन्होंने किया था । रोग के अनुसार ही उन्होने उपचार किया । तब तक ऐसा सर्वंगीण प्रयास किसी भी समकालीन सुधारक से न हो सका था ।

महर्षि दयानंद का मूलतः वेद पर आधारित था, जो अपने उद्‌भव काल से ही स्वप्रमाणित, चिरंतन और शाश्वत समझे जाते रहे हैं । दयानंद जितने प्रासंगिक उन्नीसवीं शताब्दी में थे उतने ही प्रासंगिक हर युग-खंड में रहेंगे । कारण, विज्ञान और तकनीक चाहे जितनी उन्नति कर ले मनुष्य की धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की भाव-भूमि वही रहेगी जो अनादि काल से चली आ रही है और अनंत काल तक चलती रहेगी । जीवन के इस क्रम, सत्य, तथ्य व लक्ष्य को न विज्ञान बदल सकता है और न ही तकनीक । महर्षि-दर्शन हर युग के मानव को दिशा-बोध प्रदान करता रहेगा और हर युग के लिए वह प्रासंगिक बने रहेंगे ।

दयानंद का जो मूल्यांकन किया गया वह अधूरा तो है ही, यथार्थ से भी कोसों दूर है । उन्हें मात्र हिंदू समाज सुधारक, कट्टर राष्ट्रवादी, पंथों का कटु आलोचक या आर्य समाज जैसी जुझारू व लड़ाकू संस्था का संस्थापक मान लेना उनके प्रति अन्याय है । इन चौखटों में उन्हें कैद करके हमने उनके द्वितीय और भव्य जीवन दर्शन का अवमूल्यन करने का अपराध किया है । यह ठीक है कि समकालीन समस्याओं से भी उन्हें संघर्ष करना पड़ा था लेकिन यह उनके संघर्ष की इति नहीं आरंभ था । दयानंद का मूल्यांकन पूर्वाग्रहों से नहीं बल्कि उस दृष्टिकोण से होगा जो आगे चल कर रोम्यांरोला, योगी अरविंद घोष, साधु टीएल वास्वानी आदि ने अपनाया । दयानंद मानवतावादी, वैश्य-संस्कृति के उद्‌गाता, विश्व शांति के महानायक, सांप्रदायिक, सद्‌भावना के उन्नायक, समाजवादी मूल्यों के प्रवक्ता और अन्याय, अज्ञान, अभाव और शोषण के विरुद्ध संघर्षरत रहनेवाले कालजयी योद्धा थे ।

स्थूल रूप से देखें तो महर्षि दयानंद का संघर्ष मूलतः पौराणिक हिंदुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों, जैनियों व सिखों से था क्योंकि उनके धर्मग्रंथों को लेकर उन्होंने कठोर टिप्पणियां 'सत्यार्थ प्रकाश' में की हैं । लेकिन ऐसा निष्कर्ष निकालने से पूर्व हम उनके ऋषित्व को भूल जाते हैं और यह भी भूल जाते हैं कि खंडन में अगर उन्होंने दस पृष्ठ लिखे हैं तो मंडन में सौ पृष्ठ लिखे हैं । उनका खंडन तर्कयुक्त, धर्मयुक्त, विज्ञानयुक्त और वैदिक गरिमा से ओत-प्रोत है । सत्यार्थ प्रकाश के अलावा भी उन्होंने छोटे-बड़े लगभग साठ ग्रंथों की रचना की थी । उनके इन ग्रंथों के प्रचार एवं विशद व्याख्या पर इतना ध्यान नहीं दिया गया जितना दिया जाना चाहिए था, तथापि प्रभाव की दृष्टि से इन ग्रंथों को कम आंकना दुष्कर है । यही कारण था कि दयानंद का आलोचक स्वरूप अधिक प्रखर और मुखर और मुखर होकर सामने आया । इन उपेक्षित ग्रंथों में से कुछ की चर्चा यहां करना अप्रासंगिक न होगा ।

सत्यार्थ प्रकाश ने अंधविश्वास, कुरीतियों, मूर्तिपूजा, अवतारबाद, बहुदेववाद, श्रद्धा, तीर्थाटन पर जो जमकर प्रहार किया ही पर इसके साथ-साथ स्वाधीनता की रणभेरी भी बजाई, अपने इतिहास पर गर्व के भाव उत्पन्न किए, अपनी परंपरा के प्रति आस्था और संस्कृति के प्रति विश्वास जगाया, स्वदेशी का मंत्र जनमानस में फूंका, सेमेटिक संप्रदायों द्वारा चलाए जा रहे धर्मांतरण के अभियान पर रोक लगाई । नर-नारी की समानता की अलख जगाई और अस्पृश्यता के विरुद्ध शंखनाद किया । 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' लिखकर उन्होंने वेदभाष्य की कुंजी विद्वत् समाज को दी । पश्चिमी वेदज्ञों द्वारा वेदों पर हो रहे अनर्गल प्रहारों को रोका, वेदोंके उदात्त, विशाल और गंभीर स्वरूप को प्रकट किया । अंग्रेज शासकों को उनके आंदोलन में १८५७ के विप्लव की गंध आई और इसे खतरनाक आंदोलन मानते हुए अपने खुफिया तंत्र को सक्रिय कर दिया लेकिन उन्होंने एक बागी फकीर बनकर अपने ढंग से स्वराज का मंत्र जन-जन तक पहुंचाया । नीचे ही नीचे उन्होंने क्रांति की प्रचंड पृष्ठभूमि तैयार कर डाली । बहुत कम लोगों को पता है कि अपने इस अभियान के कारण ही ऋषि दयानंद को अपना बलिदान देना पड़ा । राजनीतिक हत्याओं के रहस्य शताब्दियों बाद जाकर खुलते हैं । यही त्रासदी ऋषि हत्याकांड के साथ हुई । यह वह समय था जब पाश्चात्य जीवन मॅल्यों के प्रति भारतीय जनमानस में कुछ लोग आस्था का भाव जगा रहे थे और अनेक सुशिक्षित भरतीय ईसाइयत की दीक्षा ले चुके थे । राजा राममोहन राय के ब्रह्मसमाज का केशवचंद सेन के नेतृत्व में ईसाईकरण हो रहा था । समय की इस मुखर चुनौती कासामना करते हुए ऋषि दयानंद ने 'संस्कारविधि' लिखी और भारतीयों को इस देश की मिट्टी की परंपरा व संस्कृति से जोड़कर उन्हें सशक्त किया । यह अभियान उन मूर्तिपूजक पुजारियों के लिए एक सुविधाजनक आर्थिक विकल्प था जो सोचते थे कि मूर्तिपूजा छोड़ने से उनकी रोजी-रोटी छिन जाएगी । संस्कारविधि ने यज्ञ, यज्ञोपवीत, संध्या आदि की प्राचीन विलुप्त परंपराओं को पुनर्जीवित किया, जिन पर केवल ब्राह्मणों का एकाधिकार हो गया था । नारी-शिक्षा व नर-नारी समानता की अलख भी संस्कारविधि ने लगाई । इसलिए इससे एक बहुआयामी मानसिक क्रांति का सूत्रपात हुआ । आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, व्यभिचार, नशाखोरी,

www.thearyasamaj.org

बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन में पधारने वाले महानुभावों के लिए विशेष सूचना

आप सबको विदित है कि हैदराबाद में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना के सौजन्य से बुद्धिजीवी एवं विद्वत सम्मेलन २ फरवरी से ४ फरवरी २०१७ तक आयोजित है । यह सम्मेलन एक ऐतिहासिक सम्मेलन होगा । फरवरी का प्रथम सप्ताह होने से थोड़ीसी ठण्ड जरूर रहेगी । हालांकी यह ठण्ड उत्तर भारत की तरह न होकर मध्यम गति की ठण्ड होती है फिरभी आगन्तुक महानुभावों से निवेदन है कि अपने साथ हल्के से गरम कपड़े साथ लेते आएं तथा ओढ़ने के लिए लोही आदि लेते आएं ।

बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन होने के बावजूद यह सम्मेलन सभी के लिए खुला है । सभी आमंत्रित हैं, सभी महानुभाव व श्रोतागण दर्शक दीर्घा में उपस्थित होकर विद्वानों द्वारा दिए जाने वाले विचारों पर चिन्तन-मनन कर सकते है । यह सम्मेलन आर्य समाज की भावी दिशा को तय करेगा । सक्रीय कार्य नीति बनाकर संगठन को मजबूती प्रदान करेगा । राष्ट्र के सभी प्रान्तों के आर्यों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर समाज व राष्ट्र निर्माण में ऐतिहासिक फैसले लेने की शक्ति प्रदान करें ।

२, ३, ४ फरवरी २०१७ को होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन में भारी संख्या में पधारें ।

ऐतिहासिक धरती हैदराबाद से आर्य समाज, नए इतिहास को रचने में सफल हों इसी आकांक्षा से हम सभी को आमन्त्रित कर रहे हैं । हैदरबाद आपका स्वागत करता है ।

श्री विट्ठल राव आर्य
महामंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली व
प्रधान,आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना, हैदराबाद व

जिन विद्वान महानुभावों को विशेष निमंत्रण दिया गया है उन्हें पत्र द्वारा सूचित किए गए अनुसार मार्ग व्यय दिया जाएगा । उनसे हमारी प्रार्थना है कि रेल टिकट की फोटो कॉपी हमें अवश्य प्रदान करने का कष्ट करें । रेल टिकट की फोटो कॉपी व्हाट्सप के द्वारा भी भेजा जा सकता है । जो महानुभाव ईमेल करना चाहेंगे, कृपया निम्न पते पर ईमेल करें । आपके आने की सूचना अवश्य दें ताकि आवास की व्यवस्था की जा सकें ।

नंबर ०९८४९५६०६९१

acharyavithal@gmail.com
aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com
09849560691

आतंकवाद, प्रदूषण, हिंसा, अपराधवृत्ति, विकसित राष्ट्रों की दादागिरी, शोषण, अन्याय, अज्ञान और अभाव का बोलबाला है । हर समाज व राष्ट्र इन सभी दोषों से आहत और व्याकुल है । दयानंद सरस्वती ने इन समस्त रोगों का उपचार पंचमहायज्ञ का विधान प्रस्तुत करके किया । विज्ञान और तकनीक अपने साथ उपभोक्तावादी संस्कृति के अभिशप्त परिणाम भी लाती है जिनका प्रतिकार आध्यात्मिक चेतन द्वारा ही संभव है । पंचमहायज्ञ इस आध्यात्मिक चेतना के मूल स्त्रोत हैं ।

महर्षि दयानंद द्वारा पुनर्स्थापित जीवन दर्शन का मूल्यांकन भारतीय संदर्भ में करने के हम अभ्यस्त हो चुके हैं, जिससे उसका स्वरूप संकुचित और प्रभाव क्षीण होता है । महर्षि दयानंद ने वेद, योग, पंचमहायज्ञ, यज्ञोपवीत, आयुर्वेद, इतिहास, संस्कृति संस्कार आदि के प्रति आस्थाभाव जगाकर उन ऋषिकृत परंपराओं को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया था । जिन परंपराओं ने अतीत में भारत को विश्गुरु के पद पर स्थापित और प्रतिष्ठित कराया था । यह युग तुलनात्मक अध्ययन का युग है । तर्क और विज्ञान की कसौटियों में लोगों का विश्वास पहले से ही अधिक बढ़ा है, इसलिए दयानंद के जीवन-दर्शन के फलते-फूलने की व्यापक संभावनाएं आज भी मौजूद हैं । इन अवसरों व संभावनाओं का समुचित लाभ उठाकर महर्षि दयानंद की प्रासंगिकता विश्व स्तर पर भी सिद्ध और मुखर की जा सकती है । बहुत कम लोग जानते हैं कि ऋषि दयानंद ने दिल्ली दरबार के अवसर पर सभी संप्रादायों के आचार्यों को आमंत्रित करके एक ऐसी मानव आचार संहिता तैयार करने का आह्वान कियाथा जो सर्वानुमोदित हो । आधुनिक विश्व आज इसी ओर बढ़ रहा है । महर्षि दयानन्द ने जो प्रयोग डेढ़-दो सौ वर्ष पूर्व किए थे । धीरे-धीरे वे प्रयोग समय की कसौटी पर आज खरे उतर रहे हैं और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रहे हैं । जरूरत यह है कि दयानंद के जीवन दर्शन को विश्व पटल पर प्रस्तुत करने का अभियान शुरू हो । टेम्स, वोल्गा और गंगा की धाराएं मिलकर जब त्रिवेणी बनाएंगी तभी ऋषि दयानंद का कीर्तिध्वज विश्व भर में लहरा सकेगा ।

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकादृा ग्रन्थ का उद्देदृय और प्रभाव'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादूनं

'**सत्यार्थ प्रकादृा**'' विदृव साहित्य में महान ग्रन्थों में एक महानतम् ग्रन्थ है, ऐसा हमारा अध्ययन व विवेक हमें बताता हैं हमारी इस स्थापना को दूसरे मत के लोग सुनेंगे तो इसका खण्डन करेंगे और कहेंगे कि यह बात पक्षपातपूर्ण हैं उनके अनुसार उनके मत व पंथ का ग्रन्थ ही सर्वोत्तम व महानतम् ग्रन्थ हैं इस पर हमारा एक प्रदृन है कि क्या संसार के सभी मत व पन्थों के ग्रन्थों में केवल सत्य ही सत्य है और क्या वह वेद के समान एकांगी न होकर सर्वांगपूर्ण हैं जहां तक हमारा अध्ययन है, संसार के सभी प्रमुख मत व पन्थ असत्य व अविवेकपूर्ण बातों से भरे पड़े हैं जिनका दिग्दर्दान भी सत्यार्थप्रकादृा के ग्रन्थ लेखक महर्षि दयानन्द ने इसी ग्रन्थ के ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें एवं चौदहवें समुल्लास में कराया हैं प्रायः सभी मतों में अन्धविदृवास एवं अज्ञान व अविद्या की बातें हैं हम निवेदन करते हैं कि जो महानुभाव हमारे कथन से सहमत न हों, वह पहले सत्यार्थप्रकादृा का निष्पक्ष होकर अध्ययन करें और फिर अपने मत का अध्ययन कर सत्यार्थ प्रकादृा की बातों व कथनों का प्रतिवाद करें यदि वह सत्यार्थ प्रकादृा की मान्यताओं व सिद्धान्तों का प्रतिवाद नहीं कर सकते, तो इसका अर्थ है कि सत्यार्थप्रकादृा सत्य व विवेक की कसौटी पर सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं हमारा अनुमान है कि सभी विपक्षी व विरोधी सत्यार्थप्रकादृा को मनुष्य के जीवन में असत्य को मिटा कर सत्य का प्रकादृा करने वाला ग्रन्थ पायेंगें

सत्यार्थप्रकादृा वेदों के मर्मज्ञ व महाभारतकाल के बाद वेदों के सर्वोच्च विद्वान ऋषि दयानन्द की रचना हैं इसका उद्देदृय महर्षि दयानन्द के जीवन काल और बाद में देदृा व विदृव के लोगों को वैदिक सत्य मान्यताओं से परिचय कराना था वहीं उन्हें असत्य व अज्ञान पर आधारित अन्धविदृवासों से दूर व मुक्त करना भी थां अपने प्रकादृान काल से ही सत्यार्थप्रकादृा ने देदृा व विदृव से असत्य व अज्ञान को दूर करने में सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं विद्वानों को सत्यार्थप्रकादृा से देदृा व विदृव में हुई क्रान्ति का अध्ययन कर इसका यथार्थ मूल्यांकन करने का कार्य अभी करना हैं सत्यार्थप्रकादृा की रचना से पूर्व देदृा में अज्ञान व अन्धविदृवास चरम सीमा पर पहुंच गये थें पाषाण व धातुओं की मूर्तियों को बनाकर उसे ईदृवर बताया जाता था और उसमें अर्थहीन व बुद्धिहीन तरीकों से प्राण प्रतिष्ठा कर पूजा की जाती थीं आज भी यह कार्य जारी है परन्तु आज मूर्तिपूजा करने वाले भी जानते व मानते हैं कि ईदृवर सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अनादि, नित्य व सशष्टिकर्ता हैं वेदों के ज्ञान व उसकी महत्ता के साथ युक्ति व तर्क से भी वेदों को ईदृवरीय ज्ञान सिद्ध किया जा चुका हैं वेदों की भाषा भी विदृव के साहित्य में बेजोड़ व अन्यतम हैं गुणों के आधार पर संसार की कोई भाषा इसके सम्मुख नहीं ठहरतीं वेद संसार के सबसे प्राचीनतम व आदि ग्रन्थ हैं वेद से पूर्व संसार में कोई ग्रन्थ अस्तित्व में नहीं आयां मनुष्य के अन्दर वह सामर्थ्य नहीं की वह विविध विषयों वाले वेद के समान महान व विदृाल ग्रन्थ की रचना कर सकें यदि संसार के सभी लोग मिल जायें तो भी वेद जैसा ग्रन्थ व उसकी भाषा के समान भाषा की रचना कदापि नहीं कर सकतें यह दोनों तो सर्वनियन्ता व सर्वज्ञ ईदृवर का नित्य ज्ञान ही है जो सदा एक जैसा रहता है, जिसमें कभी कोई परिवर्तन व परिवर्धन नहीं होतां वेद जैसे सशष्टि के आरम्भ में था, वैसा ही आज है तथा वैसा ही सशष्टि की प्रलय होने से पूर्व भी रहेगां इतना ही नहीं यह वेद ज्ञान पूर्व कल्पों में ऐसा ही था और बाद के कल्पों में भी ऐसा ही रहेगां इसी कारण इसे ईदृवर का नित्य ज्ञान कहते हैं यह स्वयं में पूर्ण व निर्दोष है, अतः कभी किसी परिवर्तन व संदृोधन की इसमें आवदृयकता नहीं पड़ेगीं सत्यार्थप्रकादृा एक प्रकार से और कुछ नहीं अपितु वेद प्रचार के लिए वेदों की विदृोषाओं को अपने अन्दर समेटे हुए है जिससे संसार के लोग वेदों से परिचित हो सकें और मिथ्या मतों को मानना छोड़कर सत्य व ईदृवर की वाणी वेद का श्रवण, चिन्तन, मनन, आचरण व पालन करें जिससे उन्हें इस जन्म में अभ्युदय और मशत्योत्तर जीवन में मोक्ष वा मुक्ति की प्राप्ति हो सकें सत्यार्थप्रकादृा केवल वैदिक मान्यताओं और सिद्धान्तों का प्रचार और प्रसार ही नहीं करता अपितु यह असत्य व मिथ्या मान्यताओं व मतों से भी देदृा व संसार के लोगों का परिचय कराता है और असत्य व अज्ञान सहित अन्धविदृवास व कुरीतियों को छोड़ने की प्रेरणा करता है जिससे सभी मनुष्य अपने अपने जीवन में अभीष्ट सुख व उन्नति को प्राप्त करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त कर जीवन को सफल कर सकें

कोई मनुष्य विद्वान, योगी और ऋषि, जो अधिक से अधिकएक जन्म में उत्तम से उत्तम बन सकता व कार्य कर सकता है, वह सब कुछ अनेक विपरीत परिस्थितियों के होते हुए भी ऋषि दयानन्द ने किया हैं देदृा के नादान व स्वार्थी लोगों ने ऋषि दयानन्द के ज्ञान, विद्या व मनुष्यमात्र के हित की भावना को समझने में भारी भूल की और उनके कार्यों में सहयोग करना तो दूर रहा, अपितु उनके मार्ग में समस्यायें और कठिनाईयां पैदा कीं यहां तक की अनेकों बार उन्हें विष दिया जिससे वह 58 वर्ष की आयु पूर्ण कर उनसठवें वर्ष में जन्म व मरण के बन्धन से छूट कर मोक्ष को प्राप्त हो गयें अपनी मशत्यु के समय तक स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकादृा के अतिरिक्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि,

www.thearyasamaj.org

आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, संस्कश्तवाक्यप्रबोध सहित ऋग्वेद का आंदिृाक व यजुर्वेद का पूर्ण भाष्य सम्पन्न कियां इसके अतिरिक्त कुछ अन्य ग्रन्थ भी लिखें उनका कार्य ऐसा था कि जिसका अध ययन, अनुकरण व आचरण कर मनुष्य जीवन के उद्देदृय वा चरम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकता है या उस दिदृाा में आगे बढ़ सकता हैं कोई मनुष्य उनके द्वारा बताये अमश्त समान ज्ञान युक्त जीवन से लाभ उठायें न उठायें, यह सबका अपना अधिकार है परन्तु इस मार्ग को अपनाने में दूरगामी लाभ और न अपनाने में बहुत बड़ी हानि छिपी हुई हैं

सत्यार्थप्रकादृा का प्रभाव सभी मत–मतान्तरों पर इस रूप में पड़ा है कि वह अपनी अज्ञानता व अन्धविदृवास से पूर्ण मान्यताओं को भी तर्क संगत सिद्ध करने का प्रयास करते हैं सभी के अपने अपने हित व स्वार्थ अपने अपने मत से जुड़े होने के कारण कोई उन्हें छोड़ने को तैयार नहीं है तथा आक्षेपों पर मौन साधे हुए हैं यह ऋषि दयानन्द द्वारा वेदों के आधार पर उद्घाटित सत्य की ही विजय हैं आज मत–मतान्तरों में 95 प्रतिदृात ऐसे अनुयायी हैं जो मत के ग्रन्थों का सत्य व असत्य की कसौटी को सामने रखकर अध्ययन करने वाले लोग नहीं हैं कुछ का अपना स्वार्थ है व लोकैषणा आदि हैं इसी कारण यह सभी मत चल रहे हैं ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकादृा में जिन सामाजिक सुध ाारों की बातें की थी, उनको प्रायः देदृा विदेदृा में स्वीकार कर लिया गया हैं सभी माता पिता अपनी सन्तानों को अच्छी दिृाक्षा दिलाना चाहते हैं जिसकी बात स्वामी दयानंद ने सत्यार्थप्रकादृा के तीसरे समुल्लास में की हैं छुआ–छूत व अन्य भेदभाव काफी कम हुए हैं कानून भी बन गये हैं जन्मना जातिवाद भी कमजोर हुआ हैं समाज में स्वयंवर व गुण–कर्म–स्वभावानुसार विवाह हो रहे हैं स्वामी दयानन्द के समय में स्त्रियों व षूद्रों अथवा दलितों को वेदों के अध्ययन का अधिकार नहीं थां आज न केवल हिन्दू व वैदिक परिवारों के लोग ही वेद पढ़ते हैं अपितु मुस्लिम परिवारों की कुछ कन्याओं ने भी वेद पढ़े हैं आर्यसमाज द्वारा घर घर में वेद पहुंचाने की दृष्टि से बहुत से परिवारों के लोग वेद पढते हैं आर्यसमाजों में वेदों की कथायें होती है व श्रोताओं द्वारा सुनी जाती हैं आर्यसमाज ने षुद्धि का आन्दोलन आरम्भ किया था जिसे आज सभी हिन्दुओं ने भी स्वीकार कर लिया हैं हिन्दू परिवारों में इतर मत–मतान्तरों की वधुयें व कन्यायें भी कुछ कुछ स्वीकार की जाने लगी हैं यथार्थ के धरातल पर न सही परन्तु षाब्दिक और सार्वजनिक रूप से किसान व सैनिक देदृा भर में सम्मान पाते हैं दलित परिवारों के अनेक लोग आर्यसमाज के गुरुकुलों में पढ़कर वेदों के वरिष्ठ व उच्च कोटि के विद्वान भी बने हैं और बड़ी संख्या में आर्यसमाज में पुराहित हैं जो आर्यों व हिन्दू परिवारों में भी संस्कार कराते हैं आर्यसमाज में वेदों की विदुषी नारियां की भी पर्याप्त संख्या है जो गुरुकुलों में अध्ययन कर समाज का गौरव बनी हैं आर्यसमाज के अनेक स्थानों पर वृहत् वा महायज्ञों में ब्रह्मा के पद पर कई बार नारियां प्रतिष्ठित होती हैं सभी मतों के आचार्य प्रयास करते हैं कि उनकी बात युक्ति संगत व अखण्डनीय हों चाहे कुछ मतों में धर्म में अकल का दखल का सिद्धान्त हो परन्तु लोगों कोयुक्ति व तर्कहीन बातें उनके गले नहीं उतरतीं आज का समाज विज्ञान व तर्क की कसौटी पर सिद्ध बातों को स्वीकार करता है जिसको सत्यार्थप्रकादृा ने ही समाज में प्रविष्ट कराया है अन्यथा देदृा में पुराण वाक्यं प्रमाणम् का व्यवहार हो रहा थां अनेक मतों ने सत्यार्थप्रकादृा के आलोक में अपने मत की पुस्तकों की व्ययाख्याओं में परिवर्तन भी किया हैं तुलसीदास जी की रामचरित मानस से **'ढोल गंवार षूद्र पदृाु नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'** पंक्तियों को हटा दिया हैं आज कोई स्वामी षंकराचार्य के वाक्य **'नरकस्य किं द्वारं नारी'** की बात नहीं करतां अन्य मतों ने अपने पाठ व व्याख्यायें बदली हैं आर्यसमाज के विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी अपने लेखों में इसके प्रमाण प्रस्तुत करते रहते हैं सम्भवतः वह सत्यार्थप्रकादृा और आर्यसमाज के प्रभाव पर कोई ग्रन्थ भी तैयार कर रहे हैं आर्यसमाज में सत्यार्थप्रकादृा व ऋषि दयानन्द की पंचमहायज्ञविधि तथा संस्कार विधि के आधार पर पंच महायज्ञों के अन्तर्गत सन्ध्या व हवन का अनुष्ठान किया जाता हैं ऐसा ही कुछ कुछ सनातनी विद्वान भी करते हैं यह बात और है कि उन्होंने अपनी उपासना की पुस्तक सन्ध्या वा नित्य कर्म विधि में मन्त्रों का क्रम परिवर्तन सहित नये मन्त्र व पाठ तथा कुछ नये पौराणिक विधान जोड़ लिये हैं ऐसे बहुत से कारण गिनायें जा सकते हैं कि जो सत्यार्थप्रकादृा के प्रभाव से देदृा व समाज में अस्तित्व में आये हैं सत्यार्थप्रकादृा और ऋषि दयानन्द की विचारधारा का समस्त विदृव पर प्रभाव पड़ा हैं बहुत से अन्धविदृवास समाप्त हुए हैं जीवन षैली में परिवर्तन आया हैं आज ईदृवर आस्था का ही विषय नहीं अपितु इसे तर्क व युक्तियों से भी सिद्ध किया जा सकता हैं सृष्टि की उत्पत्ति व इसके उद्देदृय का ज्ञान भी संसार के लोगों को महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकादृा के माध्यम से कराया हैं विदृव के लोग आज जो योग कर रहे हैं वह योग भी ऋषि पतंजलि की देन है जिसका आधार भी वेद ही हैं यदि व्यापकरूप से देंखे तो आज का विदृव ऋषि दयानन्द से सबसे अधिक प्रभावित हैं सर्वत्र सत्य, तर्क, युक्ति व विज्ञान प्रतिष्ठित हैं जिसका षुभारम्भ ऋषि दयानन्द ने सन् 1874 में सत्यार्थप्रकादृा ग्रन्थ लिख कर किया थां उन्होंने परकीय मतों के अज्ञानता से पूर्ण कथनों व मान्यताओं की आलोचना तो की ही थी, अपने मत की अनेकानेक अज्ञानता से युक्त मान्यताओं को भी अस्वीकार कर उनका सुधार किया थां अतः यह निर्विवाद है कि सत्यार्थप्रकादृा का देदृा विदेदृा के जन समुदाय पर प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा हैं इसी के साथ इस लेख को विराम देते हैं ओ३म् षम्

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द जी के शहीद दिवस पर

स्वामी श्रद्धानन्द और पौराणिक पं. कालूरामशास्त्रीजी सत्यार्थप्रकाश के सन्दर्भ में

वेदमार्तण्ड डॉ. महावीर मीमांसक, दिल्ली

गुरु विरजानन्दजी से ऋषि दयानन्द ने दीक्षा लेने के बाद व्याख्यानों द्वारा वेदप्रचार करना प्रारम्भ किया। स्वामीजी संस्कृत भाषा में ही वेदप्रचार करते थे, जिसमें मूर्तिपूजा आदि धार्मिक अन्धविश्वासों का खण्डन भी होता था। पौराणिक पण्डित स्वामीजी के व्याख्यानों का आशय हिन्दी में जनता को उलटा ही अपने मत के अनुकूल समझा देते थे उससे स्वामीजी के व्याख्यान प्रभावहीन हो जातेथे। इसलिये कलकत्ते के बाबू केशवचन्द्रसेन ने स्वामीजी से हिन्दी भाषा में अपने व्याख्यानों द्वारा प्रचार कार्य करने का निवेदन किया जिसे स्वामीजी ने तुरन्त मान लिया।

सन् १८७४ में जुलाई मास की पहली तारीख को स्वामीजी प्रयाग पहुंचे और सितम्बर के अन्त तक वहीं रहे। वहां स्वामीजी के परम भक्त श्री राजा जयकृष्णदासजी ने उनसे निवेदन किया कि महाराज यदि आप अपने व्याख्यान (धर्मोपदेश) लिपिबद्ध करवा दें तो उनको छाप कर जनता को पढ़ने को मिलें तो उसका स्थायी प्रभाव पड़े और जनता में एक अनुकूल वातावरण बने। स्वामीजी महाराज ने तुरन्त अपने व्याख्यान लिपिबद्ध करवाने प्रारम्भ कर दिये। श्री राजा जयकृष्णदास जी के व्यय से यह समूचा प्रबन्ध हुवा। स्वामी दयानंदजी ने जो अपने व्याख्यान पण्डितों (पौराणिक ही लिखने वाले थे) को लिखवाए स्वयं नहीं लिखे। लिखे हुए को पढ़ या सुनकर उसको संशोधित भी नहीं कर पाये, और छपते हुए प्रूफ भी स्वयं नहीं देख पाये, तथा जिसके लिखने, छपवाने और शोधने वाले वे पौराणिक पण्डित थे जो स्वामी जी के कट्टर विरोधी थे, क्योंकि स्वामीजी उनकी आजीविका पर ही कुटाराघत करते थे, वही आदिम सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण) है जिसका प्रकाशन सन् १८७५ में काशी के स्टार प्रैस में हुवा। हिन्दी संस्कृत में लिखने आदि का काम करनेवाला पौराणिक पण्डितों के अतिरिक्त और कोई मिलता ही नहीं था।

अतः अब इस से यह स्पष्ट है कि आदिम सत्यार्थ प्रकाश में कितनी ही बातें स्वामी जी के मन्तव्यों के विरुद्ध लिख दी और वे छप गई। उनमें बातें विशेषतः उल्लेखनीय है, एक तो मृतक श्राद्ध और दूसरा यज्ञों में पशु हिंसा। इसके छपने के बाद भी स्वामीजी महाराज ने नहीं पढ़ा। दो वर्ष बाद सन् १८७७ में, ऋषि दयानन्द एक स्थान पर व्याख्यान देते हुवे मृतकों के श्राद्ध का खण्डन कर रहे थे कि एक ब्राह्मण हाथ में यह आदिम सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण) लेकर शोर मचाते हुवे बोला "यहां क्या कह रहा है और अपने इस ग्रन्थ में क्या लिखता है, यह अन्धेर है" । तब ऋषि ने उसे अपने पास बुलाया और पुस्तक लेकर देखी तो ऋषि को पता चला कि पौराणिक लेखकों ने कितना घपला और अनर्थ कर रखा है। तब ऋषि ने सन् १८७८ में यजुर्वेद के पहले अंक के भाष्य में इसके विरुद्ध विज्ञापन दिया। किन्तु यज्ञों में पशु हिंसा के विधान का लेख ऋषि के सामने उस समय आया जब वे सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण के लिये संशोधन करने लगे। इन दोनों बातों का विरोधी पौराणिक पण्डितों ने भरपूर दुरुपयोग किया। स्वामीजी पर आरोप लगाया कि स्वामीजी पहले मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशु हिंसा का विधान मानते थे, बादमें अपने मन्तव्य से बदल गये। आर्य समाज के विद्वान और नेताओं पर आरोप लगाया कि सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण स्वामीजी का संशोधित नहीं है, स्वामीजी का वास्तविक सत्यार्थ प्रकाश तो आदिम सत्यार्थ प्रकाश ही है जिस में मृतक श्राद और यज्ञों में पशु हिंसा का विधान माना है, सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण तो आर्य समाजियों ने दयानन्द के निधन के पश्चात निकाला है जिस में इन्होंने मृतकश्राद्ध और यज्ञों में पशु हिंसा को निकाल दिया। पौराणिक पण्डितों में इस मुद्दे को उठाने वाले अग्रणी पं. कालूराम जी थे जिसने अपनी मंशा पूरी करने के लिये स्वयं आदिम सत्यार्थ प्रकाश पुनः छपवाया। इस विषय पर आर्य विद्वानों और नेताओं तथा पौराणिक पण्डितों में घनघोर शास्त्रार्थ लिखित और मौखिक दोनों प्रकार से चलता रहा। यही प्रसिद्ध प्रसङ्ग है जब हमारे नायक स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज आर्य समाज के मञ्च से प्रमुख रूप से आगे आये। यह समय सन् १९१७-१८ का है।

पौराणिक पं. कालूराम जब ऋषिदयानन्द और आर्य समाज को बदनाम करने की मंशा से आदिम सत्यार्थ प्रकाश के उन अंशों को लेकर जो पौराणिक लेखकों ने छलकपट करके लिखे थे और ऋषि दयानन्द को उनके इस छद्म का पता लगने पर उन अंशों का विज्ञापन देकर खण्डन किया जा चुका था, तब यह मुद्दा स्वामी श्रद्धानन्दजी के समक्ष परोपकारिणी सभा के ऋषि मेला पर दीवाली के अवसर पर आया। तब आर्य नेताओं के सामने यह मुद्दा था कि पं. कालूराम की इस बदनीयती से भरी काली करतूत को विफल करने के लिये इस ग्रन्थ (आदिम सत्यार्थप्रकाश) को पुनः छापने से न्यायालय द्वारा रोका जाये। उस समय वहां उपस्थित नेताओं ने निर्णय लिया कि यह विषय आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को सौंपा जाये। यद्यापि स्वामी श्रद्धानन्दजी इस निर्णय के विरुद्ध थे। पं. कालूराम की पुस्तक छपी और आर्य जगत में जबरदस्त आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। इस के विरोध में आर्य विद्वानों ने बड़े बड़े लेख लिखे। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्दजी तब भी अपने निर्णय पर अडिग रहे और कहा कि इसका निराकरण और निदान तो बडा सरलता और वह यह कि हम आक्षेपों का युक्ति युक्त उत्तर देकर विरोधियों का मुंह बन्द किया जा सकता था और जनसाधारण में भ्रान्ति फैलने से रोका जा सकता था। परिणाम स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वयं पं. कालूराम के आक्षेपों का लिखीत उत्तर दिया उसे संक्षेप में निम्न है।

क्योंकि पं. कालूराम शास्त्री के आक्षेप मनगढन्त, कल्पित और जन साधारण को धोके और भ्रम में डालने के लिखे थे अतः

www.thearyasamaj.org

स्वामीजी ने इन आक्षेपों को कल्पना कह कर लिखा और उसे कल्पित कहा । आक्षेपों में पहला आरोप था कि कालूराम शास्त्रीजी का दावा था कि मैंने जो प्रथम सत्यार्थ प्रकाश छपवाया है वह ऋषि दयानंद की हूबहू कापी है, कोई यह नही सिद्ध कर सकता कि मैंने इसमें कुछ अपनी ओर से मिलावट करके छपवाया है । पं. कालूराम शास्त्री का यह जवाब था की यह प्रथम सत्यार्थप्रकाश की कापी थी । किन्तु अगली दलील पं. कालूरामजी यह थी कि जब यह ज्यों की त्यों प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की कापी है तो कोई आर्य समाजी यह सिद्ध करके दिखाएं कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश की पांडुलिपि लिखवाने वाले पौराणिक पण्डितों ने अपनी ओर से मिलावट करके कुछ लिख दिया । यहां स्वामी श्रद्धानन्दजी आर्य समाज की ओर से आगे आये और अकाट्य प्रमाण दिया कि जब ऋषि को यह पता चला कि इस प्रथम सत्यार्थप्रकाश में मृतकों का श्राद्ध करना छप गया है तब उन्होंने संवत १९३५ (सन् १८७८) के प्रारम्भ में यजुर्वेद भाष्य प्रथम अंक में विज्ञापन छपवाया कि जो सत्यार्थप्रकाश में मृत पितृादिकों के श्राद्ध और तर्पण करने के विषय में छपा है "सो लिखने और शोधने वालों की मूल से छपवाया गया है ।" यज्ञ में पशु हिंसा का पता ऋषि दयानंद को बाद में चला जिसका निराकरण सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण में किया गया ।

पं. कालूराम शास्त्री का दूसरा काल्पनिक आक्षेप था कि चाहे आज के आर्य समाजी प्रथम सत्यार्थ प्रकाश को माने था न मानें, परन्तु स्वामी दयानन्द उसे मानते थे अतः इसमें लिखी सबकी सब बातें स्वामी जी के मन्तव्य हैं । स्वामी श्रद्धानन्दजी ने इसका भी अकाट्य उत्तर दिया कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश में स्वामीजी के मन्तव्यों के विरुद्ध छपवा दिया गया इसी लिये तो स्वामीजी ने स्वयं उस में संशोधन करके द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश छपवाया और उसकी भूमिका में जो शब्द लिखे थे ध्यान देने योग्य हैं "जो छपने में कहीं कहीं भूल रही थी वह निकाल शोध कर ठीक ठीक कर दी गई है ।"

पं. कालूरामजी का अगला काल्पनिक आक्षेप था कि प्रथम सत्यार्थ प्रकाश के लिखवाने से लेकर छपवाने तक की व्यय आदि तथा प्रबन्ध और व्यवस्था करने वाले श्री राजा जय कृष्ण दास पौराणिक थे अतः उन्होंने स्वामीजी के पौराणिक मन्तव्यों को जनता के समक्ष लाने के लिये इसे छपवाया । तथा स्वामी दयानन्द प्रथम सत्यार्थ प्रकाश के छपने तक और कुछ वर्ष बाद तक भी पौराणिक मन्तव्यों मृतक पितृश्राद्ध और यज्ञ में पशु हिंसा आदि के समर्थक रहे, किन्तु बाद में बदल गये का भी स्वामी श्रद्धानन्दजी ने मुंहतोड उत्तर दिया और आन्तरिक तथा बाह्य प्रमाणों से सिद्ध किया कि श्री राजा जयकृष्ण दास के अनेक प्रवचनों और लेखों से, जो वे गुरु विरजानन्दजी से दीक्षा लेने के बाद निरन्तर देते रहे, लिखित प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्वामी जी के मन्तव्य आदि से अन्त तक अपरिवर्तित रहे, कभी नहीं बदले ।

पं. कालुराम का अंतीम अक्षेप : जब वे स्वामी श्रद्धानन्दजी के सभी तर्क और युक्तिपूर्ण प्रमाणों से निरुत्तर हो गये तो यह था कि आर्य समाजियों ने स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद स्वामी दयानन्द के पौराणिक मन्तव्यों को बदल कर द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश छपवाया जिसकी भूमिका स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद सं. १९४१ में लिखी गई ।

स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज ने कालूराम के इस काले झूठ की पोल खोल कर उसका मुहं काला कर दिया । स्वामी श्रद्धानन्दजी ने सप्रमाण ब्योरा देकर सिद्ध किया, लिखा कि द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश से संशोधन का कार्य सं. १९३८ (सन् १९८०) में ही ऋषि दयानन्द ने करना प्रारम्भ कर दिया था । द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश का सारा संशोधन सं. १९३९ के भाद्रमास तक (ऋषि के निर्वाण से १४ मास पूर्व तक) हो चुका था । उन दिनों ऋषि दयानन्द उदयपुर में थे । श्रावण कृष्ण १० से लेकर फाल्गुण कृष्ण ७ सं. १९३९ तक ऋषि उदयपुर में रहे । स्वामी श्रद्धानन्दजी ने चारण नवलदास द्वारा लिखित कथन के आधार पर प्रामणिक रूप से सिद्ध किया कि ऋषि के जीवित रहते हुवे ही द्वितीय सत्यार्थ प्रकाश की न केवल भूमिका ही, अपितु ३४४ पृष्ठ (ग्यारहवां समुल्लास) तक छप चुके थे । चारण नवलदास का वह लिखित कथन देकर हम लेख को विराम देंगे ।

"मैंने स्वामी जी से नया सत्यार्थ प्रकाश जो उस वक्त ३४४ सफे तक छप चुका था, ठाकुर गिरधारी सिंह रईस के वास्ते खरीदा था ।"

इस के बाद पौराणिक पं. कालूराम शास्त्रीजी की बोलती बन्द हो गई । लगभग १०० वर्ष पहले का यह हुआ आर्य समाज के संघर्ष का समय था जिस में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि दयानन्द, वेद, आर्य समाज और आर्य समाजियों के लिये जी जान से संघर्ष किया । ऐसे विवेकशील, समर्पित, सर्वस्व त्यागी, जुझारु और विद्वान उद्‌भट सन्यासी नेता की आज बडी आवश्यकता है ताकि आर्य समाज पुनः अपने उत्कर्ष पर पहुंचे । आज के सत्यार्थ प्रकाश के विवाद पर स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के एतत् सम्बन्धी उद्‌गारों से कुछ पथ प्रदर्शन लेने की आवश्यकता है ।

फ़िल्म से पहले राष्ट्रगान ज़रूरी : एससी

राष्ट्रगान पर SC का ऑर्डर

- **कमर्शियल बेनिफिट के लिए राष्ट्रगान का इस्तेमाल न हो ।**
- **आधा-अधूरा राष्ट्रगान न गाएं, न बजाएं।**
- **केंद्र एक हफ्ते में लागू करे ऑर्डर ।**

उच्चतम न्यायालय ने आज एक महत्वपूर्ण आदेश देते हुए देशभर के सिनेमाघरों में फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रगान बजाना अनिवार्य कर दिया । इस दौरान सभी दर्शकों को खड़ा रहना होगा । न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने सभी सिनेमाघरों को यह भी सुनिश्चित करने का आदेश दिया है कि राष्ट्रगान के समय पर्दे पर राष्ट्रीय ध्वज दिखाया जाये ।

बौद्धमत और वैदिक धर्म

-स्वामी धर्मानन्द

बुद्ध-क्या ब्राह्मण ही अहिंसक, सदाचारी, अलोभी, अद्वेषी हो मरने के बाद स्वर्ग और सुगति को प्राप्त होगा, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नहीं ?

आश्वलायन-नहीं, हे गौतम ! क्षत्रिय भी, ब्राह्मण भी, वैश्य भी, शूद्र भी, अहिंसक, सदाचारी हो स्वर्ग और सुगति को प्राप्त कर सकता है ।

बुद्ध-आश्वलायन-यदि कोई राजा नाना जाति के १०० पुरुषों को इकट्ठा करके कहे-आओ तुममें से जो क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र हैं वह सरल, साल, चन्दन या पद्म की लकड़ी की अरणी लेकर आग तैयार करे और जो चाण्डाल, निषाद, रथकार आदि कुल के हैं वह कुत्ते-सूअर के पीने की कठरी की लकड़ी, धोबी के काठ की लकड़ी या रेंडी की लकड़ी को अरणी बना आग तैयार करें । तो आश्वलायन ! क्या क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र की साल, सरल, चन्दन, पद्म की अरणी द्वारा बनाई आग ही अर्चिमान्, वर्णवान्, तेजस्वी होगी उसी से आग का काम लिया जा सकता है, चाण्डाल, निषाद आदि की कुत्ते-सूअर के पीने की कठरी आदि की अरणी द्वारा उत्पन्न आग से नहीं ?

आश्वलायन - नहीं, हे गौतम ! सभी आग तेजस्वी होंगी, सभी आगों से आग का काम लिया जा सकता है ।

बुद्ध-यदि क्षत्रिय कुमार ब्राह्मण कन्या के साथ सहवास कर पुत्र उत्पन्न करे तो वह पिता के समान क्षत्रिय और माता के समान ब्राह्मण होगा ? आश्वलायन-हाँ, होगा ।

बुद्ध-यदि घोड़ी-गदहे के जोड़ से बछेड़ा उत्पन्न हो तो क्या वह माता के समान घोड़ा और पिता के समान बछेड़ा होगा ?

आश्वलायन-नहीं, हे गौतम ! यह खच्चर होगा, यहाँ भेद देखता हूँ किन्तु उन दूसरों में कुछ भेद नहीं देखता ।

बुद्ध-दो जमुवे ब्राह्मण कुमार हों, उनमें एक उपनयन युक्त वेदाध्ययन करता हो, दूसरा उपनयन रहित वेदाध्ययन न करता हो, तो उन दोनों में से किसे ब्राह्मण श्राद्ध, यज्ञ आदि में प्रथम भोजन कराएँगे ?

आश्वलायन-जो उपनीत अध्यायक है । अनुपनीत, अध्यायक (न पढ़नेवाले) को भोजन दान में कौन महाफल होगा ?

बुद्ध-दो जमुए ब्राह्मण कुमारों में एक उपनीत अध्यायक वेदपाठी, किन्तु पापी-दुराचारी हो, दूसरा अनध्यायक किन्तु सदाचारी और निष्पाप हो । ब्राह्मण उनमें किसे प्रथम भोजन कराएँगे ।

आश्वलायन-जो अनुपनीत किन्तु सदाचारी है । पापी-दुराचारी को देने से क्या फल होगा?

बुद्ध-आश्वलायन ! तू पहले जन्म को मानता था फिर तूने उपनयन-वेदाध्ययन को मुख्य माना और अब चातुर्वर्णी शुद्धि पर आ गया, जिसका मैं उपदेश करता हूँ ।

(श्रीदेव मित्र धर्मपाल कृत 'भगवान् बुद्ध की शिक्षा' पृ० ३२-३५ श्री राहुल सांकृत्यायन कृत बुद्धचर्या पृ० १८०-१८३)

जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानना मूर्खता है- वासेट्ठसुत्तन्त में बुद्ध भगवान् ने कहा है कि-'मूर्खों की धारणा में यह चिरकाल से घुसा हुआ है कि ब्राह्मण जन्म से होता है ।' ''ज्ञानी पुरुष यह कदापि न कहेंगे कि ब्राह्मण जन्म से होता है ।''

वसल सुत्त (वृषल सूत्र) में महात्मा बुद्ध ने जन्मानुसार वर्णव्यवस्था का खण्डन करते हुए कहा है कि-

न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
कम्मना वसलो होति, कम्मना होति ब्राह्मणो ।

अर्थात् जन्म से कोई वृषल वा चाण्डाल नहीं होता और जन्म से कोई ब्राह्मण भी नहीं होता । कर्म से ही चाण्डाल हो और कर्म से ही ब्राह्मण होता है ।

सुन्दरिका भारद्वाज सुत्त में भी महात्मा बुद्ध ने कहा है कि 'जाति मत पूछ, तू तो बस एक आवरण पूछ ।' देख, आग चाहे जैसे काठ से पैदा होती है । इसी प्रकार नीच कुल का मनुष्य भी धृतिमान्, सुविज्ञ और निष्पाप मुनि होता है ।

''जातिं पुच्छ, चरणं च पुच्छ । कट्ठा ह वे जायति जात वेदाः ।।''

इत्यादि शब्द वहाँ आये हैं । यह महात्मा बुद्ध को तब कहना पड़ा जब भारद्वाज ने उनसे यज्ञ के हविःशेष खिलाने के लिये जाति पूछी । उसी प्रसङ्ग में महात्मा बुद्ध ने कहा है-

''मा जातिं पुच्छ, चरणं च पुच्छ । कट्ठा ह वे जायति जात वेदाः ।।''

इत्यादि शब्द वहाँ आयो हैं । यह महात्मा बुद्ध को तब कहना पड़ा जब भारद्वाज ने उनसे यज्ञ के हविःशेष खिलाने के लिये जाति पूछी । उसी प्रसङ्ग में महात्मा बुद्ध ने कहा है-

सच्चेन दान्तो मनसा उपेतो वेदान्तगु वुसित ब्रह्मचरियो ।
कालेन तं हि हव्यं पवेच्छे यो ब्राह्मणो पुण्णपेक्षो यजेथ ।। -सुत्तनिपात श्लो० ४६३

अर्थात् जो सत्य से दान्त (जितेन्द्रिय)=दमन युक्त वेद (ज्ञान) के अन्त को पहुँचा (वेदान्तगु) ब्रह्मचर्य समाप्त किया है । उसे यज्ञ में प्राप्त (यज्ञ उपनीत) कहो, वह काल से दक्षिणेय (दक्षिणाग्नि), दानपात्र में होम करना है । श्री राहुल कृत अनुवाद 'बुद्धचर्या' पृ० ३९० इस पर भारद्वाज ने कहा है कि-

अद्धा हि तस्स हुतम् इज्झे, यं तादिसं वेदगुम् अद्दसाम ।
तुम्हादिसानां हि अदस्सनेन अन्नो जनो भुजति पुरडासम् ।। -सुत्त निपात ४५९

अर्थात् निश्चय, यह मेरा (यज्ञ) सु-इष्ट=सुहुत है जो ऐसे वेद-पारग (वेदगू) को मैंने देखा । तुम्हारे ऐसे को न देखने से, दूसरे जन हव्यशेष खाते हैं । हे गौतम ! आप भोजन करें, आप ब्राह्म हैं । इन वाक्यों से ब्राह्मण के साथ वेदाध्ययन का सम्बन्ध और महात्मा बुद्ध के वेदाध्ययन तथा वेदविषयक उत्तम धारणा पर भी प्रकाश पड़ता है ।

चाण्डाल कुलोत्पन्न मातङ्ग का उदाहरण

इस प्रसङ्ग में यह बात भी उल्लेखनीय है कि वसल सुत्त (वृषल सूत्र) में महात्मा बुद्ध ने यह बताते हुए कहा है कि-

''न जच्चा वसलो होति, न जच्चा होति ब्राह्मणो ।
कम्मना वसलो होति, कम्मना होति ब्राह्मणो ।।''

अर्थात् कोई जाति से वृषल (चाण्डाल) नहीं होता और न जाति से ब्राह्मण । कर्म से वृषल होता है और कर्म से ब्राह्मण । मातङ्ग ऋषि का उदाहरण दिया है-

तदमिनापि जानाथ, यथा मेदं निदस्सनं ।
चण्डाल पुत्तो सोपाको, मातंगो इति विस्सुतो ।।२२।।
सो यसं परमे पत्तो, मातंगो यं सुदुल्लभं ।
आगच्छुं तस्सु पट्ठानं, खत्तिया ब्राह्मणा बहू ।।२३।।
नतं जाति निवारेसि, ब्रह्म लोकूप पत्तिया ।।२४।।

अर्थात् सोपाक (श्वपाक) नामक चाण्डाल पुत्र मातङ्ग नाम से प्रसिद्ध हुआ । मेरे इस निदर्शन (उदाहरण) से भी उस बात को जान लो । इसलिए जाति ने ब्रह्मलोक (मोक्ष) की प्राप्ति से उसे नहीं रोका । इत्यादि ।

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि वैदिक धर्मोद्धारक-शिरोमणि महर्षि दयानन्द ने भी वर्णव्यवस्था को वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार

www.thearyasamaj.org

पर गुणकर्मानुसार सिद्ध करते हुए अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकास में लिखा है-

प्रश्न-क्या जिस के माता-पिता ब्राह्मण हों वह ब्राह्मण होता है और जिस के माता-पिता अन्य वर्णस्थ हों उनका सन्तान कभी ब्राह्मण हो सकता है ?

उत्तर-हाँ, बहुत से हो गये हैं, होते हैं और होंगे भी, जैसे छान्दोग्य उपनिषद् में जबाल ऋषि अज्ञात कुल, महाभारत में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण और मातंग ऋषि चाण्डाल कुल से ब्राह्मण हो गये थे, अब भी जो उत्तम विद्यास्वभाव वाला है वही ब्राह्मण के योग्य और मूर्ख शूद्र के योग्य होता है और वैसा ही आगे भी होगा।

हमने इस अध्याय का शीर्षक 'महात्मा बुद्ध-एक आर्य सुधारक' यह रक्खा है, क्योंकि उन्होंने वेदादि सत्य शास्त्रोक्त गुण-कर्मानुसार वर्णव्यवस्था के स्थान पर जब जन्मानुसारिणी वर्णव्यवस्था मानी जाने लगी तब उसमें सुधार का प्रशंसनीय कार्य किया। उन्होंने वर्णव्यवस्था वा चातुर्वर्ण्य के सिद्धान्त का खण्डन नहीं किया जैसे कि माननीय डॉ० अम्बेदकरजी जैसे कर्म पर माना जैसे कि ऊपर पर्याप्त विस्तार से अनेक उद्धरणों द्वारा दिखाया गया है। श्री ए० आर० कुलकर्णी बी० ए० बी) एल० ने 'महा बोधि' (अंग्रेज़ी पत्र) के वैशाख (मई १९५०) के अङ्क में '' अर्थात् 'बुद्ध और चातुर्वर्ण्य' पर एक बड़ा विचार पूर्ण लेख लिखते हुए यही बताया है कि-

"That Buddha merely purified the Chaturvarnya is clear from the Assalayana Sutta." (P. 162)

अर्थात् आश्वलायन सूत्र से यह स्पष्ट है कि बुद्ध ने चातुर्वर्ण्य को केवल शुद्ध किया (उसका खण्डन नहीं किया) मि० ऐडवर्ड थौमस ने The History of the Buddhist Thoughts के पृ० ८८-८९ में अंगुत्तर निकाय (दीर्घ निकाय) पृ० ८० के अनुसार चातुर्वर्ण्य की उत्पत्ति का वर्णन देते हुए ठीक ही लिखा है कि-

There is no implication here that caste is indifferent. It is admitted that the four divisions are the normal state of society. But caste is ut on a moral basis.

अर्थात् इसका यह तात्पर्य नहीं कि ब्राह्मणादि जाति (वस्तुतः वर्ण या .. का प्रयोग उचित है) अनावश्यक है। यह स्वीकार किया गया है कि समाज का चार वर्णों में विभाग स्वभाविक है किन्तु उसका आधार सदाचारादि पर रखा गया है। इत्यादि।

श्रीमद्दयानन्द-वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का ८३वां वार्षिकोत्सव

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास ११९ गौतमनगर नई दिल्ली-११००४९ का ८३वां वार्षिकोत्सव एवं ३७ वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ २७ नवम्बर रविवार २०१६ से १८ दिसम्बर रविवार २०१६ तक होना निश्चित हुआ है। इस महायज्ञ के ब्रह्मा वेदों के प्रकाण्ड पण्डित डॉ. महावीर (पूर्व कुलपति उ.सं.वि.वि.) होंगे। महायज्ञ में आर्यजगत् के अनेकों उच्चकोटि के साधु-संन्यासी, विद्वान्-आर्यनेता तथा भजनोपदेशक पधार रहें हैं।इस महायज्ञ में आप सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित सादर आमनिन्त्रत है।

प्राचार्य, श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय न्यास 119 गौतमनगर

मनु का उद्घोष

वेदादि सत्यशास्त्रों में इसी का प्रतिपादन है। मुस्मृति में मनु महाराज ने स्पष्ट कहा है कि-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवं तु, विद्याद् वैश्यात्तथैव च॥

अर्थात् शूद्र कुलोत्पन्न ब्राह्मणोचित गुण धारण करने से ब्राह्मण हो जाता है और ब्राह्मण कुलोत्पन्न विद्या, सदाचारादि के अभाव में शूद्र हो जाता है। क्षत्रिय और वैश्यादि में भी ऐसे ही वर्ण परिवर्तन गुण-कर्म के कारण हो सकता है।

महाभारत वनपर्व के यक्ष युधिष्ठिर संवाद में और शान्तिपर्व १८९ के भारद्वाज भृगु संवाद में यही बतलाया गया है कि-

सत्यं दानमथाद्रोह आनृशंश्यं त्रपा घृणा।
तपश्च दृश्यते यत्र, स ब्राह्मण इति स्मतः॥
शूद्रे चैतद् भवेल्लक्ष्म, द्विजे तच्च न विद्यते।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो ब्राह्मणो न च॥

अर्थात् सत्य, दान, अद्रोह, अक्रूरता, बुरे कार्यों में लज्जा, दया, तप इत्यादि गुण जहाँ दिखाई दें वही ब्राह्मण है। यदि शूद्र में ये गुण दिखाई दें और ब्राह्मण (कुलोत्पन्न) में नहीं तो वह शूद्र (कुलोत्पन्न व्यक्ति) शूद्र नहीं और वह ब्राह्मण ब्राह्मण नहीं।

न योनिर्नापि संस्कारो, न श्रुतं न च सन्ततिः।
कारणाणि द्विजत्वस्य, वृत्तमेव तु कारणम्॥
वृत्ते स्थितश्च शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं स गच्छति।
न कुलेन न जात्या वा, क्रियाभिर्ब्राह्मणो भवेत्।
चण्डालोऽपि हि वृत्तस्थो ब्राह्मणो रक्षपुङ्गव॥

अर्थात् ब्राह्मण कुल में जन्म, संस्कार वा शास्त्र श्रवण ब्राहाणत्व का कारण नहीं किन्तु ब्राह्मणोचित सदाचार ही उसका कारण है। यह सदाचार में स्थित है इससे शूद्र भी ब्राह्मण बन जाता है।

कुल वा जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं बनता किन्तु कर्मों से ही मनुष्य ब्राह्मण बनता है। सदाचारी चाण्डाल कुलज भी ब्राह्मण बन जाता है।

शुक्रनीति में भी स्पष्ट कहा है कि-

न जात्या ब्राह्मणश्चात्र, क्षत्रियो वैश्य एव न।
न शूद्रो न च वै म्लेच्छो, भेदिता गुणकर्मभिः॥

अर्थात् जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य वा शूद्र नहीं होता। यह सारा भेद केवल गुण-कर्म पर आश्रित है। इसी प्रकार अन्य सैकड़ों प्रमाण दिये जा सकते हैं किन्तु विस्तारभय से उन्हें यहाँ नहीं दिया जा सकता। जो विस्तार से जानना चाहते हैं उन्हें पं० श्री गंगाप्रसाद जी एम० ए० (कार्य निवृत्त न्यायाधीश) कृत Caste system वा उसका अनुवाद जाति भेद तथा लेखक कृत 'जाति निर्णय' आदि पुस्तकों को पढ़ना चाहिये।'

इसलिये हम श्री रमेशचन्द्रजी दत्त के इस परिणाम से सर्वथा सहमत हैं कि-"It would be historically wrong to suppose that Gautam Buddha consciously set himself up as a founder of a new religion. on the contrary, he believed to the last that he was Proclaiming only the ancient and pure form of religion which had prevailed among the Hindus, among Brahmans, Shramanas and others but which had been corrupted at a later day."

अर्थात् ऐतिहासिक दृष्टि से यह कथन अशुद्ध है कि गौतम बुद्ध ने जान-बूझकर कोई नया मत चलाने का प्रयत्न किया। उसका अन्त तक यही विश्वास था कि वह ब्राह्मणों, श्रमणों तथा अन्य हिन्दुओं में प्रचलित धर्म का प्राचीन और शुद्ध रूप में प्रचार कर रहा था जो पीछे से बिगड़ गया था।

इस बात का यज्ञ के शुद्ध और विकृत रूप में विवेचन द्वारा हम अगले अध्याय में निरूपण करेंगे, क्योंकि वह स्वयं एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विस्तृत विषय है।

www.thearyasamaj.org

पना जन्म चरित्र

(दयानन्द सरस्वती)

पृ. ४४ - वाराणासी में आकर हम लोग दशाश्वमेध घाट के निकट साधु-आवास में ठहरे थे । भोजन का प्रवन्ध जयपुराधीश के राजगृह में था । वेदान्त विषय पर आलोचना भिन्न-भिन्न स्थानों पर होती थी । उन सब आलोचनाओं से मैंने समझ लिया था कि अन्यायन्य दर्शन शास्त्रों में भी अधिकार रखना चाहिए और व्याकरण-शास्त्र को और अच्छी तरह पढ़ना चाहिए । यह भी देख लिया कि वाराणसी में तीर्थ यात्रियों का भी अन्त नहीं है, पण्डितों का भी अन्त नहीं है और साधु-संन्यासियों का भी अन्त नहीं है । मैं और तीनों ब्रह्म-चारी यहां रहकर अपनिषद्, दर्शन और व्याकरण पढ़ने लगे । पण्डित रामनिरंजन शास्त्री से वैशेपिक और न्याय, पं० विश्वम्भर तर्करत्न से सांख्य और योग, पण्डित हरप्रसाद विद्यारत्न से पूर्व-मीमांसा और उत्तर-मीमांसा तथा पं० रासमोहन सिद्धांतवागीश से व्याकरण पढ़ने लगे ।

बाद में मेरे तीनों साथी मुझको छोड़कर प्रयाग चले गए । मैं अकेला ही काशी में रहकर पण्डितों से भिन्न-भिन्न व्याकरण के पाठ पढ़ने लगा । पण्डित निखिलेश शास्त्री से मैंने कात्यायन का वार्तिक, पं० रुद्रदेव विद्यालंकार से वाक्यपदीय, पण्डित सोमदेव तर्करत्न से वामन और जयादित्य की काशिका, पण्डित महादेव शास्त्री से जिनेन्द्र बुद्धि का न्यास, पं० विमलेन्दु काव्यनिधि से हरदत्त की पदमञ्जरी, पं० शशिकान्त भट्ट से रामचन्द्र की प्रक्रिया कौमुदी, पं० अखिलानन्द भट्टाचार्य से भट्टोजि दीक्षित की सिद्धांत कौमुदी और पं० महावीर शर्मा बोपदेव का मुग्धबोध पढ़ा था । व्याकरण को मैंने दो-तीन बार भिन्न-भिन्न पण्डितों से पढ़ा था । यहां मैं ब्रह्मचारी के वेश में ही रहता था । गृहस्थ पण्डित लोग मुझको स्नेह और श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे । पं० विमलेन्दु काव्यनिधि और पं० रामनिरंजन शास्त्री मझको दर्शन-शास्त्र पढ़ाने के लिये बड़े ही उत्सुक थे । मैंने उन दोनों से न्याय और वैशेषिक दो बार तथा सांख्य और योग तीसरी बार पढ़ा था । काशी के बहुत से पण्डित मुझसे शंका समाधान के लिये भी आते थे । मैं पण्डित हरदेव शास्त्री से मनस्तत्व के बारे में भी पाठ पढ़ा करता था ।

मेरा मन इन सब विद्याओं को पढ़ने में रमा करता था परन्तु रात्रि को शैय्या ग्रहण करने के समय योगियों के संधान करने के लिए मेरे मन के अन्दर दूसरे भाव जागृत हो जाते थे । कभी-कभी विचार आता था कि पाण्डित्य का भार-वहन करने से लाभ नहीं है । यदि मृत्यु को जय करने का कार्य ही शेष रह गया, तो देश-भ्रमण और विद्या-ग्रहण मेरे लिए सब व्यर्थ हैं । 'जो घर-वार और माता-पिता को छोड़कर चला, यह सब किस कार्य में आया ?' - यह चिन्ता मुझे दिन-रात सताने लगी ।

इस दुश्चिन्ता के कारण मेरा चित्त चंचल और अशान्त हो गया था । काशी छोड़कर अन्यत्र जाऊंगा-इस विचार को मैंने पक्का कर लिया था । काशी के सव ही पण्डितों से मैं विदाई और आशीष मांगने लगा । यह सुनकर सब ही ने दुःख प्रकट किया था । मैं गुरुओं का प्रिय शिष्य था । परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती ही मेरे काशी रहने के एकमात्र आश्रय थे और द्वार-बंगाधीश ही मेरे आर्थिक सहायक थे । इन दोनों की कृपा से ही मैंने काशी में रहकर ज्ञानोपार्जन का सुयोग पाया था । मेरे अन्यत्र जाने के विचार से इन दोनों ने भी दुःख प्रकट किया था । इन लोगों ने चाहा था कि मैं और कुछ समय काशी में रहूं और शेष शास्त्रों का अध्ययन करूं । इन्होंने काशी में रहकर योगसिद्ध साधक को ढूंढ़ने के लिये और प्रेरणा दी थी । तब मैंने कुछ दिन के लिये काशी छोड़ने का विचार छोड़ दिया और अन्यान्य शास्त्रों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया -

उपनिषद् पाठ- पं० अच्युतानन्द शास्त्री ने मुझे ग्यारह प्राचीन उपनिषद् और पं० बलदेव सिनेमणि ने उपनिषदों के नवीन १०१ ग्रन्थों का पाठ पढ़ाया था ।

स्मृतियों का पाठ- पं० रत्नाकर शिरोमणि से मैंने प्राचीन स्मृति और पं० महेशचन्द्र स्मृतिरत्न से नवीन स्मृतियों का अध्ययन किया था ।

बौद्ध दर्शनों का पाठ- भिक्षु तथागत धर्मपाल से मैंने महायानी बौद्ध सम्प्रदाय के माध्यमिक और योगवाद सिद्धान्त तथा साधु राहुल मणिभद्र से हीनयानी बौद्ध सम्प्रदाय के वैभाषिक और सौतान्त्रिक के सिद्धान्त पढ़े थे।

जैन दर्शनों का पाठ- साधु युगलकिशोर पारेख से मैंने दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के उमास्वामिकृत 'तत्वार्थाधिगम' सूत्र और श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के हरिभद्र कृत 'लोकतत्व-निर्णय' आदि ग्रन्थों का विस्तृत पाठ पढ़ा था ।

तन्त्र शास्त्रों का पाठ- तान्त्रिक साधु बेताल भैरव बावाजी ने मुझे तन्त्र शास्त्रों के योग, क्रिया और चर्या को, शैवों के आगम को, शाक्तों के शक्ति तन्त्र को, वैष्णवों के विष्णु तन्त्र को और बौद्ध-जैनियों के अवैदिक तन्त्र को पढ़ाया ।

चार्वाक और बार्हस्पत्य दर्शनों के पाठ- पण्डित विभूतिभूषण तर्कवागीश से 'सर्वदर्शन संग्रह' और पं० क्षेमकरण दर्शनशास्त्री से मैंने बृहस्पति और चार्वाक के 'नास्तिकवाद', संजय के 'संशयवाद', केश कम्बली के 'जड़वाद', कश्यप के 'औदासीन्यवाद', गोपाल के 'अदृष्टवाद' और काकुद-कात्यायन के 'पंच-भौतिकवाद' के पाठ पढ़े ।

मनस्तत्वों का पाठ- और अन्त में परमहंस सच्चिदानन्द स्वामी ने मुझे मनस्तत्व विषय पर कपिल के सांख्य प्रवचन सूत्र के ईश्वर-कृष्ण की सांख्यकारिका और पतञ्जलि के योगसूत्रों के साधनपाद सूत्रों के व्यवहारिक पाठ पढ़ाये थे ।

इन सब शास्त्रों के अध्ययन से मेरे अन्दर विभिन्न शास्त्रों के पाठ की प्रबल इच्छा और तुलना-आलोचना की रुचि उत्पन्न हो गई थी । मेरा चित्त पहले से बहुत शान्त हो गया था । काशी के बड़े-बड़े विद्वान् साधु-साधक तपस्वियों के सत्संग से और विभिन्न शास्त्रों की विचार-धाराओं से परिचय प्राप्त होने से अपने जीवन को मैं बहुत ही धन्य और कृतार्थ समझने लगा । हृदय में सिंह सदृश बल आ गया और ज्ञानालोक से चित्त उद्भासित हो गया । अब मैं काशी के विभिन्न मठ-मन्दिरों

www.thearyasamaj.org

और आश्रम-तपोवनों में योगसिद्ध पुरुषों का सन्धान करने लगा। तीर्थयात्रियों की भीड़भाड़ में और विभिन्न साम्प्रदायिक कोलाहलों में योग-सिद्ध पुरुषों को ढूंढ़ निकालना मेरे लिये कठिन था। इस स्थिति में परमहंस सच्चिदानन्द स्वामी ने योगियों के सन्धान के लिये नर्मदा नदी के तटवर्ती तीर्थस्थानों में जाने के लिये मुझे प्रेरणा दी थी और यह भी कहा था कि चाणोद, कर्नाली और व्यासाश्रमादि स्थानों में अवश्य ही जाना चाहिये। तदनुसार काशी से प्रस्थान करने की तिथि निश्चित की गई।

गुरुजनों का आशीर्वाद- परमहंस सच्चिदानन्द स्वामी के प्रबन्धानुसार प्रस्थान से पहले दिन मेरे सब ही ज्ञानदाता गुरु-जन मुझे आशीर्वाद देने के लिये दशाश्वमेध घाट पर एकत्र हो गए थे। गुरुओं को दक्षिणा देने के लिए द्वार-बंगाधीश (दरभंगा-नरेश) ने मेरे पास ५००) रुपये भेज दिये थे। सब गुरुओं ने मेरे ललाट पर चन्दन का टीका लगाकर और शिर पर हाथ रखकर मन्त्रोच्चारण के साथ आशीर्वाद दिया था। मैंने सबके चरणों को स्पर्श करके प्रणाम किया। उनमें बौद्ध, जैन और नास्तिक गुरु लोग भी थे। मैंने ५००) रुपये गुरुओं को दक्षिणा के रूप में समर्पित कर दिये। परमहंस स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती ने सब गुरुओं की ओर से मुझे आशीर्वाद दिया था-

''ब्रह्मचारिन्! सौम्य शुद्द-चैतन्य! पवित्र काशीधाम से सौभाग्य के कारण तुम बहुत ही मूल्यवान् ज्ञान-सम्पद् को प्राप्त हुए हो। लेकिन तुम्हारे अन्दर योग-विद्या सीखने की प्रबल इच्छा उद्दीप्त हो रही है। हम लोग उस आग को बुझाना नहीं चाहते हैं। हम लोग तुम्हें नहीं छोड़ रहे है, तुम ही हम सबको छोड़कर जा रहे हो। हम लोग तुम्हारा आध्यात्मिक उत्कर्ष चाहते हैं।

तुम यहाँ से नर्मदा (रेवा) नदी के किनारे जाने के लिये प्रस्थान करो, वहाँ नदी के दोनों तटों पर आश्रम बनवाकर बहुत से योगी पुरुष रहा करते हैं। नर्मदा नदी में स्थान-स्थान पर दूसरी बहुत सी नदियों के संगम-स्थल मिलेंगे, भिन्न-भिन्न साधन-क्षेत्र और तीर्थ-स्थल मिलेंगे, किन्तु हिंस्त्र पशु जंगलों में विचरण करते हैं। वृक्षों में फल मिलेंगे, सरोवर में जल मिलेगा, वृक्षों के नीचे और ऊपर सोने के स्थान मिलेंगे, वनचर मनुष्य तुमको आश्रय देंगे। जैसे वहाँ तपोवन और आश्रम हैं, ऐसे ही वहाँ चोर और डाकुओं के भी आश्रयस्थल हैं। अपने साथ में डण्डा और थैली रखो तथा मन में ईश्वरभक्ति रखो, विपदाएं आएंगी, लेकिन तुम पार हो जाओगे।''

गुरुओं का आदेश और आशीर्वाद मैंने शिरोधार्य किया। सभी गुरुओं के चरण छूकर प्रणाम करके मैं प्रस्थान की तैयारी में लग गया। मैं अपने परम हितैषी द्वार-बंगाधिपति से विदाई लेने को गया। वे मेरे प्रति स्नेह और श्रद्धा दोनों ही भाव रखते थे। मेरे प्रस्थान के कारण वे भी सन्तप्त थे। उन्होंने कहा-''तुम अपने प्रयोजन के अनुसार रुपये-पैसे और सामग्री जो-जो और जितनी चाहो ले जाओ।'' मैंने कहा- आपकी ही कृपा से काशी से अमूल्य ज्ञान-सम्पद् मुझको मिला है, मेरे लिये वही बहुत है।'' लेकिन वे माने नहीं मैंने विवश होकर एक लोटा, एक कम्बल, एक अंगोछा और एक डण्डा लेकर काशी से नर्मदा नदी की ओर प्रस्थान किया।

नर्मदा-तट भ्रमण

जन्म-चरित्र

फिर वहाँ सुना कि आजकल चाणोद कन्याली में बड़े २ संन्यासी, ब्रह्मचारी और विद्वान् ब्राह्मण रहते हैं, वहाँ जाके

पूना-प्रवचन

और वहाँ से नर्मदा-तठ पर घूमने गया।

काशी से चलकर मैं पैदल विन्ध्याचल की ओर अग्रसर होने लगा और बिलासपुर होता हुआ अमरकण्टक पहुंच गया था। विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वतों के बीच में महाकाल नाम का पर्वत है। उसके अमरकण्टक नामक श्रृंग के विराट कुण्ड से नर्मदा निकली है। मध्यप्रदेश और गुजरात होती हुई नर्मदा अरबसागर की खाड़ी काम्बे में मिल गई है। नर्मदा लगभग एक सौ योजन लम्बी है। मैं धीरे-धीरे नर्मदा नदी के उत्पत्ति-स्थल की ओर से अग्रसर होने लगा। इसके दोनों तटों में अन्यान्य बहुत सी उपनदियाँ आकर मिली हैं। नदियों के संगम-स्थलों में बहुत से तीर्थ हैं। प्राचीनकाल से ऋषि-मुनियों के नाम पर बहुत से आश्रम बन गये हैं। साधु-तपस्वी लोगों के साधना करने के लिये और साधना-शिक्षा देने के लिए वहाँ साधन-क्षेत्र भी बन गये हैं। परमहंस सच्चिदानन्द स्वामी से यहाँ के चाणोद, कर्नाली, व्यासाश्रम और आबू-पर्वतादि साधन-क्षेत्रों के विषय में बहुत-कुछ सुना करता था। आबू अरावली पर्वत का श्रृंग-विशेष है। इन सब स्थानों के प्रति मेरा विशेष आकर्षण था। घने जंगलों के अन्दर मैं सकरे और छोटे-छोटे रास्तों से जाने लगा। कभी-कभी तो रास्ता समाप्त हो जाता था। वहाँ के स्थानीय आदमी मिल जाते तो वे बता देते थे कि इस रास्ते से किस तरफ जाने से, कौन सा तीर्थ या आश्रम मिल जाता है। दोपहर के समय भी घने जंगलों में अन्धेरा बना रहता था। भूख-प्यास लगने से या शाम हो जाने पर अधिक कठिनाई होती थी। जाते-जाते बड़े-बड़े सांप, हाथी, शेर, रीछ, वराह, जोंक, जहरीले कीट-पतंगों के झुण्ड और बड़े-बड़े मांस-भुक् पक्षी मिलते थे। लेकिन उनमें से किसी ने भी मुझे हानि नहीं पहुंचाई और मैंने भी किसी को हानि पहुंचाने के लिये नहीं सोचा। इस रूप से मैं नदी के इस पार से उस पार आया-जाया करता था। कहीं-कहीं घाट-उतराई के लिये नाव का भी प्रबन्ध नहीं था। एक लकड़ी के टुकड़े के सहारे पर ही नदी पार करनी पड़ी। जहाँ कुछ भी प्रबंन्ध नहीं था, वहाँ मैं तैरकर ही नदी के उस पार चला जाता था। फलस्वरूप मेरा लोटा, कम्बल, थैली और ड्डा बहुत पहले ही छूट गये थे। इस प्रकार मैं द्वार-बंगाधीश की दी गई स्नेह, श्रद्धा, प्रेम-प्रीति की निशानी से भी मुक्त हो गया था।

एक दिन की घटना को मैं आज तक भी भूल नहीं सका। उस दिन शाम होने वाली थी। सामने नदी थी। अमावस्या की अंधेरी रात आने वाली थी। आज मैं किस रूपसे रात्रि बिताऊँगा-यही सोच रहा था। देखते-देखते और सोचते-सोचते अंधेरा हो गया। दूर से हर्षध्वनि की आवाज आने लगी। धीरे-धीरे भीड़ नदी के किनारे पहुँच गई। मैंने दूर से देख लिया कि एक दस वर्ष के बालक को लोग नहला रहे हैं। सब पुरुष हर्ष के कारण नाच रहे हैं और स्त्रियाँ गाना गा रही हैं। एक माता बार-बार उस लड़के को पकड़ने के लिये जाती थी, किन्तु लोग माता को धकेल देते थे। यह क्या बात है, इसे जानने के लिये मैं वहाँ पहुंचा। तब मुझे बताया गया कि ''आज अति पुण्य तिथि मौनी-अमावस्या है। काल भैरव की गुफा में आज मध्य रात्रि को काल भैरव की सेवा में इस निष्पाप, निर्दोष और शुभ लक्षणयुक्त ब्रहाह्मण-बालक को

www.thearyasamaj.org

बलिवेदी पर चढ़ाया जाएगा जिससे इसके माता-पिता और वंश धन्य हो जाएंगे। ऐसा सौभाग्य सब के लिये नहीं होता है। इस एकमात्र पुत्र के पिता को पुजारियों की तरफ से ५०) पचास रुपये प्राप्त हुए हैं। पिता काल भैरव की कृपा को अनुभव करके धीर, स्थिर और शान्त है किन्तु मूर्ख और अभागिनी माता ने काल भैरव की इतनी बड़ी कृपा को नहीं समझा। प्रति वर्ष केवल एक वार इस मौनी-अमावस्या की पुण्य तिथि में काल भैरव को इस रूप से एक-एक सुलक्षणयुक्त ब्राह्मण बालक भेंट के रूप में दिया जाता है, इसमें रोने की क्या बात है? आज मध्यरात्रि को ही यह बालक बलिदान के साथ-साथ मनुष्य-देह को छोड़कर गन्धर्व लोक को चला जाएगा।''

इस बात को सुनते ही मेरे मन में तीन चिन्तायें उत्पन्न हुई -

पहली- ''मेरी माता ने मुझ पुत्र को केवल खोकर ही देहत्याग किया था, अपने पुत्र का बलिदान देखकर यह माता कैसे जीवित रहेगी?''

दूसरी- ''इस सामाजिक महापाप के दण्ड भोग के लिए ही हमारी पुण्य-मातृ-भूमि धीरे-धीरे विदेशी वणिकों के शासन में जा रही है।''

तीसरी- ''धर्म के नाम पर ऐसे-ऐसे महापाप ऋषि-मुनियों के देश में कैसे चाल हो गये?''

मुझसे यह करुण और भयंकर दृश्य नहीं देखा गया। काल-भैरव का यह स्थान धर्मपुरी से लगभग दो योजन की दूरी पर जंगल के अन्दर रास्ते के पास वारंगा नाले के साथ-साथ है। धर्मपुरी फलघाट के सम्मुख नर्मदा के उत्तरी तट पर है। फतेहगढ़ से कोई एक योजन दूरी पर ही यह स्थान है।

बलिदान की शोभा-यात्रा के अन्दर जाकर रक्त चन्दन से अनुलिप्त रुद्राक्षमाला-परिहित प्रधान पुरोहित से मैंने कहा- ''कृपया आप इस बालक को छोड़ दीजिये, इसके बदले मुझको ले चलिए। मैं भी ब्राह्मण का बालक हूं।'' पुरहित ने कहा- ''यह सौभाग्य सबको नहीं मिलता। इस बालक को नहीं छोड़ सकता हूं, क्योंकि यह काल-भैरव को पहले ही उत्सर्ग किया जा चुका है। तुम भी चल सकते हो, वहाँ पुरोहित-राज कापालिक की आज्ञा होगी तो इस बालक को छोड़ दूंगा और तुमको ही बलि पर चढ़ा दूंगा।'' मैं सहर्ष राजी होकर शोभा-यात्रा में शामिल होकर चलने लगा। लड़के की माता के कण्ठ की आवाज अति रुदन के कारण बन्द हो गई थी। केवल पगली की तरह शोभा-यात्रा में शामिल होकर आ रही थी। शोभा-यात्रा काल भैरव की गुफा के सम्मुख पहंच गई, जहाँ भयंकर भीड़भाड़ थी। सात कपड़े की पट्टियाँ सिर पर बांध कर करीब पचास आदमी कटारी हाथों में लेकर नाच रहे थे। करीब सौ स्त्री-पुरुष शराब पी-पीकर वहाँ गाना गा रहे थे। मेरे बारे में पुरोहित और कापालिक के अन्दर जब बातचीत हो गई तो उन्होंने मुझको सुझाव दिया-''अगर तुम राजी हो तो काल-भैरव की सेवा में तुमको ही बलिदान किया जाएगा।'' अतः मैं राजी हो गया और पुत्र-शोखातुरा जननी को उसका पुत्र वापस दिया गया। तब पुत्र को आलिंगन करके माता बेहोश होकर गिर पड़ी।

मुझको पुरोहितों ने स्नान करवाया, बदन में रक्त-चन्दन लगवाया। फूलों की माला पहना पुरोहित मेरे सिर पर हाथ रखकर मन्त्र-पाठ करने लगा। कपाल में कुमकुम लगवाया गया। खड्ग की पूजा हुई। काल-भैरव की गुफा के सम्मुख काठ की वेदी पर मेरे सिर को रखवाकर पुरोहित लोग मिलकरमन्त्रपाठ करने लगे। चारों तरफ से 'कालभैरव बाबा की जय' का उद्घोष होने लगा। मैंने उपस्थित समूह को एक वार देखकर अपनी आँखें बन्द कर लीं और बलिदान के लिये तैयार हो गया। पुरोहित ने कान में मुख लगा कर मन्त्र पढ़ा-

''ओम् नर त्वं बलि रुपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततस्त्वां वै गच्छ त्वं गन्धर्व-सदनम्॥
यज्ञार्थ पशवः सृष्टा यज्ञार्थे पशुघातनम्।
यज्ञे च मरणे त्वं हि ध्रुवं गन्ता त्रिविष्टपम्!''

इस मन्त्र को पढ़कर पुरोहित ने खड्ग को घातक के हाथों में दे दिया और मेरी आँखों को कपड़े की पट्टी से अच्छी तरह कसकर बाँध दिया। अब केवल बलिदान ही शेष था, लेकिन तभी अचानक बन्दूकों से गोलियाँ छूटने की तीन भयंकर आवाजें आईं, जिससे आदमी लोग चिल्लाने लगे-''भागो! भागो! भाग जाओ! मरहठी फौज आ गई है!'' अतः सभी जंगल के अन्दर भाग गये, मैं ही अकेला बलिदान के लक्कड़ में बँधा हुआ पड़ा रहा। तुरन्त वहाँ चार बन्दूकधारी सिपाही पहुंच गये और उन्होंने मुझको मुक्त कर दिया। मैंने सुना कि वे लोग अमावस्या की रात्रि में नवबलि बंद कराने के लिये घूमा करते हैं। ये लोग मरहठी फौज के सिपाही हैं। वह माता डर के मारे लड़के को साथ लेकर जंगल के अन्दर छिपी हुई थी। मैंने वहाँ जाकर माता को आशा बंधाई कि अब इन फौजी सिपाहियों से डरने का कोई कारण नहीं है। मैंने इन सिपाहियों से सब बातें आनुपूर्व कह दी थीं। माता से, लड़के से और मुझसे इन्होंने सब कुछ सुन लिया। वे लोग वहाँ ही रहे। सबेरे दो सिपाही माता को और लड़के को साथ लेकर उनके घर पहुँचाने के लिये खाना हो गये। दो सिपाहियों ने निरापदता के लिये मुझको साथ लाकर धर्मपुरी छोड़ दिया। मैं धर्मपुरी से थोड़ी दूरी पर मानधारा में आया, जहाँ नर्मदा नदी का प्रपात है। वहाँ स्नान करके प्रभु के चिन्तन में बैठ गया।

मैंने प्रभु को स्मरण किया-'हे प्रभो! मुझसे कौन सा कार्य होगा जिसके लिये तुमने मुझको बलिवेदी से भी बचा लिया?' देश, समाज और धर्म की अवस्था पर भी मैं विचार करने लगा। मैंने समझ लिया था कि देश-सेवा, समाज-सेवा, जाति-सेवा या धर्म-सेवा के लिये योग्यता की आवश्यकता है। मुझे सम्मरण आया कि मैं इसीलिये नर्मदा के किनारे आया हूं। योगसिद्ध साधकों के सन्धान में मैं दोनों किनारों पर प्रत्येक आश्रम में जाऊंगा। नदी-संगम पर आश्रम में योगी लोग रहते हैं। ये ही इनके साधना के लिये सर्वोत्तम स्थान समझे जाते हैं। प्रभु ने मेरी परीक्षा की है और भी परीक्षाएं सामने हैं।

मैं दृढ़चित होकर नर्मदा के प्रवाह के अनुसार पूर्व दिशा की ओर जाने लगा। रास्ते में बहुत साधुओं का संग मिला। उन के अनुभवों को सुनकर पारमार्थिक जगत्-सम्बन्धी लाभ भी उठाया। प्राकृतिक दृश्यों से मन-बुद्धि-चित्त निर्मल होने लगे। हिंस्त्र पशु भी साधुओं को पहचानते हैं। ये पशु साधुओं को किसी तरह से हानि नहीं पहुँचाते हैं। शिकारी लोगों को देखने से ही ये पशु बिगड़ जाते हैं। बन्दूक या बारूद की गन्ध पाकर ही ये पशु शिकारियों को मारने के लिये संघबद्ध हो जाते हैं। जंगल के निवासी भी बहुत ही सरल, अतिथि-सेवा-परायण और कृतज्ञ होते हैं। इस भरोसे पर मैं नर्मदा नदी के आदि से अन्त

www.thearyasamaj.org

तक योगियों के सन्धान में तत्पर रहा ।

व्याध, हिंस्त्र-पशु और पक्षियों की करुणा- नर्मदा के तटों पर योगियों के सन्धान में घूमते हुए मुझे व्याध, हिंस्त्र-पशु और पक्षियों की करुणा भी प्राप्त हुई थी । दो-तीन घटनाएं मुझे आज तक भी याद आती हैं । इन घटनाओं के संक्षिप्त विवरण के बाद मैं नर्मदा-भ्रमण के पूरे विवरण प्रस्तुत करूंगा ।

गहरे वन के अन्दर जाते हुए तक दिन मार्ग दिखाई नहीं दिया, रात्रि का अंधेरा हो गया था । निश्चेष्ट होकर धीरे-धीरे चलने लगा और अन्धेरे में एक गड्ढे में गिर गया । दाहिनी टांग में चोट आ गई, अतः गड्ढे में ही पड़ा रहा । मेरी कातर आवाज को सुनकर वन के रहने वाले व्याध लोगों ने आकर मुझे ऊपर उठाया, तीन रोज उन्हीं के घर पर रहा । उन लोगों ने मेरी टांग पर नानाविध औषधियां (जड़-बूटी) लगाई, भोजन के लिए फलों का प्रबन्ध किया । यथा-शक्ति मेरी सेवा की, स्वस्थ होने के बाद मुझे ठीक रास्ते तक पहुंचा दिया ।

एक दिन क्षुधार्त्त होकर जंगल के अन्दर पेड़ के नीचे बैठा था । वहाँ दो दिन तक भोजन नहीं मिला, फल वाले वृक्ष भी नहीं दीखे, कोई पुरुष भी नहीं दिखाई पड़ा । तीसरे दिन भूख के कारण अशक्त होकर पेड़ के नीचे ही लेट गया, क्षुधा-पिपासा के कारण प्राण जाने वाले से हो गए । धीरे-धीरे दो भालू मेरे पास पहुंचे । उन्हें देखकर मैंने जीवन की आशा ही छोड़ दी थी, परन्तु दोनों भालू मेरे शरीर को सूघकर चले गये । कुछ देर बाद एक भालू मुंह में मधु मक्खियों का छत्ता लेकर मेरे पास छोड़कर चला गया । छत्ता मधु से पूर्ण था । मधु को मैंने भरपेट चाट लिया जिससे मेरे शरीर में शक्ति आ गई और मैं धीरे-धीरे वहाँ से आगे चलने लगा ।

एक दिन जंगल के रास्ते में चलता हुआ मैं परिश्रान्त होकर किसी पेड़ के नीचे लेट गया और सो गया । जब किसी आवाज के कारण मेरी नींद टूटी तो मैंने देखा कि एक साँप मेरे सिर के ऊपर फन उठाये फुफकार रहा है । ऐसे में मैं क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आया । तभी एक पक्षी झपट करके आया और सांप को उठाकर ले गया । इन तीनों घटनाओं से मु मालूम हुआ कि भगवान् की करुणा सब ही जीवों के अन्दर विद्यमान है और उसकी यह करुणा विचारातीत है ।

अमरकंटक में- एक बड़ा कुण्ड है जिससे नर्मदा निकली है । उस कुण्ड का नाम कोटि-तीर्थ है । अमरकंटक में प्राचीन और नवीन मन्दिरों की संख्या बहुत है । यहाँ मार्कण्डेय ऋषि, भृगु ऋषि और कपिल ऋषि के आश्रम प्रसिद्ध हैं । आगे कबीरदास जी का सामयिक विश्राम-स्थान कबीर-चौतरा है । कपिलधारा और दुग्धधारा नाम के दो जलप्रपात इसके समीप ही हैं । ज्वाला नदी का उद्‌गम, नीलगंगा का संगम और चक्रतीर्थ भी समीप हैं । थोड़ी दूर जानेसे आचार्य शंकर द्वारा स्थापित ऋण-मुक्तेश्वर मन्दिर और कुकर मठ मिलते हैं । शोणभद्र नदी (सोन नदी) का उद्‌गम भी यहाँ से अधिक दूर नहीं है । मैं इन सब ही स्थानों में योगसिद्ध साधकों के सन्धान में गया था परन्तु सब ही जगह पुजारी लोगों कीही भीड़-भाड़ देखी ।

अमरकंटक से नन्दिकेश्वर-अमरकंटक से मैं मंडला आ गया था । मंडला में भी पुराने मन्दिर बहुत हैं । नर्मदा के उस पार व्यासाश्रम है, जहाँ जाकर मैं वहाँ के महन्त श्रीमान् कर्मानन्द स्वामी से मिला । उन्होंने मुझको सात रोज हठयोग के बारे में उपदेश दिया था। उनके उपदेश का सारांश यह है :-

"हठयोग के अभ्यास से योगी शीत-ऊष्म, क्षुधा-तृष्णा, निद्रा-आलस्य, जरा और वार्द्धक्य पर विजय-लाभ करते हैं; अटूट स्वास्थ्य, मानसिक बल और आत्म-संयम की शक्ति प्राप्त होती है । हठ योगी का आहार स्वल्प होता है और आहार छोड़कर भी योगी महिनों रह सकते हैं । तुम हठ योग का स्वाध्याय और अभ्यास करो ।"

मैंने उनका उपदेश शिरोधार्य किया और उनसे विभिन्न आसन और मुद्राओं का अभ्यास सीखा । त्राटक, नाड़ी-शुद्धि, नेति-क्रिया (नासापान), वस्ति-क्रिया, धौति-क्रिया और प्राणायामादि का भी अभ्यास किया ।

मंडला में रहते हुए मैंने हृदयनगर, मधुपुरा घाट, सीता-रपटन, लुकेश्वर और नन्दिकेश्वर-घाट में जाकर भी योगियों की खोज की थी । हृदयनगर बंजर नदी के किनारे है । यह नदी नर्मदा में मिल गई है और दो नदियाँ सुरपन और मटियारी बंजर नदी के साथ मिल गई हैं, इसलिए इसका नाम त्रिवेणी है । मधुपुरा घाट का दूसरा नाम घोड़ा घाट है । यहाँ मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम है । योगिनी गुफा नामक स्थान भी इस स्थान के पास है । यहाँ बहुत साधुओं से भेंट हुई । उनमें योगी पुरुष नहीं मिला । नन्दिकेश्वर घाट से थोड़ी दूर पर हिंगना नदी नर्मदा में मिलती है । योगियों के संधान में यहाँ के सब ही स्थानों में मैं कई बार गया था, लेकिन केवल भक्त साधु पुरुषों को ही देखा, योगी साधक एक भी नहीं मिला । मंडला से मैं देवगांव, सिंधरपुर और देवकुण्ड में भी गया । श्रृंगी ऋषि का आश्रम सिंधरपुर में था और मोहगाँव में जमदग्नि ऋषि का आश्रम था । देवकुण्ड में जलप्रपात देखा । बहुत ऊपर से यहाँ जल गिरता है । देवगांव के पास नर्मदा में बड़नेर नदी और देवकुण्ड के पास नर्मदा में खरमेर नदी मिलती है । इन सब स्थानों में भी योगी साधक नहीं मिले ।

नन्दिकेश्वर से केउधानघाट- मंडला से मैं जबलपुर आया । इसका दूसरा नाम जाबालिपत्तन है । यहाँ जाबालि ऋषि का आश्रम था । यहां से मैं योगियों की खोज में तिलवारा घाट, मुकुट क्षेत्र, त्रिशूल घाट, लमेटी घाट, गोपालपुर घाट, भेड़ा घाट, जलेरी घाट और बेल पटार घाट आदि स्थानों में गया था । भेड़ाघाट के पास धुआंधार जलप्रपात है । त्रिशूलघाट में त्रिशूलतीर्थ, लमेटीघाट में नर्मदा में सरस्वती नदी का संगम, भेड़ाघाट में भृगु आश्रम और रामनगरा में मुकुट क्षेत्र को देखा । जलेरीघाट में एक साधु से पता चला कि जबलपुर के आसपास कोई योगी पुरुष नहीं है ।

जबलपुर से मैं ब्रह्माण्डघाट आया । यहाँ नर्मदा के अन्दर द्वीप है और सप्तधारा तीर्थ है । वहां से मैं पिठेरा-गदारु, पिपरियाघाट, हरणी संगम, बुधघाट, ब्रह्मकुण्ड, सहस्त्रावर्त तीर्थ, सौगन्धिक तीर्थ, सप्तर्षि वन, अंडिया घाट शांकरी गंगा-संगम, पश्यपाश्रम, शक्कर नदी संगम, जनकेश्वरतीर्थ, धर्मशिला, दुग्धी नदी-संगम, साईं खेड़ा और खांड़े नदी पर गया । इसका नाम के उधान घाट है जिसके अन्दर लगभग सभी तीर्थों में मैंने भ्रमण किया, लेकिन अनुभवी योगी पुरुष नहीं दीख पड़े ।

केउधानघाट से माहिष्मतीपुरी- केउधानघाट से योगियों के संधान के लिये आगे बढ़ा और होशंगाबाद आया । यहां बहुत से मन्दिर हैं । इससे पूर्व नर्मदा के दक्षिणी तट

www.thearyasamaj.org

पर तवा नदी का संगम है । इसके आगे सूर्यकुण्ड है । यहाँ से आगे गौघाट में १६ योगिनियों और दो सिद्ध पुरुषों के स्थान हैं । यह तांत्रिक और वाममार्गियों का प्रधान केनद्र है । नांदनेर में कालभैरव और महाकालेश्वर शिव के मन्दिर हैं । सुना गया था कि यहाँ भी कभी-कभी नरबलि होती है । इसके आगे महर्षि भृगु का भृगु-कच्छ आश्रम है । इसके आगे मारु नदी के संगम में पांडवों की तपोभूमि है । इसका नाम पांडुदीप पड़ा । वहाँ से आगे नर्मदा के दक्षिण तट पर कणकमती नदी का संगम है । यह पुरानी यज्ञ भूम है । आगे नारदी गंगा का संगम है । यह नारद ऋषि की तपोभूमि थी । इससे आगे वरुणा नदी का संगम है । इससे आगे आकाशदीप तीर्थ है । इससे आगे कुब्जा नदी का और आगे अंजनी नदी का संगम है । यहाँ शांडिल्य ऋषि का आश्रम और गौरी तीर्थ हैं । इससे आगे गोमुख-घाट है और हत्याहरण नदी का संगम है । वहाँ से आगे नर्मदा के अन्दर पहाड़ पर भीमकुण्ड है । इसके आगे इन्दना नदी का और गंजाल नदी का संगम है । आगे गोनी नदी के संगम में जमदग्नि ऋषि की तपोभूमि है । आगे बागदी नदी का संगम है । यह स्थान नर्मदा का नाभिस्थान कहा जाता है । यह कालभैरव की तपोभूमि है । कु आगे दांतोनी नदी का संगम है । इसके आगे पुनघाट में गौतम ऋषि की तपोभूमि है ।

मंडलेश्वर जाने का सन्धान मुझे किसी साधु से मिल गया था । मार्ग में नर्मदा के अन्दर एक टापू पड़ता है । महाराज मान्धाता ने यहाँ तपस्या की थी । इसी से इस टापू का नाम मान्धाता पड़ गया है । इसके एक ओर नर्मदा और दूसरी ओर नर्मदा से निकली हुई कावेरी बहती है । कावेरी आगे जाकर नर्मदा में ही मिल गई है । इस टापू में बहुत से मन्दिर हैं । इस स्थान का नाम ओंकारेश्वर भी है । कोटि तीर्थ और चक्र तीर्थ भी समीप हैं । नौका से पार होके यहाँ आना होता है । नर्मदा पार करके ब्रह्मपुरी और विष्णुपुरी होकर अमलेश्वर आना पड़ता है । योगियों के सन्धान में मैं इन सब स्थानों में आया-गया, लेकिन सफल नहीं हुआ । कावेरी धारा के आरम्भ में पशुपतिनाथ तीर्थ है और अन्त में कावेरी-नर्मदा के संगम पर कुबेर की तपोभूमि है । वहाँ से थोड़ी दूर पर च्यवन ऋषि का आश्रम है । कुबेर की तपोभूमि से आगे सप्त-मातृका तीर्थ है । वाराही, चामुण्डा, ब्रह्माणी, वैष्णवी, इन्द्राणी, कौमारी और माहेश्वरी-इन सप्त मातृकाओं के पृथक्-पृथक् मन्दिर हैं । इन सब ही मन्दिरों में तांत्रिक साधुओं से वार्तालाप हुआ था । इनकी पंच-मकार की साधन-प्रणाली बहुत ही भयावह और अश्लील मालूम पड़ी । वहाँ ६४ योगिनियों और ५२ भैरवों के विशाल मन्दिर हैं । मन्दिरों में बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ भी हैं । वहाँ से मैं नर्मदा के सर्वश्रेष्ठ जलप्रपात के पास आ गया था । वहाँ से कोटेश्वर और नीलगढ़ तीर्थ समीप हैं । वहाँ से आगे जाते हुए मैंने नागेश्वर कुण्ड, भस्म टोला, विमलेश्वर, गोमुखघाट और गंगेश्वर तीर्थों में योगियों का सन्धान किया था । वहाँ से आगे मतङ्ग मुनि का आश्रम है और नर्मदा के साथ चोरल नदी का संगम है । वहाँ से मर्दाना और पिप्पलेश्वर होता हुआ मैं मण्डलेश्वर तीर्थ में आया । मण्डलेश्वर में कई-तक योगी और वैष्णव साधकों से भेंट हुई । मण्डलेश्वर के प्रमुख योगी आनन्दी बाबा ने मुझे राजयोग सीखने के लिए परामर्श दिया था । उन्होंने मुझे धारणा, ध्यान और समाधि की सिद्धि के लिए अति आवश्यक तत्वों के सम्बन्ध में भी उपदेश दिया था और आगे अग्रसर होने के लिए कहा था । मैं मण्डलेश्वर में कई एक दिन रहकर माहिष्मती पुरी की ओर चल दिया ।

माहिष्मतीपुरी से धर्मराय तीर्थ-माहिष्मतीपुरी का आधुनिक नाम महेश्वर है । महेश्वर नगर से थोड़ी दूर माहेश्वरी नदी नर्मदा में मिलती है । ज्ञानवादी शंकराचार्य से कर्मवादी म्डन मिश्र का शास्त्रों पर विचार यहीं हुआ था । प्राचीन काल में चन्द्रवंशीय राजा महष्मिान् ने इस नगर को बसाया था । माहेश्वरी संगम में ज्वालेश्वर शिव का मन्दिर है । इसी के आगे धर्मपुरी और मानधारा का जलप्रपात है । समीप ही जंगल के अन्दर पूर्वोक्त कालभैरव की गुफा है । कालभैरव की गुफा में ही मेरे लिए बलिदान का प्रयत्न हुआ था । इससे पूर्व सहस्त्रधारा नामक स्थान है । वहाँ मेरी मुक्तेश्वर नामक साधु बाबा से भेंट हुई थी । उनके साथ मैं बहुत दूर तक घूमता-घामता पर्वत के ऊपर मांडवगढ़ में पहुंचा । साधु मुक्तेश्वर बाबा के साथ ही पर्वत और वनों के अन्दर जाता हुआ पगारा, धर्मपुरी और खलघाट में गया । कुब्जा नदी का संगम, दधीचि आश्रम, साटक नदी का संगम, कारम और बुटी नदी के संगम, कसरावद, बोधपाडा, चिखल्दा, राजघाट, कोटेश्वर, मेघनाद नाम के स्थान, गोई नदी का संगम और धर्मराय तीर्थ तक दोनों ने भ्रमण किया था । धर्मराय तीर्थ के पास हिरनफाल तीर्थ के मार्ग की निम्न घटना याद है :-

''जंगल के अन्दर दोपहर के समय पेड़ के नीचे हम दोनों विश्राम कर रहे थे । अचानक वन्य वराहों का विशाल झुण्ड भयंकर गर्जन के साथ हमारे चारों ओर आ गया । मुक्तेश्वर बाबा डर के मारे चिल्लाते हुए पेड़ पर चढ़ गये और मुझको भी अपने पीछे चढ़ने के लिए कहा । पेड़ पर शीघ्र चढ़ना मुझे नहीं आता था, अतः मैं बिलकुल निरुपाय हो गया । जंगलों के रहने वाले लोग दूर से मेरे लिए चिल्लाने लगे । साधु बबाबा पेड़ पर चढ़ ये, लेकिन उनकी बहुत ही मजबूत लाठी पेड़ के नीचे दिखाई दी, मैं उस लाठी को हाथों में लिए हुए साहस के साथ बचने की आशा को छोड़कर ही लाठी खड़ी करके वराहों के सम्मुख खड़ा हो गया । बार-बार मैं लाठी से मिट्टी पर आघात करके खड़ा रहा । वराहों का झुण्ड चुपचाप क्षण भर खड़ा रहकर विकृत और भयंकर आवाज के साथ भागकर चला गया । तब जंगल के रहने वाले स्त्री-पुरुष वहाँ पेड़ के नीचे जमा होने लगे । सब कोई पूछने लगे कि ''आप कौन-सा मन्त्र जानते हैं, जिसके कारण वन के हिंस्त्र पशु भी डर के मारे भाग जाते हैं ?'' साधु बाबा धीरे-धीरे पेड़ के ऊपर से नीचे उतर आये और सबसे कहने लगे-''यह साधु बहुत ही गुणी है ।'' इस बात को सुनकर जंगल के शतशः स्त्री-पुरुष अपने-अपने भविष्य का हाल जानने के लिए, औषधि के लिए और विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए आकर मुझे घेरने लगे । अतः अति सवेरे मैं किसी तरह भागकर मैं अकेला ही चलने लगा । बहुत देर बाद मैंने देखा कि मुक्तेश्वर बाबा भी मेरे पीछे-पीछे दौड़ कर आ रहे हैं । इस प्रकार हम दोनों फिर एक साथ सम्मिलित हो गये थे ।''

धर्मराय तीर्थ से चाणोद-धर्मराय तीर्थ के अति समीप हिरणफाल का जंगल है । जंगल के अन्दर का प्रवाह है । मैंने और मुक्तेश्वर बाबा ने जंगल के अन्दर प्रवेश किया और

www.thearyasamaj.org

पैदल चलते हुए असुरों की तपोभूमि हिरणफाल में पहुँच गए। वहाँ एक और साधु तपस्वी को देखा। साधु ने हम लोगों से कुछ भी बातचीत नहीं की। वे मौनी थे। उन्होंने उस दिन रहने के लिए संकेत कर दिया। खाने के लिए फलवान् वृक्ष तल धिका दिए। हम दोनों ने रात को फल खा लिए थे। आधी रात को उस तपस्वी ने अति जोर से लगातार शब्द करना आरम्भ कर दिया। वहाँ के रहने वाले चार आदमियों ने आकर हम दोनों से कहा कि ये मेंढक बाबा शब्द कर रहे हैं, अब पानी बरसने वाला है और वाघ भी गुर्राने वाले हैं, आप लोग डरना नहीं। ऐसा कहकर वे लोग चले गए। थोड़ी देर के बाद प्रबल पानी बरसने लगा, चारों तरफ बाघ भी गुर्राने लगे और पानी जब तक बरसता रहा, वे तपस्वी भी शब्द करते रहे। पानी जब बन्द हो गया तब तपस्वी भी मौन हो गए और बाघ भी शान्त हो गये। दूसरे दिन सबेरे उस तपस्वी को प्रणाम करके हम दोनों चल दिए। वहां से हम लोग शूलपाणि तीर्थ आये। शूलपापणि से राजघाट आये। यहां से वन और पहाड़ों के कठिन मार्ग को पकड़ कर नर्मद के किनारे-किनारे चलने लगे। पास ही भृगुतुंग पर्वत और मार्कण्डेय गुफा है। थोड़ी दूर बाद नर्मदा के किनारे रणछोड़ जी का प्राचीन जीर्ण मन्दिर है। वहां से कपिल तीर्थ, मोक्षगंगा का नर्मदा से संगम, बड़गांव, पिपरिया, मार्कण्डेय आश्रम, गरुड़ेश्वर, बाल्मीकि आश्रम, वनखोड़ा घाट, इतनी नदी का संगम, मोखड़ी, भोगकुल्या संगम, चक्रतीर्थ, भीमकुल्या संगम और गमोण तीर्थ आ गये थे। यहां से एक-एक स्थान पर दो-तीन बार भी गए थे औ भिन्न-भिन्न स्थानों में आया-जाया करते थे। यहां से मुक्तेश्वर बाबा अलग होकर मुझको छोड़कर चले गए। शूलपाणि का वन वहां पर समाप्त हो गया।

सबसे ही मैंने चाणोद जाने के लिए रास्ता पूछा था। चाणोद, कर्णाली, सीनोर, व्यासाश्रम प्रभृति स्थानों के प्रति मेरा आकर्षण था। मेरे गुरु परमहंस सच्चिदानन्द ने काशी में मेरे विदाई-कालीन आशीर्वाद के समय चाणोद, कर्णाली, सीनोर और व्यसाश्रम में योगी सिद्ध पुरुषों के सन्धानार्थ जाने के लिए निर्देश दिया था। मैं पूछ-ताछ करके चाणोद पहुँच गया। मेरी अवस्था उस समय २३ वा २४ वर्ष की थी।

चाणोद में संन्यास ग्रहण

जन्म-चरित्र

दीक्षित और चिदाश्रमादि स्वामी, ब्रह्मचारी और पण्डितों से अनेक विषयों का परस्पर संभाषण हुआ। फिर एक परमानन्द परमहंस से वेदान्तसार, आर्य्याहरिमीड़ तोटक, वेदान्तपरिभाषा आदि प्रकरणों का थोड़ महिनों में विचार कर लिया। उस समय ब्रह्मचर्य्यावस्था में कभी २ अपने हाथ से रसोई बनाने पड़ती थी, इस कारण पढ़ने में विघ्न विचार के चाहा कि अब संन्यास ले लेना अच्छा है। फिर एक दक्षिणी पण्डित के द्वारा वहां जो दीक्षित स्वामी विद्वान् थे, उनको कहलाया कि आप उस ब्रह्मचारी को संन्यास की दीक्षा दे दीजिये, क्योंकि मैं अपना ब्रह्मचारी का नाम भी बहुत प्रसिद्ध करना नहीं चाहता था, क्योंकि मैं अपना ब्रह्मचारी का नाम भी बहुत प्रसिद्ध करना नहीं चाहता था, क्योंकि घर का भय बड़ा था जो कि अब तक बना है। तब उन्होंने कहा कि उसकी अवस्था कम है, इसलिये हम नहीं देते। इसके अनन्तर दो महिने के पीछे दक्षिण से एक दण्डी स्वामी और एक ब्रह्मचारी आके चाणोद से कुछ कम कोश भर मकान जो कि जंगल में था, उसमें ठहरे; उनको सुनकर एक दक्षिणी वेदान्ति पण्डित और मैं दोनों उनके पास जाके शास्त्रविषयक संभाषण करने से मामूल हुआ कि अच्छे विद्वान् हैं और वे शृंगीरी मठ की ओर से आके द्वारिका की ओर जाते थे, उनका नाम पूर्णानन्द सरस्वती था। उनसे उस वेदान्ति के द्वारा कहलाया कि 'ये ब्रह्मचारी विद्या पढ़ा चाहते हैं। यह मैं ठीक जानता हूँ कि किसी प्रकार का अपगुण इनमें नहीं है, इनको आप सन्यास दे दीजिये। संन्यास लेने का इनका प्रयोजन यही है कि निर्विघ्न विद्या का अभ्यास कर सकें।' तब उन्होंने कहा कि किसी गुजराती स्वामी से कहो, क्योंकि हम तो मा (=महा) रा,ट्र हैं। तब उनसे कहा कि दक्षिणी स्वामी गौडों को भी संन्यास देते हैं, तो यह ब्रह्मचारी तो पंच द्राविड़ है, इसमें क्या चिन्ता है ? तब उन्होंने मान लिया और उसी ठिकाने तीसरे दिन संन्यास की दीक्षा दण्ड-ग्रहण कराया और दयानन्द सरस्वती नाम रक्खा। परन्तु मैंने दण्ड का विसर्जन भी उन्हीं स्वामी जी के साम्हने कर दिया क्योंकि दण्ड की भी बहुत सी क्रिया है कि जिससे पढ़ने में विघ्न हो सकता था। फिर वे स्वामी जी द्वारिका की ओर चले गये। मैं कुछ दिन चाणोद-कन्याली में रहके २३वें वा २४वे वर्ष में चाणोद-कन्याली में एक संन्यासी से मेरी भेंट हुई। अध्ययन करने की इच्छा अत्यधिक थी और संन्यासाश्रम में पढ़ने के लिये सुभीता होता है। इसलिये उनके उपदेश के अनुसार मैंने श्राद्ध आदि करके संन्यास लिया और तब से दयानन्द ऐसा नाम धारण किया। मैंने दण्ड गुरु के समीप ही धर दिया (अर्थात् उनके सामने ही दण्ड का त्याग कर दिया)

कलकत्ता-कथ्य

चाणोद एक नामी धर्मक्षेत्र नर्मदा के किनारे है। यहाँ सप्ततीर्थ विद्यमान हैं। सप्ततीर्थ ये हैं- चण्डादित्य, चण्डिका देवी, चक्रतीर्थ, कपिलेश्वर, ऋण-मुक्तेश्वर, पिंगलेश्वर और नन्दाह्रद। प्रत्येक तीर्थ में साधु, योगी, साधक और संन्यासी देखे गए। प्रत्येक पूर्णिमा और विशेष पुण्य-तिथि में प्रत्येक तीर्थ में मेला लगता है। मैं योगी, मुक्त पुरुष और साधकों का सन्धान करने लगा। चाणोद में एक वेदान्ती सादु श्रीमत् स्वामी परमानन्द परमहंस से वेदान्त सार, वेदान्त परिभाषा, वेदान्त चिन्तामणि पढ़ने लगा था। उन्होंने कहा-ब्रह्म, जीव और जगत् के बारे में पूर्ण निश्चय का अनुभव आ जाने के बाद ही मुक्ति की पिपासा आ जाएगी। तब तक वेदान्त के वास्तविक रूप की आलोचना होनी चाहिए। उनसे नव्य वेदान्त के बहुत से ग्रन्थ अध्ययन किये। उस समय मुझे भिक्षान्न से या स्वयं रन्धन करके देह-रक्षा करनी पड़ती थी। इन दोनों कार्यों में भी पर्याप्त समय नष्ट हो जाता था। अब तक 'शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी' ही मेरा नाम था। परमहंस परमानन्द ने मेरी स्थिति को सोच समझ करके ही मुझको संन्यासाश्रम ग्रहण करने के लिये प्रेरणा दी थी, क्योंकि संन्यासी बनने से खाने के लिये मुझे अपने हाथ से रसोई पकानी नहीं पड़ेगी। अतः मैंने संन्यास लेने के लिए अपना विचार पक्का करके संन्यासाश्रम में प्रवेश करना ही उचित समझा था। संन्यास देने के लिये योग-दीक्षित संन्यासी का प्रयोजन था। किसी के मतानुसार मेरे संन्यास लेने के लिये महाराष्ट्री साधु चाहिए और किसी के मतानुसार गुजराती चाहिए। ठीक इसी समय चाणोद के समीप जंगल के अन्दर पूर्णानन्द नाम के संन्यासी और शिव चैतन्य नाम के ब्रह्मचारी श्रृंगेरी मठ से आते हुए द्वारिका मठ को जाने वाले थे। बहुत विचार के पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द ने मुझे संन्यासाश्रम में आनुष्ठानिक रूप से दीक्षित कर दिया। तब से मेरा नाम **स्वामी दयानन्द सरस्वती** हो गया। फिर दोनों साधु वहाँ से अपने-अपने स्थानों की चले गए और मैं भी व्यासाश्रम में आकर योग-विद्या सीखने लगा।

www.thearyasamaj.org

यह पूंजी का खेल है पगले !

सचमुच परेशान है । वह देश नहीं जो नेताओं, धनपतियों, अफसरों, दलालों और माफिया का देश है, बल्कि वह देश जो गरीबी की रेखा से नीचे जीने वालों, रोज कमा कर रोज पेट भरने वालों, छोटे किसानों, पांच-छह हजार मासिक वेतन पाने वालों, छोटे व्यापारियों, दुकानदारों, बीमारों, बेरोजगारों और दैनिक जरूरतों के लिए जीने वालों का देश है । मायावती के संसदीय शब्दों में 'चारों तरफ हाहाकार है, त्राहि-त्राहि है, अफरा-तफरी है ।' पूंजी अपना खेल खेल रही है । पूंजी का खेल समझने से पहले कुछ त्वरित टिप्पणियां ।

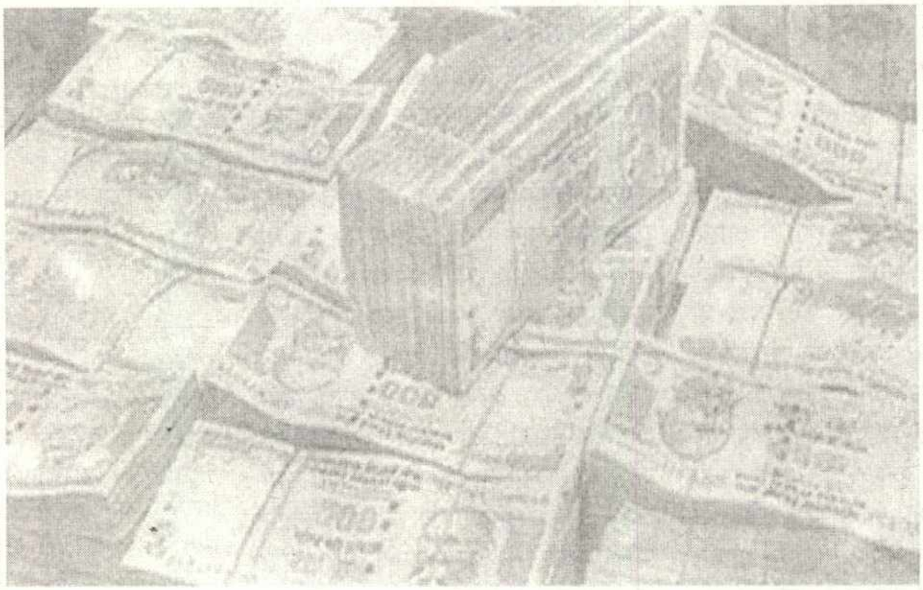

लंबी कतारें : कब तक लगी रहेंगी बैंकों के आगे ये लंबी कतारें ? जाहिर है कि जब तक पांच सौ और हजार के प्रचलन से बाहर हुए सारे नोट सामान्य लोगों के खातों के जरिए अपनी शक्ल नहीं बदल लेते या जब तक इनके खातों में जमा होने की अवधि समाप्त नहीं हो जाती, अब जो भी स्थिति पहले आये, तब तक ये कतारें लगी रहेंगी ।

काला धन : काला धन यानी ऊपरी कमाई यानी कमीशन यानी सुविधा शुल्क यानी धनशक्ति और सत्ताशक्ति का लालच यानी चुनावी चंदा यानी धार्मिक चढावा यानी वर्चस्व की सामाजिक प्रतिद्वंद्विता यानी मुक्त अर्थतंत्र यानी पूंजी की आजाद घुमक्कड़ी यानी सत्ता सापेक्ष प्रशासन यानी चुनावी लोकतंत्र और आधी आबादी की मुहताजी जब तक भारतीय समाज के हिस्से बने रहेंगे, तब तक न तो भ्रष्टाचार मिटेगा न काले धन का प्रवाह रुकेगा । रही हजार-पांच सौ की काली नगदी की बात तो निम्न मध्यवर्ग नहीं जानता कि उसका कौन-सा नोट काला है और कौन-सा सफेद, उसके लिए अपनी मेहनत के बदले मिला पैसा सिर्फ पैसा है, फिर चाहे वह कहीं दिहाडी करके मिले या कहीं कतार में लग कर ।

कॉरपोरेट घरानों के पास काला धन नहीं होता, सिर्फ लाभ होता है, जिसमें से राजनीतिक सत्ता अपना हिस्सा लेती है । इनके बीच में नेता-अधिकारी-धनपति का वह गठजोड़ है, जिसके पास नोटों की इफरात है और जिन्हें खपाने के लिए वह जी-जान एक किये हुए हैं।

इस झटके ने सामान्य नागरिक को यह बता दिया है कि देश में काला धन नाम का कोई दैत्य रहता है जो उनकी जिंदगियों से खेल रहा है । लोग जानना चाहेंगे कि जिस काले धन ने उनकी जिंदगियों में भूकंप ला दिया है, वह आखिर है क्या ? और यह तो जरूर जानना चाहेंगे कि जब काला धन परवान चढ़ता है, तो उन्हीं की जिंदगियों की कीमत पर क्यों चढ़ता है और जब इस पर लगाम लगाने की कोशिश होती है, तो उन्हीं की जिंदगियों की कीमत पर क्यों होती है ? क्या सचमुच किसी को आम जनता की चिंता है ।

पक्ष-प्रतिपक्ष : सत्ता पक्ष अपने नोटबंदी के कदम को लेकर आश्वस्त भले न हो पर आक्रामक पूरा है । उसकी नजर में नब्बे प्रतिशत जनता उसकी समर्थक है तथा इस 'महान तथा अनिवार्य' कदम की सफलता के लिए 'थोडा-सा' कष्ट झेलने को तैयार है । विपक्ष अपने तई 'गंभीर' आरोप लगा रहा है कि नोटबंदी के खेल में लाखों-करोडों का घोटाला है ९० प्रतिशत जनता अपार कष्ट झेल रही है, देश ठप्प हो गया है, विकास की गति पलट गयी है, आदि-अनंत । लेकिन सच यह है कि पक्ष-प्रतिपक्ष दोनों ही आधा सच बोल रहे हैं । उतना सच बोल रहे हैं जिससे दूसरे को परास्त किया जा सके और उतना झूठ छिपा रहे हैं, जिससे खुद के बचाया जा सके । चुनावी राजनीति और इससे जुडे सत्ताई स्वार्थ न पक्ष को पूरा सच प्रस्तुत करने की इजाजत देते हैं, न विपक्ष को ।

पूंजी युद्ध : सच यह है कि यह पूंजी युद्ध है । वैसे तो पूंजी का कोई रंग नहीं होता, लेकिन स्थान-काल और पात्र उसे रंग दे देते हैं । इस हाथ में पूंजी है तो सफेद, उस हाथ में गयी तो काली । इसकी कमाई है तो सफ़ेद उसकी है तो काली । कानून की हद मानकर चली तो सफेद और हद से बाहर हुई तो काली । वैसे, पूंजी कहीं भी हो अपने चरित्र के अनुसार चलती है, और उसका चरित्र है कि वह दुष्चरित्र होती है । जो भी उस पर कब्जा कर

ले उसकी हो जाती है, उसी का रंग ले लेती है। भारत जैसे चुनावी लोकतंत्र में राजनीतिक सत्ता बिना पूंजी के नहीं आती, इसलिए सत्ता पर कब्जे की लड़ाई पूंजी और पूंजीपतियों पर कब्जे की लडाई भी होती है । आपका पूंजी और पूंजीपति-आधार जितना मजबूत होता है, आपकी राजनीतिक सत्ता भी उतनी ही मजबूत होती है । किसी की राजनीतिक सत्ता को कमजोर करना है, तो सबसे पहले उसकी पूंजी की सत्ता कमजोर करनी होती है । राजनीतिक सत्ता की जान वस्तुतः पूंजी के तोते में रहती है । अतः हर राजनीतिक दल अपनी सत्ता को मजबूत बनाने के लिए दूसरे के तोते की जान के पीछे पडा रहता है। आज ऐसा ही हो रहा है। पूंजी को राजनीति के रंग में विभाजित करके स्थिति को थोड़ा स्पष्ट तरीके से समझा जा सकता है। मौजूदा भाजपा सरकार के नजरिये से पूंजी के खेल को समझने की कोशिश करें तो मोटे तौर पर पूंजी की तीन शक्लें दिखाई देती हैं ।

पहली, भाजपा के हिंदुत्ववादी राष्ट्रवाद की समर्थक राष्ट्रवादी पूंजी, दूसरी, भारत के राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध काम करने वाली ताकतों यथा आतंकवाद आदि को शक्ति और समर्थन देने वाली राष्ट्रविरोधी पूंजी, और तीसरी, वह पूंजी जो राष्ट्र विरोधी तो नहीं है, मगर भाजपा के राष्ट्रवाद की समर्थक भी नहीं है तथा भाजपा जिसे राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध सक्रिय रहने वाली पूंजी के तौर पर देखती है यानी अ- राष्ट्रवादी पूंजी । भाजपा अपने घोषित राष्ट्रवाद को तभी अधिक मजबूत कर सकती है, तभी उसका अधिक विस्तार कर सकती है, और तभी राजनीतिक सत्ता पर अपनी पकड मजबूत कर सकती है, जब वह राष्ट्रविरोधी और अ-राष्ट्रवादी पूंजियों को कमजोर करे । वस्तुतः नोटबंदी के रूप में भाजपा की भगवा पूंजी ने विपक्षियों और राष्ट्रविरोधियों की लाल, नीली और हरी पूंजियों पर हमला किया है । नोटबंदी करके भाजपा कहती है कि उसने आतंकवादियों, राष्ट्रविरोधियों और उनके समर्थकों की कमर तोडी है, लेकिन इसके आगे वह मौन हो जाती है। उसी तरह विपक्ष भी जनता की परेशानियों के बहाने हमला बोल रहा है, तमाम तकनीकी खामियों को लेकर आपत्ति जता रहा है, लेकिन पूंजी और अपनी राजनीति के रिश्ते पर वह चुप्पी मारे हुए है ।

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఎన్నికలు

5-2-2017 ఆదివారము రోజున

స్థానము : హైదరాబాద్

తెలంగాణ ఆంధ్ర ప్రాంతముల ఆర్య సమాజాలన్నింటికి నోటిఫికేషన్ ఉత్తరము ద్వారా మరియు గత 2-3 ఆర్య జీవన్ పత్రికలలో ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. హైదరాబాద్ తెలంగాణకు ఎన్నికలు నిర్వహించబడునని తెలియజేయడము జరిగినది. ఆర్య సమాజముల అధికారులు తమ తమ ఆర్య సమాజాలకు సంబంధించిన ఎన్నికలను నిర్వహించుకొని అందులోనే ఆర్య ప్రతినిధి సభకై ప్రతినిధులను ఎన్నుకోగలరని సూచించినాము. ఎన్నుకోబడిన ప్రతినిధుల ఫారాలను 17-12-2016 నాటి వరకు ఇవ్వ వలసిన రుసుముతో సహా సభ కార్యాలయంలో జమ చేయవలెనని కూడ కోరినాము. ఎన్నికలు తేది ఖరారు అయిన సందర్భములో ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను తీసుకొనే తేదిని సాధ్యపడక పోవచ్చును. కావున సకాలములో ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను సభ కార్యాలయములో ధాఖలు చేయగలరని ఇంకొకసారి మరియు ఆఖరి సారి తెలియ చేయుచున్నాము.

9 మంది సభ్యులపైన ఒక ప్రతినిధి రుసుము రూ॥ 1025/-

29 మంది సభ్యులపైన రెండు ప్రతినిధులు రుసుము రూ॥ 2575/-

49 మంది సభ్యులపైన మూడు ప్రతినిధులు రుసుము రూ॥ 4125/-

69 మంది సభ్యులపైన నాలుగు ప్రతినిధులు రుసుము రూ॥ 5675/-

89 మంది సభ్యులపైన ఐదు ప్రతినిధులు రుసుము రూ॥ 7225/-

అధికారులతో ప్రత్యేకంగా మనవి చేయునది ఏమనగా ఎటువంటి జాప్యం చేయకుండా తప్పక ప్రతినిధి ఫారాలను దాఖలు చేయగలరని కోరుచున్నాము.

ప్రధాన్ ఆర్యప్రతినిధి సభ　　మంత్రి ఆర్యప్రతినిధి సభ

नोटबंदी से आराम से जी रही जनता को जो झटका लगा है, वह जरूरी था। लोगों ने इससे पहले कभी वह भूकंप नहीं देखा था, जिसके झटके संसद से सडक और कश्मीर से कन्याकुमारी तक महसूस किये जाएं । और जिसके चलते हर खाओआम को अपने बचाव के लिए दौड़ना पड़ जाये । इस झटके ने सामान्य नागरिक को यह बता दिया है कि देश में काला धन नाम का कोई दैत्य रहता है जो उनकी जिंदगियों से खेल रहा है ! लोग जानना चाहेंगे कि जिस काले धन ने उनकी जिंदगियों में भूकंप ला दिया है, वह आखिर है क्या ? और यह तो जरूर जानना चाहेंगे कि जब काला धन परवान चढता है, तो उन्हीं की जिंदगियों की कीमत पर क्यों चढता है और जब इस पर लगाम लगाने की कोशिश होती है, तो उन्हीं की जिंदगियों की कीमत पर क्यों होती है ? क्या सचमुच किसी को आम जनता की चिंता है ? यह पूंजी का खेल है पगले इसे समझ !

www.thearyasamaj.org

ఎందుకొచ్చిన రాజరికం ?!

- ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి

అదే చాలామందికి నచ్చలేదు.

ఇంగ్లీషువాళ్లు దుర్మార్గులు, దురాక్రమణదారులు అన్నమాట నిజమే. వందేళ్లుగా వాళ్లు మరీ పెట్రేగి, ప్రజలనూ పాలకులనూ వంచించి, దేశాన్ని దశల వారీగా దొంగదారిన కబళించి, సమాజంలోని అన్ని వర్గాల వారినీ నానా అగచాట్లకూ, అవమానాలకూ గురిచేసిన సంగతీ యథార్థమే. విదేశీయుల దౌష్ట్యానికీ, దాష్టీకానికీ వ్యతిరేకంగా ప్రజలు, సైనికులు సంఘటితమై అపూర్వ చైతన్యంతో ఏడాదిపైగా భీకర సమరం సాగినిచారంటేనూ సంతోషించవలసిందే. కానీ - ప్రజల పక్షాన అంతటి మహా పోరాటం మొదలెట్టిన వాళ్లు దాన్ని తీసుకుపోయి మూలపడి మూలుగుతున్న మొగల్ పాదుషా చేతుల్లో పెట్టడమేమిటి ? బూజుపట్టి, భ్రష్టుపట్టి, నామమాత్రావశిష్టమైన ఫ్యూడల్ రాజరికాన్ని ఏరికోరి నెత్తిన పెట్టుకున్న పోరాటం ప్రగతిశీలకం ఎలా అవుతుంది ?

అని మన మేధావులకు మహా చిరాకు. 1857లో జరిగింది మనం గొప్పగా చెప్పుకునే ఫ్రెంచి విప్లవానికి గాని, ప్రపంచంలో జరిగిన మరే స్వాతంత్ర్య యుద్ధానికి గాని తీసిపోని మాట నిజమే అయి ఉండొచ్చుగాక. కాని ఇంగ్లీషు బళ్లో చదువుకుని ఎర్ర కళ్లద్దాలతో తప్ప ప్రపంచాన్ని చూడలేని మన సోకాల్డ్ అభ్యుదయవాదులకు, వారి నోటికి భయపడి గొర్రెదాటుగా వారిని అనుసరించే మెతక లౌక్యులకు మాత్రం - కాలం చెల్లిన ఫ్యూడల్ అవశేషపు రాజును కావాలని నెత్తికెత్తుకున్నారన్న ఒక్క కారణంతోటే 1857 పోరాటం మీద గౌరవం పోయింది.

కాలాన్ని ఎవరూ వెనక్కి నడిపించలేరు. నిజమే. కాలదోషం పట్టిన ఫ్యూడల్ పెత్తనాలను పునరుద్ధరించడం ద్వారా సమాజాన్ని ముందుకు తీసుకుపోవడం కల్లే. కాని వాస్తవానికి 1857లో జరిగిందంతా ఫ్యూడల్ వ్యవస్థ పునరుద్ధరణ కోసమేనా ?

తిరుగుబాటు లేచీలేవగానే ఢిల్లీకి పరుగులిడి... మూలనున్న పాదుషాకు ఏనాడో కోల్పోయిన రాజ్యాధికారాన్ని తిరిగి కట్టబెట్టడం పూర్వాపరాలు సరిగా తెలియని వారికి ఎబ్బెట్టుగా కనపడటం సహజమే. కాని - ఆ కాలంలో అప్పుడున్న పరిస్థితుల్లో, వారికున్న పరిమితుల్లో తిరుగుబాటుదారులు అంతకు మించి చేయగలిగింది ఏమైనా ఉందా ?

అలజడి రేగింది సాధారణ ప్రజల్లో. దాని బహుముఖ ప్రభావం వల్ల ముందుగా తిరుగుబాటు లేచింది సామాన్య సైనిక శ్రేణుల్లో. విదేశీ దురాక్రమణదారుల ఆగడాలూ అఘాయిత్యాల వల్ల జాతి, ధర్మం, మతం భ్రష్టమవుతున్నాయన్న చిత్తక్షోభతో ఓరిమి నశించి తప్పనిసరై తిరగబడ్డారే తప్ప - ఇంగ్లీషువాళ్లను వెళ్లగొట్టి వారి చేతిలోని పెత్తనాన్ని తాము గుంజుకోవాలన్న కాంక్ష తిరుగుబాటుదారులలో ఓ ఒక్కరికీ లేదు. పెత్తనం చేయగల శక్తిగాని, స్తోమత గాని తమకునిదనీ ఎవరూ అనుకోలేదు. కడుపు మండింది. ఓపిక పోయింది. క్రోధం వచ్చింది. తిరగబడ్డారు. ఎదుటనున్న శత్రువుల పీచమణిచారు. బంధనాలు తెంచుకున్నారు. తరవాత ఏమి చేయాలి ? శత్రువు నుంచి గుంజుకున్న అధికారాన్ని ఎవరి చేతికి అప్పగించాలి ? ఇకపై ఎవరు చెప్పినట్టు నడవాలి ? ఏవరి నీడలో బతకాలి ?

ఇలాంటి ప్రశ్నలకు జవాబులు వెదుక్కునే అవసరం తిరగబడ్డ జనానికి సాధారణంగా ఉండదు. మనం చూసినంతలో ఏ తిరుగుబాటునైనా, లేక ఏ విప్లవాన్నయినా ఒక నాయకుడు, లేక కొద్దిమంది నాయకులు కలిసి నడిపిస్తారు. ఒక సిద్ధాంతం ప్రాతిపదికనో, ఒక ఆదర్శం చూపించో, ఒక అధర్మాన్ని వ్యతిరేకిస్తూనో వారు జనాన్ని కూడగడతారు. ఉత్తేజాన్నిచ్చి, ఉద్వేగం నింపి పోరాటానికి పురికొల్పుతారు. వారు చెప్పింది నమ్మి, వారి వెనక నిలిచి, చెప్పినట్టు చెయ్యటమే ప్రజల పని. పోరాటం ఫలించాక, శత్రువులు జయించాక ఏమి జరగాలి. అధికారం ఎవరికి చెందాలి, అనంతర వ్యవస్థ ఎలా ఉండాలి అన్నది నాయకుడే (లేక నాయకులే) నిర్ణయిస్తారు. ప్రజల పేరిట వ్యవహారాలన్నీ జరిగిపోతాయే తప్ప కీలక నిర్ణయాల్లో ప్రజల ప్రమేయం ఏమీ ఉండదు.

1857లో పరిస్థితి వేరు. చరిత్రలో మనం చదువుకున్న ఏ విప్లవంతోనూ, ఏ తిరుగుబాటుతోనూ దానికి పోలిక లేదు. నమ్ముతారో లేదో ! సంవత్సరంపైగా ఉవ్వెత్తున సాగి బ్రిటిష్ మహాసామ్రాజ్యాన్ని గడగడలాడించిన ఆ మహా పోరాటానికి నాయకుడన్నవాడే లేడు. సమర్థమైన నాయకశ్రేణి అసలే లేదు. (ఆ సంగతి చదువరులకు ముందు ముందు బాగా అర్థమవుతుంది.) పోరాటం సాగిన వివిధ దశల్లో, వివిధ ఘట్టాల్లో నాయక బాధ్యత స్వీకరించి, అద్భుత శౌర్య పరాక్రమాలు చూపిన వీరాధివీరులు చాలామందే ఉన్నారు. కాని మొత్తంగా ఈ పోరాటానికి ప్రేరకులు, కారకులు, నాయకులు అంటూ ప్రత్యేకించి చెప్పదగినవారు ఒక్కరంటే ఒక్కరు కూడా లేరు. ఆ సంగతి ఇంతవరకూ మనం చూసిన ఘటనాక్రమాన్ని బట్టే పోల్చుకోవచ్చు.

దేశాన్ని ఊపేసిన మహాప్రభంజనం దానికది అప్పటికప్పుడు హఠాత్తుగా ఏమీ పుట్టుకురాలేదు. 1857కు కొన్ని సంవత్సరాల ముందునుంచీ తమకు పట్టిన దుర్గతి గురించి అన్నివర్గాల ప్రజలు మథనపడసాగారు. ఏదో ఒకటి చేయాల్సిందేనని దాదాపు అందరూ అంగీకరించారు. ఏమి చేయాలి, ఎలా చేయాలి అన్న దానిపై వివిధ ప్రాంతాల్లో, వివిధ వర్గాల్లో, వివిధ స్థాయిల్లో చాటుమాటుగా తర్జనభర్జనలూ జరిగాయి. అనేక సామాజిక వర్గాల్లో పొడసూపిన ధిక్కార వైఖరి ప్రభావం సైనికుల మీద పడింది. సైనికులు ఎదుర్కొంటున్న కర్కశపు ఆంక్షలకు, నిర్బంధాలకు, భ్రష్టాచారాలకు వ్యతిరేకంగా సామాన్య ప్రజల్లోనూ సంఘీభావం వెల్లువెత్తింది. వందేళ్లు గడవటంతోటే తెల్లవాళ్ల పెత్తనానికి నూరేళ్లు నిండుతాయని ఎవరో చెప్పిన 'కాలజ్ఞాన' ప్రభావం అందరి మీదా విశేషంగా పనిచేసింది. 1757 జూన్ ప్లాసీ యుద్ధంతో తెల్లవాళ్ల దురాక్రమణ మొదలైంది కనుక వందేళ్ల తరువాత 1857 జూన్‌కల్లా విదేశీ దాష్టీకానికి నూకలు చెల్లనున్నాయన్న నమ్మకం సర్వత్రా వ్యాపించింది. ఆ విధి లిఖితానికి తమ వంతు దోహదంగా మే 31 నాడు అన్నిచోట్లా ఒకేసారి సిపాయిలు, ఇతర వర్గాలు తిరగబడి, ఎక్కడికక్కడ బ్రిటిష్ అధికారులను హతమార్చి, విదేశీ కబ్జా నుంచి దేశాన్ని విముక్తి చేయాలని కొందరిలో స్థూలంగా ఏకాభిప్రాయం కూడా కుదిరింది. ఈ సందేశాన్ని వ్యాప్తి చేయటానికి సాధు, సంతులూ, ముల్లాలూ మౌల్వీలు దేశం వివిధ ప్రాంతాల్లో సంచరించి, సైనిక పటాలాలకు

www.thearyasamaj.org

కూడా తరచూ వెళ్లి రాసాగారు. సైనిక రెజిమెంట్లలో దీనిపై రహస్య సమాలోచనలు విస్తృతంగా సాగాయి. మహాఘటన ఏదో జరగబోతున్న దానికి సంకేతంగా ఊరూరికీ ఐదేసి చపాతీలను పంపించి, వాటిని అందుకున్నవారు తలా ఐదేసి చపాతీలను పక్క ఊరికి రిలే పద్ధతిన పంపించే ఏర్పాటు పెద్దఎత్తున జరిగిపోయింది. మొత్తంమద 1857 మే వచ్చేనరికల్లా దేశమంతటా చాపకింద నీరులా అసంతృప్తి, అసమ్మతి వ్యాపినిచి, ఏదో జరగబోతున్నదన్న ఉత్కంఠ, కచ్చితంగా ఇది అని చెప్పలేని ఉద్రిక్తత నలుమూలలా అలుముకున్నాయి.

ఆశ్చర్యపడాల్సింది ఏమిటంటే ఇదంతా ఎక్కడికక్కడ స్థానిక వర్గాల చొరవతో జరిగిపోయిందే తప్ప ఎవరో ఒక నాయకుడో, కొద్దిమంది నాయకులో నిర్దిష్ట వ్యూహ ప్రకారం పకడ్బందీ పథకంతో అమలు చేయించింది కాదు. ఏదో జరగబోతున్నదని అందరూ అనుకోవటమే తప్ప కచ్చితంగా ఏమి జరగనున్నదో, అందులో ఎవరు ఏ భూమిక వహించి, అంతిమ లక్ష్యాన్ని ఏ తీరున సాధించాలో, రాగల అవాంతరాలను ఎలా ఎదుర్కోవాలో ఇదమిత్థంగా ఎవరికీ తెలియదు. మే 31న ఏదో చేయాలని అనుకోవటమే తప్ప, గంభీర దృక్కులతో అంతా తెలిసినట్టుగా ఒకరికొకరు తల తాటించుకోవటమే తప్ప నిర్దిష్ట కార్యాచరణ ప్రణాళిక అంటూ ఎవరిదగ్గరా లేదు.

ఇదిగో – ఈ నేపథ్యంలో ఊహించినదాని కంటే వేగంగా పరిస్థితులు తోసుకొచ్చి మీరట్ సిపాయిలు మే 10న తిరగబడ్డారు. విప్లవ శిబిరానికి హెడ్ క్వార్టర్సు అంటూ ఏదైనా ఉంటే దానికో నాయకుడంటూ ఉండి ఉంటే ఎకాఎకి అక్కడికే పోయో, కబురు పంపో తరవాత ఏమి చేయమంటారని ఆదేశం అడిగేవాళ్లేమో. అలాంటి సౌలభ్యం ఏదీ లేదు. కనుక తమకు తామే నిర్ణయించుకోవాలి. ఏమి చేయాలి ? ఎక్కడికి పోవాలి ?

తిరగబడి తోక తొక్కాక ఇంగ్లీషువాళ్లు తాచుపాముల్లా వెంటపడక మానరు. కాబట్టి అక్కడే ఉండిపోయే ప్రసక్తి లేదు. ఎవరి ఊళ్లకు వారు వెళ్లిపోయి, స్థానికంగా ఉన్న జమీందార్లనో, పెత్తందార్లనో ఆశ్రయించి కాలం వెళ్లదీయవచ్చు. కాని మిగతా చిల్లర నౌకరీలతో పోల్చితే డబ్బులు బాగానే గిట్టుబాటయ్యే బ్రిటిష్ కొలువును కావాలని కాలదన్ని తిరగబడింది స్థానిక మోతుబరుల పంచన పడి ఉండటానికి కాదు. జాతీయ స్ఫూర్తితో; నిండైన దేశభక్తితో; మతం మీద, ధర్మం మీద భక్తితో; వాటికి హాని తలపెట్టిన విదేశీయుల పట్ల కసితో ! ఆ కసి తీరాలంటే మొదలెట్టిన పోరాటాన్ని చివరంటా సాగించ వలసిందే. తమలో అందరూ సామాన్యులే కాబట్టి ప్రత్యామ్నాయ అధికార కేంద్రాన్ని ఎంచుకుని, దాని అండతో అంతా కలిసి యుద్ధం కొనసాగించటం మినహా మరో దారి లేదు. మరి అప్పటి భారతదేశ స్థితిగతుల్లో అటువంటి ప్రత్యామ్నాయ, అధికార కేంద్రంగా ఎంచుకోగలిగింది ఎవరిని ?

అదే నలభైయాభై ఏళ్ల కిందయితే – మరాఠా పీష్వా గుర్తుకొచ్చేవాడేమో. కాని – బ్రిటిష్ కుతంత్రాల మూలంగా, మరాఠా ప్రముఖుల అనైక్యత, అసమర్థతల మూలంగా మరాఠా మహాసామ్రాజ్యం ఛిన్నాభిన్నమై, రెండో బాజీరావు పీష్వాగిరీని కూడా వదిలేసుకుని తెల్లవాళ్లకు దాసానుదాసుడై ఎక్కడో భిథూరులో విలాస జీవితం గడపసాగాక మరాఠా శక్తిమీద అందరికీ ఆశలు ఉడిగాయి. ఒకప్పుడు సగర్వంగా తల ఎగరేసిన సిక్కులు రంజిత్‌సినిగ్ అవకాశవాదం వల్ల, అంతః కలహాల వల్ల తెల్లవాళ్ల మాయలో పడి, ఒకరి వెనక ఒకరు గోతులు తీసుకుని చివరికి అందరూ బొందలో పడ్డారు. మొగల్ పాదుషాకు ఒకప్పుడు సుబేదారులై సమయం చూసి తల ఎగరేసి కొంతకాలం దుర్నిరీక్ష్యంగా వెలిగిన బెంగాల్, అవధ్, నిజాం నవాబుల్లాంటి వారూ ఇంగ్లీషు వాళ్లకు దాసోహమన్నాక మట్టికొట్టుకుపోయారు. టిప్పు సుల్తాన్ కాలగర్భంలో కలిశాక మైసూరు సామ్రాజ్యం గురించీ ఆలోచించాల్సింది ఏమీ మిగల లేదు.

ఇలా వీరు కాదు వీరు కాదు అని తీసేసుకుంటూ పోతే చివరికి మిగిలేది ఒకే ఒకడు: మొగల్ పాదుషా బహదూర్‌షా ! మొగలాయీలూ ఇంగ్లీషు వారి వంటి విదేశీ దురాక్రమణదారులే అయి ఉండొచ్చు. దేశాన్ని ఏడు శతాబ్దాలపాటు నానా ఆరళ్లు పెట్టి తీరని క్షోభకు గురిచేసిన ఇస్లామిక్ పీడనలో వారికీ గణనీయ ప్రమేయం ఉన్న సంగతీ యథార్థమే. ఒకప్పుడు దాదాపుగా యావద్భారతంపై తిరుగులేని ప్రాభవం చలాయించిన మొగలాయీ మహాసామ్రాజ్యం చివికి ఛిద్రమై, నామమాత్రావశిష్టమైన మాట ముమ్మాటికీ నిజం. పాదుషా అధికారం ఎర్రకోట దాటితే ఎందుకూ కొరగాదు. పోనీ ప్రస్తుత పాదుషా వ్యక్తిగా కదు సమర్థుడా, జాతీయ శక్తులను చక్కగా నడిపించగల శక్తి సంపన్నుడా, కనీసం భారత జాతీయతకు ప్రతీకగా అందరి మన్నన చూరగొనగలిగిన యోగ్యుడా అంటేఅదీ లేదు. కాటికి కాళ్లు చాచిన ముదుసలి. కవిత్వం చెప్పడం మినహా ఏమీ చేతకాని నల్లమందు భాయి.

ఇవన్నీ నిజమే. కానీ సామ్రాజ్యం సర్వభ్రష్టమైన తరవాత కూడా ఇంగువ కట్టిన గుడ్డలా మొగల్ సామ్రాజ్యమంటే గురి చాలామందిలో మిగిలింది. పైగా మొత్తం దేశాన్ని పరిపాలించగల లీగల్ టైటిల్ ఆనాడు మొగల్ పాదుషాకు మాత్రమే ఉంది. చిత్ర విచిత్రమాయోపాయాలతో, కుట్రలూ కుహకాలతో దేశాన్ని దాదాపు కబ్జాచేసిసిన ఈస్టిండియా కంపెనీకి చట్టబద్ధంగా ఉన్న అధికారమల్లా – బెంగాల్, బీహార్, ఒరిస్సా రాష్ట్రాలలో మొగల్ పాదుషా ఏజెంటుగా వ్యవహరించి, రెవిన్యూ వసూలు చేసుకోగలిగిన దివాన్‌గిరీ మాత్రమే. అది పొందిన తరవాత అడ్డదారిన అనేక రాజ్యాలను, ఎన్నో పరగణాలను అడ్డగోలుగా తమ పులుసులో కలిపేసుకున్నప్పటికీ చక్రవర్తి సార్వభౌమాధికారాన్ని తెల్లవాళ్లు బాహాటంగా ఎన్నడూ సవాలు చేయలేదు. గవర్నర్ జనరలు కూడా పాదుషాకు విశ్వాసపాత్రుడైన సేవకుడిగానే తనను తాను అభివర్ణించుకుని, పాదుషా ఎదుట చేతులు కట్టుకుని నిన్నమొన్నటి దాకా నజరానాలు సమర్పించుకునేవాడు. దానికి ప్రతిగా, ప్రసన్నతా సూచకంగా పాదుషా అనుగ్రహించిన ఖిల్లత్‌లను చూపించే పాదుషా పేరు మీదే తెల్లవాళ్లు చక్రం తిప్పుతూ వచ్చారు. మొగల్ చక్రవర్తిని లక్ష్యపెట్టక స్వతంత్రంగా వ్యవహరించసాగిన నవాబులు సైతం చక్రవర్తి పేరు మీదే నాణేలు ముద్రించేవాళ్లు. ఆఖరికి మొగల్ సామ్రాజ్యానికి పక్కలో బల్లెమై ముప్పుతిప్పలు పెట్టిన మరాఠాలు కూడా తమ ప్రాభవం దుర్నిరీక్ష్యంగా వెలిగిపోయిన స్థితిలోనూ చక్రవర్తికి ప్రతినిధులుగానే అధికారం చలాయించడానికి ఇష్టపడేవాళ్లు. (అది ఎటువంటి బానిస మనస్తత్వమన్నది వేరే విషయం.) సార్వభౌమాధికారానికి చిహ్నంగా దేశవాసుల మనసుల్లో చిరకాలంగా మొగల్ పాదుషాహీ ముద్రపడిపోయినప్పుడు – బ్రిటిష్ కబ్జాపై తిరగబడ్డ సిపాయిలకు తాము విధేయత ప్రకటించదగిన ఏకైక వ్యవస్థగా దాన్నే ఎంచుకోవడం సహజమే !

తెల్లవాళ్లది అక్రమంగా సంపాదించిన బలీయ *(Paramount Power)* శక్తే తప్ప ఇండియాపై ఆధిపత్యానికి చట్టబద్ధ *(Constituted Authority)* రాజ్యాంగ అధికారం

శేషము 24వ పేజిపైన

www.thearyasamaj.org

భ్రష్టులా ? ద్రష్టలా ?

- ఎం.వి.ఆర్.శాస్త్రి

అందమైన అబద్ధాలాడటం కవుల జన్మహక్కు ! బహదూర్‌షా కవి. కాబట్టి తడుముకోకుండా ఎడాపెడా అబద్ధాలాడేస్తాడు. అది కవిత్వంలో మాత్రమే ఐతే బాగానే ఉండేది. కాని నిజ జీవితంలో కూడా ! కవిత్వంలో కంటే నిజ జీవితంలోనే ఎక్కువగా.

1857 మే 11 అర్ధరాత్రి విప్లవకారుల ఒత్తిడికి తల ఒగ్గి తనను తాను భారత సార్వభౌముడిగా ప్రకటించుకున్నది మొదలు సెప్టెంబరు 20న తెల్లవాళ్లు తిరిగి ఢిల్లీని వశపరచుకుని తనను ఖైదు చేసేంత వరకూ నాలుగు నెలలపాటు నడిచిన రాజ్య వ్యవహారాల మంచికీ చెడుకూ వాస్తవంగా ఐతే బహదూర్ షాయే బాధ్యత వహించాలి. పేరుకు చక్రవర్తి ఐనా తన పూర్వీకులైన పాదుషాల వలె చండ ప్రచండ నిరంకుశాధికారాలు అతడికి లేని మాట నిజం. అతడిని చక్రవర్తిని చేయడంలోనే కాదు; పతనమయ్యేంతవరకూ రాచ కార్యాల్లోనూ, విప్లవకారుల ప్రమేయం, ప్రభావం విశేషంగా ఉన్నందువల్ల అప్పట్లో జరిగినవన్నీ తాను స్వతంత్రించి చేసిన సొంత నిర్ణయాలు కావని అతడు చెప్పటంలోనూ తప్పులేదు. మాట వినకపోతే తనను, తన వారిని ఏమి చేస్తారోనని భయపడి, తనకు ఇష్టంలేని పనులను విధిలేక చేశానని అతడు అంటేనూ అర్థం చేసుకోవచ్చు.

అంతవరకే ఐతే ఫరవాలేదు. కాని తెల్లవాళ్లకు పట్టుబడ్డాక తనపై మూడు వారాల మొక్కుబడి విచారణ చివరి రోజున (1858 మార్చి 9న) విన్నవించుకున్న లిఖిత పూర్వక వాఙ్మూలంలో బహదూర్‌షా ఇంకా చాలా చెప్పాడు. మచ్చుకు కొన్ని :

"They came suddenly, and made me prisoner. They never saluted me even, nor showed me any other mark of respect... What confidence could I place in troops who had murdered their own masters ? In the same way that they murdered them, they made me a prisoner, and tyrannised over me... Without my knowledge they plundered, not only many individuals, but several entire streets, plundering, robbing, killing and imprisoning all they chose... They plundered my physician's house, and made him a prisoner... The officers of the army went even so far as to require that I should make over the queen Zinat Mahall to them they might kept her a prisoner. They, one day, went to the house of the queen Zinat Mahall, intending to plunder it, but did not succeed in breaking open the door. If they were subservient to my authority, or had I been in league with them, how would these things have occured ?... No person demands the wife of the poorest man, saying "Give her to me, I will make a prisoner"...

[Ed.K.C.Yadav, *The Trial of Bahadur Shah*, PP 344-345]

(వాళ్లు హఠాత్తుగా వచ్చి నన్ను ఖైదీని చేశారు. నాకు కనీసం శాల్యూట్ కూడా చేసేవారు కాదు. ఎలాంటి గౌరవాన్నీ చూపినిచేవారు కాదు... తమ సొంత యజమానులనే ఖూనీ చేసిన సైనికుల మీద నాకేమి విశ్వాసం ఉంటుంది ? వాళ్లను చంపినట్టే నన్నూ బందీని చేశారు. నన్ను పీడించారు... నాకు తెలియకుండా వారు ఎన్నో లూటీలు చేశారు. పలువురు వ్యక్తులను మాత్రమే కాదు. మొత్తం వీధులకు వీధులనే ఎన్నిటినో దోచుకున్నారు. ఎవరిని పడితే వారిని ఇష్టానుసారం కొల్లగొట్టి, సర్వస్వం హరించారు. ఎందరినో బంధించారు; చంపేశారు... నా సొంత వైద్యుడి ఇంటి మీదే పడి అందిందల్లా దోచేసి అతడిని బంధించారు. సైన్యాధికారులు తీంకా ఎంత దూరం వెళ్లారంటే రాణి జీనత్ మహల్‌ని అప్పగించండి; చెరలో వేస్తాం అని నన్నే కోరారు. ఒక రోజున ఆ రాణి ఇంటి మీదికి లూటీ చేయబోయారు. కాని మూసిన తలుపును పగలగొట్టటం వాళ్ల తరం కాలేదు. వారు నా అధికారానికి లోబడి ఉంటే, లేక నేను వాళ్లతో కుమ్మక్కయి ఉంటే ఇవన్నీ ఎలా జరుగుతాయి ? "నీ భార్యను నాకు అప్పగించు. బందీని చేస్తాను" అని కడు పేదవాడిని కూడా ఎవడూ డిమాండు చేయడే !?)

ఇదీ- '1857 తిరుగుబాటు'కు నాయకుడిగా, విప్లవ స్ఫూర్తికి ప్రతిరూపంగా మనలో చాలామంది తలిచే బహదూర్‌షా పాదుషా వారికి సదరు 'తిరుగుబాటుదారులు ఉచ్చనీచాలెరుగని ఖూనీ కోరులని... మంచీ మర్యాదా లేని ముష్కర మూకలని... వైద్యులను, రాణులను చెరబట్టి, ఊరి మీద పడి విశృంఖలంగా జనాన్ని దోచుకుని, లూటీలు, ఖూనీలు చేసిన సంఘ వ్యతిరేక శక్తులని సంగతి తెలియని వారు అనుకోవటం సహజం. ఇలాంటి అసాంఘిక, అరాచక, దుష్ట శక్తులను మట్టుపెట్టి శాంతి భద్రతలను సంస్థాపించిన దేశోద్ధారకులుగా ఇంగ్లీషు వాళ్లు మాయలో ఉపడ్డవారికి పొడగట్టటం దురదృష్టం.

విప్లకారులు ఏ తప్పూ చేయని పుణ్యమూర్తులని కాదు. వారి వల్ల ఏ అఘాయిత్యమూ జరగలేదని, ఏ పొరపాటూ దొర్లలేదని, అంతా నవ్యంగా, నియమబద్ధంగానే నడిచిపోయిందని ఎవరూ సర్టిఫికెటు ఇవ్వలేరు. విప్లవ శ్రేణుల్లోనూ దుర్మార్గులున్నారు. వాటం చూసుకుని సంఘ వ్యతిరేక శక్తులూ విప్లవ శిబిరంలో చేరి, నానా ఆగం చేసిన మాట యథార్థం. లోపల ఏ కుత్సితమూ లేని నిజాయతీపరులు కూడా తెలిసో తెలియకో, దూరం ఆలోచించలేకో, క్షణికోద్రేకంలోనో కొన్ని కానిపనులకు పాల్పడిన సంగతీ యథార్థమే. కాని జరిగిందంతా ఇంతే కాదు. సగర్వంగా చెప్పుకోదగ్గ ఇంకో పార్శ్వం కూడా ఉంది.

యాభై ఏళ్లకు పైగా ఢిల్లీలో సర్వాధికారాలు చలాయిస్తున్న ఆంగ్లేయులు రాత్రికి రాత్రి పలాయనం చిత్తగించారు. ప్రభుత్వ వ్యవస్థ స్తంభించింది. అరాజకాన్ని నివారించాలంటే ప్రత్యామ్నాయ ఏర్పాట్లు తక్షణం జరగాలి. అది పాదుషా వల్ల అయ్యే పని కాదు. పరిపాలన అతడికి చేతకాదు. అలవాటూ లేదు. అరవయ్యో పడిలో తండ్రి తరవాత పాదుషా అయ్యాక ఇంగ్లీషు వాళ్లిచ్చే నెలకు లక్ష రూపాయల భరణంతో బాధ్యతల బరువు లేకుండా బతుకుతూ, ఏది కావలసినా తెల్లదొరలను దేబిరిస్తూ, నల్లమందు సేవిస్తూ, విచిత్ర పూజా పునస్కారాలతో, కవితా గోష్ఠులతో రికామీగా ఇరవై ఏళ్లు పొద్దు పుచ్చుతూ వచ్చినవాడు హఠాత్తుగా రాజదండం చేతిలో పెట్టి, నువ్వే, చక్రవర్తిని అంటే మాత్రం ఏమి చేయగలడు ? పోనీ చిన్నతనంలోనైనా తండ్రి దగ్గర తర్ఫీదు అయి రాజ్య వ్యవహారాల్లో ఆరితేరినవాడా అంటే... అతడి తండ్రీ ఇతడి

www.thearyasamaj.org

వంటి పనిలేని పెన్షనుదారే ! నెత్తినెక్కి కూచున్న ముద్దుల రాణి ఐనా మగడిని సరిగా నడపించి, చక్రం తిప్పగల యోగ్యురాలా ? కాదు. ఆమెకు ఎంతసేపూ సవతి కొడుకులను ఎలా సాధించాలి, తన కొడుకును ఎలా పైకి తేవాలి అన్నదొక్కటే ఏక సూత్ర కార్యక్రమం. పాదుషా చేతకాని ముసలివాడైనా... కొడుకులు యోగ్యులూ, శూరులూ, కార్యదక్షులూ ఐతే రాజ్యభారం వాళ్ల మీద నిశ్చింతగా వదిలివేయవచ్చు. కనీసం చుట్టూ చేరిన సచివులూ, సలహాదారులూ సమర్థులయినా ఏదో ఒక విధంగా బండి నెట్టుకుపోవచ్చు. బహదూర్‌షాకు కొడుకులకు కొదవ లేదు. మనవళ్లూ కావలసినంత మంది. కాని గుంపెడు సంతానంలో పనికొచ్చేవాడు, అప్పగించిన బాధ్యతను సజావుగా నిభాయించ గలిగినవాడు ఒక్కడూ లేడు. ఇక సలహాదారుల తెరువు చూద్దామా అంటే పనికిమాలిన ఇచ్చకాలాడి, లేనిపోని భ్రమలు కలిపించి, మూర్ఖపు చేష్టలకు పురికొల్పేవారే తప్ప సమయానికి అక్కరకు రాగలిగినవాడు ఎవడూ లేడు.

ఇలాంటి పరిస్థితుల్లో సిపాయిలు లేచి, ఇంగ్లీషువాళ్లను వెళ్లగొట్టి, కోటలోని రాజును పీటల మీద కూచోబెట్టారు. నా వల్ల కాదు నన్ను వదిలేయండని రాజు చేతులెత్తేస్తే, అంతా మేము చూసుకుంటాము లెమ్మని భరోసా ఐతే ఇచ్చి ఒప్పించారు. కాని చూసుకోవటం వారికీ కొత్తే. పైవారి ఆజ్ఞలను పాలించటం, ఎవరిని కాల్చమంటే వారికి కాల్చడమే తప్ప రాజకీయాలూ, రాజ్య వ్యవహారాలూ సిపాయిలకు తెలియవు. వారిలో అత్యధిక సంఖ్యాకులు గ్రామీణ రైతు కుటుంబాల నుంచి వచ్చిన బడుగు వర్గాలవారు. పెద్దగా చదువుకున్నవారు కాదు. భుజ బలమే తప్ప బుద్ధిబలం తక్కువ. రాజనీతి వారికి తెలియని విద్య. పోనీ ఆ విద్య తెలిసి, రాజ్యపాలనను సమర్థంగా చక్కబెట్టగలిగిన కొద్దిమంది నాయకులైనా వారికి ఉన్నారా ? కొద్దిమంది దాకా ఎక్కడ ? మొత్తం విప్లవ స్కంధావారానికి నాయకుడంటూ పేర్కొనదగినవాడు ఒక్కడంటే ఒక్కడు కూడా లేడు. కోటను తిరిగి పట్టుకుని, పాదుషాను బందీని చేశాక ఇంగ్లీషువాళ్లు ఎన్ని విచారణలు చేసి, ఎందరిని ఎన్ని విధాల ఆరాతీసి, ఎంతగా బుర్రలు బద్దలు కొట్టుకున్నా 'తిరుగుబాటు'కు నాయకులంటూ ఒక్క పేరును కూడా కచ్చితంగా కనుక్కోలేకపోయారు. ఎందుకంటే అసలు నాయకుడే లేడు కనుక !

మరి- పాదుషాకూ చేతకాదు. ప్రత్యామ్నాయంగా కాడిమోయగల వాడూ ఎవడూ లేడు. అలానిటి పరిస్థితుల్లో సాధారణంగా ఐతే శూన్యం ఆవరిస్తుంది. పాలనా వ్యవస్థ చచ్చుబడుతుంది. సర్వత్రా అరాచకం ప్రేత్రేగుతుంది కదా ? కాని- చిత్రం! అంతటి శూన్యంనుంచే ఆశ్చర్యపడదగ్గ ప్రత్యామ్నాయం ఆవిర్భవించింది. చదువు సంధ్య లేక, నాగరిక టక్కుటమారాలెరుగక, సాదాసీదాగా తమ మానాన తాము బతుకుతూ వచ్చిన పల్లెకారు పేద సిపాయిలే నమ్మశక్యం కానంతటి సమయజ్ఞత చూపారు. అంతా కలిసి ఆలోచించి, అందరి తెలివినీ కలబోసి, పరిపాలన సవ్యంగా సాగడానికి ఒక చక్కని ఏర్పాటు చేశారు.

అదేమిటంటారా? పౌర, సైనిక వ్యవహారాలను చూడటానికి, ప్రజల విజ్ఞప్తులను, ఫిర్యాదులను విచారించి నిర్ణయాలు చేయటానికి ఒక ఉన్నతస్థాయి కోర్టును ఏర్పాటు చేశారు. దానిలో పది మంది సభ్యులు. అందులో ఆరుగురు సైనిక వర్గాల వారు. నలుగురు సివిలియన్లు. వారూ పలుకుబడితో పైరవీ చేసి పదవులు పంచుకునే బాపతు కాదు. మిలిటరీ సభ్యుల్లో ఇద్దరిని పదాతిదళాల నుంచి, ఇద్దరిని అశ్విక దళం నుంచి, ఇద్దరిని ఫిరంగి దళం నుంచి ఎన్నిక చేయాల్సి ఉంటుంది.

అది కూడా కామినేషన్ పద్ధతిన కాదు. ఆయా సైనిక దళాల వారిలో మెజారిటీ ఎవరిని కోరుకుంటే వారినే ఎన్నుకోవాలి. అలాగే సివిలియన్ సభ్యులనూ వివిధ వర్గాల నుంచి అత్యధిక సంఖ్యాకుల ఇష్టం మేరకు ఎన్నుకోవాలి. అలా ఎన్నికైన పది మందిలో ఏ ఒక్కరి నిజాయతీ, యోగ్యతల గురించి ఏ సభ్యుడైనా ఎప్పుడైనా ఆక్షేపణ వ్యక్తం చేయవచ్చు. అలాంటప్పుడు మిగతా సభ్యుల అభిప్రాయం తెలుసుకుని మెజారిటీ ఇష్టపడితే సదరు వ్యక్తి సభ్యత్వం రద్దుచేసి, అతడి స్థానంలో వేరొకరిని నిర్ణీత పద్ధతిలో ఎన్నిక చేయించాలి. పరిపాలనకు సంబంధించిన సమస్త వ్యవహారాలపై ఈ కోర్టే నిర్ణయాలు జరగాలి. కనీసం ఐదుగురు సభ్యులు ఉంటేనే కోరం ఉన్నట్టు. సభ్యులు తమలో నుంచి ఒకరిని అధ్యక్షుడుగా, ఒకరిని ఉపాధ్యక్షుడుగా ఎన్నుకోవాలి. ఏ విషయాన్నయినా కనీసం ఇద్దరు సభ్యులు కోరినప్పుడే సమావేశం అజెండాలో చేర్చాలి. సర్వసైన్యాధిపతి, పాదుషా మినహా వేరెవరినీ కోర్టు సమావేశంలోకి అనుమతించరాదు.

పరిపాలనకు సంబంధించిన అన్ని అంశాలూ మొదట ఈ కోర్టు పరిశీలించి తగు నిర్ణయాలు చేయాలి. వాటిని సేనాధిపతి ఆమోదించాలి. ఆ తరవాత పాదుషాకు తెలియపరిచి అవసరమైన ఉత్తర్వులు జారీచేయమని కోరాలి. ఒకవేళ కోర్టు నిర్ణయం సేనాపతికి నచ్చకపోతే దానిని తిప్పి పంపవచ్చు. అభ్యంతరాలను దృష్టిలో ఉంచుకుని కౌన్సిలు పునఃపరిశీలన చేసి ఉచితనుకున్న నిర్ణయం చేస్తుంది. ఇంకా అది కూడా సేనాధిపతికి ఆమోదయోగ్యం కాకపోతే రాజుగారికి రిఫర్ చేయాలి. ఆయనదే అంతిమ నిర్ణయం.

ఈ వ్యవస్థను చూస్తే ఏమనిపిస్తుంది ? ప్రజాస్వామ్యాన్ని కాచి వడబోశామనుకుంటున్న ఈ 21వ శతాబ్దంలో ఇప్పటికీ ఎవరికీ జవాబుదారీ లేకుండా పోయి ప్రజల నెత్తినెక్కి కాళ్లతో తన్నుతున్న రాజకీయ విశృంఖలత్వాలతో పోల్చితే 19వ శతాబ్దంలో ఏ రాజ్యాంగ నిపుణుల, మహా మేధావుల సాయం లేకుండా మామూలు సిపాయిలు అప్పటికప్పుడు అమల్లో పెట్టి ఈ ఆపద్ధర్మ విధాన నిర్ణాయక వ్యవస్థ వెయ్యి రెట్లు మెరుగుకాదూ? (*NAI, Mutiny papers, Bundle No.57*లో 539-41 నెంబరు డాక్యుమెంట్లలో పైన పేర్కొన్న కోర్టుకు సంబంధించిన నిబంధనావళిని వివరంగా చూడొచ్చు.)

నూతన వ్యవస్థను కాగితాల మీద రాసిపెట్టటమే కాదు ఆ ఏర్పాటు కార్యరంగంలో యథావిధిగా అమలు జరిగింది కూడా. తిరుగుబాటుదారులు ఒక కోర్టును నెలకొల్పి అన్ని విషయాలూ అందులోనే చర్చించి, నిర్ణయాలు చేసేవారని... ఆ కోర్టు కార్యకలాపాలలో తానన్నడూ పాలుపంచుకోలేదని బహదూర్‌షా తన వాఙ్మూలంలో ఉక్రోషం వెళ్లగక్కింది ఈ వ్యవస్థపైనే. రాణి, ఆమె తరఫు వాళ్లు, రాజ కుటుంబీకులు, వారి బంధుమిత్రులు, చుట్టూ చేరిన ఇచ్చకాల రాయుళ్లు కలిసి ముసలిరాజు చెవులు పట్టుకుని ఆడించగా జరిగే నిరంకుశ నిర్ణయాల కంటే ప్రజాస్వామ్య పద్ధతిలో, వివిధ వర్గాల నుంచి ఎన్నికైన ప్రతినిధులు కూలంకషంగా చర్చించి క్రమపద్ధతిన చేసే పారదర్శక నిర్ణయాలు రాచవారు ఎంత గింజుకున్నా లక్ష రెట్లు నయం.

అత్యున్నత స్థాయిలో విధాన నిర్ణయాలకు ప్రత్యేక కోర్టును ఏర్పాటు చేయడంతో బాటు న్యాయస్థానాల్లో హిందువుల వ్యాజ్యాలను విచారించడానికి హైందవ జడ్జిలను, ముస్లిం వ్యాజ్యాల విచారణకు ముస్లిం జడ్జిలను విప్లవ ప్రభుత్వం ఏర్పరచింది. ఏటా బక్రీద్‌నాడు విచ్చలవిడిగా జరిగే గోవధను ఆ సంవత్సరం నిషేధించి, గోవును చంపిన నేరానికి

www.thearyasamaj.org

మరణశిక్షను ప్రకటించింది. వెనుకటి పాదుషాల వలె మత పక్షపాతాన్ని దరిచేరనివ్వకుండా ముసల్మాన్లను, హిందువులను ఒకే రకంగా చూసి అందరికీ సమాన న్యాయం చేయబూనింది. ఆ కాలంలో ఈస్టిండియా కంపెనీ ఉన్నతాధికారిగా ఉండి 1857 తిరుగుబాటు చరిత్ర రాసిన **చార్లెస్ బాల్** దీని గురించి ఏమన్నాడో చూడండి.

"Upon examining the apartments occupied by the King and his Chief Officers in the palace many papers were found that threw a light upon the intended proceedings of the rebel monarch; and from them it appeared that the kind of government to be permanently established for the city and immediately surrounding country... seems to have been a sort of Constitutional Monarchial Milocracy. The king was king and honoured as such like a Constitutional Monarch; but instead of a Parliament, he had a Council of soldiers in whom power rested... No Arabic or Persian names, forms or terms appear to have been introduced; but on the contrary, the English terms and modes of business were generally adopted. All petitions seems to have been presented to the king; but the great authority to which almost all of them on all matters both Civil and Military were referred, was the Court- a body composed of a number of colonels...'

[Charles Ball, History of the Indian Mutiny, Vol.I, P.524]

(పాలెన్‌లో రాజు, అతడి ముఖ్య అధికారులు నివసించిన చోట్ల అనేక పత్రాలు దొరికాయి. వాటిని పరీక్షిస్తే తిరగబడ్డ రాజు కార్యకలాపాల గురించి చాలా విషయాలు తెలిశాయి. నగరంలోనూ, చుట్టుపట్ల ప్రాంతాల్లోనూ శాశ్వతంగా ఏర్పరచదలిచిన ప్రభుత్వం ఒక రకమైన 'రాజ్యాంగ, సైనిక, రాజరికం'గా కనపడింది. రాజు రాజే. రాజ్యాంగ బద్ధుడైన ప్రభువుగా ఆయన గౌరవం ఆయనకు ఉంది. పార్లమెంటుకు బదులుగా సైనికుల కౌన్సిలు పనిచేస్తుంది. అధికారం దాని దగ్గర ఉంటుంది... అరబిక్, పర్షియన్ పేర్లు ఏర్పాట్లు ఎక్కడా లేవు. ఇంగ్లీషు పదాలనూ, ఇంగ్లీషు వ్యవహార శైలినే సాధారణంగా అనుసరించారు. అన్ని పిటిషన్లూ రాజుకే సమర్పించేవారు. కాని వాటన్నిటినీ పరిశీలించి, సివిల్, మిలిటరీ విషయాలన్నిటిపైనా నిర్ణయాలు తీసుకునే ఉన్నత అధికార వ్యవస్థ కోర్టు. అందులో పలువురు కర్నల్లు సభ్యులుగా ఉండేవారు.)

ఆధునిక ప్రపంచంలో మనకే ముచ్చట గొలిపేంతటి పక్కా పాలక వ్యవస్థకు అతి తక్కువ వ్యవధిలో రూపకల్పన చేయగలిగిన అనామక, అజ్ఞాత దేశభక్తులు ఆ వ్యవస్థను పది కాలాలపాటు పదిలంగా కాపాడుకోలేక పోయారెందుకని? నాలుగు నెలలు తిరక్కుండా ఘోర పరాజయం పాలై, వారి కష్టమంతా నష్టమనడానికి కారణ మేమిటి? కారకులెవరు?

21వ పేజి తరువాయి భాగం....

దానికి వీసమెత్తు లేదు. అటువంటి దురాక్రమణదారును కత్తి ఎత్తి తరిమి వేయటాన్ని తిరుగుబాటు అనడమే తప్పు. తిరుగుబాటనేది చట్టబద్ధ పాలక వ్యవస్థకు వ్యతిరేకంగా జరిగేది. బయటి నుంచి వచ్చి అక్రమంగా పెత్తనం చేసే నడమంత్రపు శక్తులను వదిలించుకోవటానికి జరిగే ప్రజాపోరాటానికి ఆ పదం వర్తించదు. విదేశీ దురాక్రమణదారుకు గట్టి శాస్తి చేయటం ఈ గడ్డమీద పుట్టిన ప్రతి ఒక్కరి అవశ్య కర్తవ్యం. మధ్యలో వచ్చిన వారి భరతం పట్టాక ఒరిజినల్ హక్కుదారుకు అధికారాన్ని అప్పగించటమే సరైన పని. అలాంటి హక్కుదారు వీంటేగింటే మొగల్ పాదుషా ఒక్కడే. అతడూ పనికిరాడనుకుంటే మిగిలేది శూన్యమే. ఆ శూన్యాన్ని ఎలా పూరించవచ్చున్న విషయంలో 21వ శతాబ్దంలో మనకున్నన్ని తెలివితేటలు 19వ శతాబ్దపు సాధారణ విప్లవకారులకు ఉండాలనుకోకూడదు. అప్పటి దేశ కాల పరిస్థితుల్లో విదేశీయులను తన్ని తగలేసే జాతీయ మహాత్కార్యానికి పీటల మీద కూచోబెట్టగల మనిషిగా మొగల్ పాదుషాను ఎన్నుకోవటం ఏ రకంగా చూసినా సమర్థ నీయమే.

ఇక్కడ గమనించాల్సిన అంశమేమిటంటే - పాదుషా బావులి కింద పోరాటం సాగించాలన్నది విప్లవకారులు చేసిన ఆపద్ధర్మ నిర్ణయమే తప్ప అందులో పాదుషాకు ప్రమేయం రీమీ లేదు. పోరాటంలో అతని పాత్ర అంటూ ఏదీ లేదు. అసలు మే 11 ఉదయం విప్లవకారులు తన దగ్గరికి రాబోతున్న సంగతే అతడికి తెలియదు. అతడి చెంతకు చేరిన తరవాతైనా విప్లవం మొగల్ పాదుషాకు మోకరిల్లి, అతడి దయాదాక్షిణ్యాలపై ఆధారపడి ఉంటే నిస్సందేహంగా ఆక్షేపణీయమే. లెక్కలేనన్ని బలహీనతలకు, అవలక్షణాలకు పెట్టింది పేరయిన పాడుబడ్డ మొగల్ సింహాసనానికి జాతీయ సమరాన్ని ఎలా పాదాక్రాంతం చేశారని నిలదీసి తీరాల్సిందే. కాని - పాదుషాను ఆశ్రయించాక పాదుషా చెప్పినట్టు విప్లవం నడిచినిదా ? విప్లవం కోరినట్టు పాదుషా నడిచాడా ?

దీనికి సరయిన సమాధానం చెప్పగలిగిన వాడు బహదూర్‌షా ఒక్కడే. నాలుగు నెలల కల్లా ఢిల్లీని మళ్లీ తెల్లవాళ్లు ఆక్రమించి, తనను చెరబట్టాక తనపై జరిపించిన ఏకపక్ష విచారణలో విప్లవకారులకూ తనకూ మధ్య సంబంధాల గురించి పాదుషా చెప్పింది:

"I had had no intelligence on the subject previously to the day of the outbreak. About 8 O'clok A.M. the mutinous troopers suddenly arrived... I asked them what their object was and begged of them to go away. In reply they told me to remain a quiet spectator, saying that they staked their lives and would now do all that might be in their power. Fearing thtat I should be killed, I kept quiet... From the day the soldiery came... I remained in their power as such. All papers they thought fit they caused to be prepared, and bringing them to me, compelled me to affix the seal. The mutinous soldiery had established a Court in which all matters were deliberated on... but I never took part in their conferences... I was helpless, and constrained by my fears, I did whatever they required...."

[Ed.K.C.Yadav, *The Trail of Bahadur Shah,* PP 341-345]

(ఆరోజు వరకూ నాకు ఏమీ తెలియదు. ఉదయం 8 గంటలకు తిరుగుబాటు చేసిన ట్రూపర్లు హఠాత్తుగా వచ్చారు.. మీకేమి కావాలి అని అడిగి, వాళ్లను వెళ్లిపొమ్మని ప్రార్థించాను. దానికి జవాబుగా - ప్రాణాలనే పణం పెట్టిన తాము తమకు చేతనైనంతా చేసి తీరతామని వాళ్లు చెప్పారు. నన్ను చూస్తూ గమ్మునుండి పొమ్మన్నారు. వాళ్లకు కావలసిన కాగితాలన్నీ వాళ్లే తయారుచేసుకొచ్చి నా చేత రాజముద్ర వేయినిచుకునేవాళ్లు... తిరుగుబాటు సైనికులు ఒక కోర్టును పెట్టి అన్ని విషయాలూ అందులో చర్చించేవాళ్లు... ఆ సమావేశాల్లో నేనెన్నడూ పాల్గొనలేదు. నేను నిస్సహాయుణ్ని. నన్నేమి చేస్తారోనన్న భయంకొద్దీ నేను వాళ్ల అడిగిందల్లా చేశాను.)

తన ప్రమేయం ఎంతన్నది ముసలి పాదుషాయే ఇంతగా విప్పి చెప్పిన తరవాత కూడా ఎవరికి ఎవరు ఉపయోగపడ్డారన్నది సందేహమా ?

చీపురపల్లి విజయనగరం జిల్లా ఆర్య సమాజము లో

గాయత్రీ మహాయాగము

చీపురపల్లి విజయనగరం జిల్లా ఆర్య సమాజము వారు నవంబర్ 20న ఆర్య సమాజ భవనము చీపురపల్లిలో నిర్వహించిన గాయత్రీ మహాయాగము.

గాయత్రీ మహాయాగములో పాల్గొన్న 500 మంది జంటలు

యాగములో పాల్గొని బ్రహ్మగా యాగమును నిర్వహించిన ఆచార్య విశ్వశ్రవ, ఆచారిణి వైష్ణవి దేవి. పాల్గొన్న ప్రముఖులలో హైదరాబాద్ నుండి విజయేంద్ర మరియు ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు విఠల్ రావు ఆర్య. ఆర్య సమాజము విశాఖపట్టణము నుండి శ్రీ రవి గారు మరియు లక్ష్మణ్ రావు గారు తదితరలు పాల్గొన్నారు. సమాజ అధికారి శంకర్ రావు మరియు వారి మిత్ర బృందం యజ్ఞ కార్యక్రమమును నిర్వహించారు.

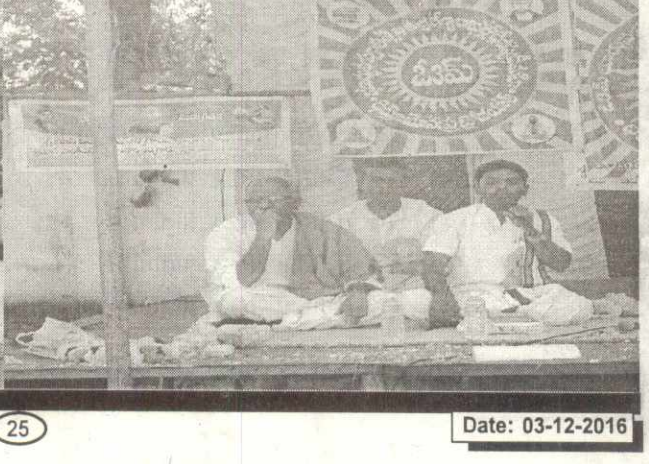

www.thearyasamaj.org

No. 405042/2016 Reminder -2 Dt. 22-10-2016

Election Notification of

Arya Prathinidhi Sabha, A.P., Hyderabad, Telangana

(Sabha represents both States A.P. and Telangana)

Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)

Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना के चुनाव दिनांक ५ फरवरी २०१७ की अधिसूचना

दिनांक २ अक्तूबर २०१६ तथा दिनांक २० अक्तूबर २०१६ के दिनों में आहूत आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना की अंतरंग सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. के चुनाव दिनांक **५ फरवरी** २०१७ रविवार के दिन सम्पन्न करवाएं जाएं। आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. हैदराबाद, तेलंगाना के चुनाव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के देख रेख में करवाए जाएंगे।

सभा की अंतरंग बैठकों में तथा सार्वदेशिक सभा की अंतरंग बैठक में लिए गए निर्णयानुसार वर्ष २००१ में संयुक्त आन्ध्र प्रदेश प्रान्त की जो समाजें आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. से सम्बन्धित रहीं है उन्हीं आर्य समाजों से प्रतिनिधि आवेदन पत्र लिए जाएंगे। आर्य समाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे अपनी-अपनी समाजों के चुनाव नवम्बर के अंत तक सम्पन्न करवा कर (समस्यात्मक आर्य समाजों के चुनाव सभा तत्वावधान में होंगे) १७ दिसम्बर २०१६ तक प्रतिनिधि आवेदन पत्रों को सभा के कार्यालय में नियमों का पालन करते हुए जमा करवाएं। समाजें निम्नलिखित अंशों को पूरा कर सभा में निर्धारित तिथि के अंदर प्रतिनिधि आवेदन-पत्र जमा करा दें। १७ दिसम्बर २०१६ तक प्राप्त होने वाले आवेदन पत्रों को १८ दिसम्बर २०१६ रविवार के दिन आहूत किए जाने वाले अंतरंग अधिवेशन में स्वीकृति के लिए रखा जाएगा। अंतरंग अधिवेशन में स्वीकृति के बाद २५ दिसम्बर को आहूत की जाने वाली सभा की साधारण सभा में भी स्वीकृति ली जाएगी। स्वीकृति प्राप्त संबंधित प्रतिनिधियों को चुनाव में भाग लेने के लिए सूचना दी जाएगी।

१. नामांकन पत्र दाखिल करने की तिथि	**२९ जनवरी २०१७**
२. नामांकन पत्र जांच करने की तिथि	**३० जनवरी २०१७**
३. नामांकन पत्र वापस लेने की तिथि	**३१ जनवरी २०१७**
४. चुनाव	**०५ फरवरी २०१७**

इस पत्र के साथ प्रतिनिधि नमुना फॉर्म संलग्न हैं, जिसे आर्य जीवन में भी प्रकाशित किया जाएगा, की पूर्ति कर अधिकारियों के हस्ताक्षर सहित समाज का **Stamp** लगाकर सभा में आवश्यक शुल्क के साथ दाखिल करें।

१) आर्य समाज का विवरण
२) समाज का प्रतिज्ञा पत्र
३) समाज के साधारण अधिवेशन में प्रतिनिधियों के निर्वाचन संबंधी पत्र के साथ प्रतिनिधि आवेदन पत्र
४) प्रतिनिधियों का प्रतिज्ञापत्र
५) समाज के अधिकारियों द्वारा सभा को दिया जाने वाला शपथ पत्र
६) आर्य समाज के सभासदों की सूची
७) दशांश व अन्य शुल्क निम्न लिखित रूप से जमा करवायें।
८) सभासदों के वार्षिक चंदा का दशांश (तीन वर्षों का)
(वार्षिक चन्दा प्रति सभासद रुपये २५० रहेगा, इससे कम वालों को स्वीकृति नहीं दी जाएगी।

ब) प्रवेश शुल्क हर प्रतिनिधि पर २५ रुपए।

क) प्रतिनिधि शुल्क हर प्रतिनिधि पर २५ रुपए।

ड) आंदोलन शुल्क हर समाज की ओर से ३०० रुपए।

ख) समाज को सम्पत्ति से तथा अन्य स्रोतों से अगर आय हो, तो उस आय का **२ प्रतिशत प्रतिबर्ष या कुल आय का प्रति तीन वर्ष में केवल एक बार ही सभा के चुनाव के समय रु.५०००/-मात्र (रुपए पाँच हज़ार), दोनों में जो कम हो, देय होगा।।**

१) प्रथम ९ सभासदों पर १ प्रतिनिधि पश्चात हर २० सभासदों पर एक प्रतिनिधि अर्थात्
२) २९ सभासदों पर २ प्रतिनिधि
३) ४९ सभासदों पर ३ प्रतिनिधि
४) ६९ सभासदों पर ४ प्रतिनिधि
५) ८९ सभासदों पर ५ प्रतिनिधि।पाँच से अधिक प्रतिनिधि स्वीकृत नहीं किये जाएंगे।

www.thearyasamaj.org

No. 405042/2016 Reminder -2 Dt. 22-10-2016

Election Notification of
Arya Prathinidhi Sabha, A.P., Hyderabad, Telangana

(Sabha represents both States A.P. and Telangana)

Reg. No. 6/52 (Old), 1342 (New and amended)

Maharshi Dayanand Marg, Sultan Bazar, Hyderabad.

ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ ఎన్నికల నోటిఫికేషన్ - ఎన్నికల తేది : 5-2-2017

తేది 2వ అక్టోబర్ మరియు 20వ అక్టోబర్ 2016 రోజులలో నిర్వహించబడిన ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అంతరంగ సమావేశాలలో ఆర్యప్రతినిధి సభ యొక్క ఎన్నికలు 5వ ఫిబ్రవరి 2017 ఆదివారము నాడు నిర్వహించుటకు నిర్ణయించనైనది. ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ యొక్క ఎన్నికలు సార్వదేశిక్ ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూఢిల్లీ వారి సమక్షములో వారి ఆధ్వర్యములో నిర్వహించబడును.

ఆర్యప్రతినిధి సభ మరియు సార్వదేశిక్ ఆర్యప్రతినిధి సభ యొక్క అంతరంగ సమావేశాలలో నిర్ణయించిన ప్రకారము 2001లో సంయుక్త ఆంధ్రప్రదేశ్ ప్రాంతమునకు సంబంధించిన (ఆంధ్రప్రదేశ్ మరియు తెలంగాణ రాష్ట్రాలు) ఏ ఆర్య సమాజాలు ఆర్యప్రతినిధి సభతో అనుబంధితంయై ఉన్నవో ఆ-ఆ ఆర్యసమాజాలకు ప్రతినిధులను పంపుటకు అధికారము ఉన్నది. ఆర్య సమాజముల అధికారులతో విజ్ఞప్తి ఏమనగా తమ-తమ ఆర్య సమాజముల యొక్క ఎన్నికలను (సమస్యాత్మక ఆర్య సమాజముల యొక్క ఎన్నికలు సభ నిర్వహించును) నవంబర్ చివరి వరకు పూర్తి చేసుకొని 17వ డిసెంబర్ 2016 నాటి వరకు మీ సమాజము నుండి ప్రతినిధి సభకు పంపవలసిన ప్రతినిధుల యొక్క ఫారాలను నియామాలు అన్నింటిని పాటిస్తు సభాకార్యాలయములో దాఖలు చేయవలెను. 17 డిసెంబరు 2016 వరకు కార్యాలయములో దాఖలు అయిన ప్రతినిధుల ఫారాలను 18 డిసెంబర్ 2016 ఆదివారము నాడు నిర్వహించబడే అంతరంగ సమావేశములో స్వీకృతికై పెట్టడం జరుగును. అంతరంగ సమావేశములో స్వీకరించబడిన ప్రతినిధుల యొక్క జాబితాను 25 డిసెంబరు 2016 నాడు నిర్వహించబడే సర్వసభ్య సమావేశములో పునః స్వీకృతికై పెట్టడము జరుగును. కావున నిర్లక్ష్యము చేయకుండా మీ సమాజముల ఎన్నికల సందర్భములో, ప్రతినిధి సభకొరకై ఎన్నుకోబడిన ప్రతినిధి ఫారాలను తప్పక నియమ నిబంధనాలను పాటిస్తూ 17 డిసెంబరు 2016 వరకు దాఖలు చేయగలరు.

ఎన్నికల కార్యక్రమము

1.	నామినేషన్ పత్రాలు దాఖలు చేసే	తేది 29 జనవరి 2017.
2.	నామినేషన్ పత్రాల పరిశీలన	తేది 30 జనవరి 2017.
3.	నామినేషన్ పత్రాలను వాపసు తీసుకునే	తేది 31 జనవరి 2017.
4.	ఎన్నికలు	తేది 5వ ఫిబ్రవరి 2017.

కింది వివరములతో ప్రతినిధి ఫారాలను సమాజము యొక్క ముద్ర వేసి దాఖలు చేయవలెను.

1. సమాజము యొక్క వివరణ.
2. సమాజయము యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము.
3. సమాజ యొక్క సర్వసభ్య సమావేశములో ప్రతినిధులు ఎన్నుకోబడిన పత్రము.
4. ప్రతినిధి యొక్క ప్రార్థన పత్రము.
5. ప్రతినిధి యొక్క ప్రతిజ్ఞ పత్రము.
6. ఆర్యప్రతినిధి సభకు సమాజము వైపున ఇవ్వవలసిన ప్రతిజ్ఞ పత్రము (affidavit)
7. ఆర్య సమాజము యొక్క సభాసదుల పట్టిక.
8. ఇవ్వవలసిన దశాంశము మరియు ఇతర శుల్కము.

అ) సభాసదుల వార్షిక సభ్యత్వ రుసుముపై 10% (3 సం॥ల కాలమునకు సంబంధించినది మరియు ప్రతి సభ్యుడి సభ్యత్వ రుసుము రూ॥ 250/- ప్రతి సంవత్సరము ఉండును)

ఆ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి ఒక్క ప్రవేశ శుల్కము — రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము.

ఇ) ప్రతి ఒక్క ప్రతినిధి యొక్క ప్రతినిధి శుల్కము — రూ॥ 25/- ప్రతి సంవత్సరము.

ఈ) సమాజము నుండి మూడు సంవత్సరములకు గాను ఆందోళన శుల్కము — రూ॥ 300/-.

ఎ) సమాజమునకు అచల ఆస్తి నుండి ఆదాయము ఉన్నచో మొతము ఆదాయముపై ప్రతి సంవత్సరానికి 2% చొప్పున మొత్తము 3 సంవత్సరం ఆదాయ శుల్కము ఇవ్వవలెను. లేదా మొత్తము మూడు సంవత్సరములకు గాను ఆస్తిపై వచ్చిన ఆదాయమునకు రూ॥ 5,000/- కట్టినచో సరిపోవును. (ఏది తక్కువ ఉంటే దానిని స్వీకరించబడును).

ఏ) సమాజము నుండి గరిష్టముగా ఐదు ప్రతినిధులను మాత్రమే పంపుటకు అధికారము ఉన్నది.

1) మొదటి 9 సభాసదులపైన ఒక ప్రతినిధిని (తదుపరి సంపూర్ణంగా 20-20 సభాసదులుపైన ఒక్కొక్కరిని ఎన్నిక చేసి పంపించవచ్చును అనగా

(2) 29 సభాసదులపై రెండు ప్రతినిధులను,

(3) 49 సభాసదులపై మూడు ప్రతినిధులను.

(4) 69 సభాసదులపై నాలుగు ప్రతినిధులను.

(5) 89 సభాసదులపై ఐదు ప్రతినిధులను పంపించ వచ్చును.లెక్క వివరణ ఇదే పత్రికలో చివరి పేజీలో ఇవ్వనైనది.

భవదీయ

హరికిషన్ వేదాలంకార్ — మంత్రి

విఠల్‌రావు ఆర్య — ప్రధాన్

ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ

www.thearyasamaj.org

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month
आर्य जीवन 18-11-2016 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor: Vithal Rao Arya, M.Sc. LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-95.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ

To,

సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ న్యూ ఢిల్లీ ఆధ్వర్యమున

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సౌజన్యంతో

హైదరాబాదు నగరంలో

జాతీయ స్థాయి విద్వాంసుల - బుద్ధిజీవుల బృహద్ సమ్మేళనం

2 నుండి 5 ఫిబ్రవరి 2017 వరకు

విజ్ఞప్తి

ఆర్య బంధువులారా !

ప్రాతః స్మరణీయులు మహర్షి దయానంద సరస్వతి గారిచే క్రీ.శ. 1875లో సృజింపబడిన మహోద్యమం ఆర్యసమాజం. మనదేశ స్వాతంత్ర్య సమరంలో ఈ సమాజం పోషించిన పాత్ర చరిత్రాత్మకమైనది. ధార్మిక, సామాజిక మరియు విద్యారంగాల్లో విప్లవాత్మకమైన సంస్కరణలు గావించిన ఘనత ఈ సమాజానికి ఉంది. ప్రస్తుత పరిస్థితుల్లో ఈ సమాజ క్రియాశీలత తగ్గుముఖం పట్టిందని ఆర్య సమాజ శ్రేయోభిలాషులు చింతిస్తున్నారు. అందుచేత ఆర్య సమాజ కార్యకలాపాలను కాలానుగుణంగా విస్తృతం చేసి ఈ ఉద్యమాన్ని బలోపేతంగావించాలనీ, పూర్వ వైభవాన్ని నెలకొల్పేందుకు పునరంకితం కావాలని విజ్ఞులు భావిస్తున్నారు.

ఈ దశలో ముందడుగు వేసేందుకు, ప్రణాళికాబద్ధమైన కార్యచరణను రూపొందించేందుకు గాను నిర్వహింపబడుతున్నదే ఈ సమ్మేళనం. ఈ సమ్మేళనంలో దేశం నలుమూలల నుంచి మహాత్ములు వైదిక (ఆర్య) విద్వాంసులు, గురుకులాల ఆచార్యులు, ప్రముఖ ఆర్య సమాజ నాయకులు, భజనోపదేశకులు తదితరులు పాల్గొంటున్నారు. వీరంతా ప్రస్తుత దేశ-కాల పరిస్థితులను, సమస్యలను క్షుణ్ణంగా సమీక్షించి తగు నిర్ణయాలుగైకొని, మార్గదర్శక సూచనలు చేస్తారు. కావున మీరంతా అత్యధిక సంఖ్యలో విచ్చేసి సమ్మేళన కార్యక్రమాల్ని జయప్రదం చేయాలని విజ్ఞప్తి చేస్తున్నాము.

భవదీయులు

స్వామి ఆర్యవేశ్
ప్రధాన్ (అధ్యక్షులు)
సార్వదేశిక ఆర్యప్రతినిధి సభ-న్యూ ఢిల్లీ

పండిత్ సోమ్‌దేవ్ శాస్త్రి
ముంబయి
సంయోజకులు

ప్రొ॥ విఠ్ఠల్ రావు ఆర్య
మహామంత్రి (ప్రధానకార్యదర్శి)
సార్వదేశిక ఆర్య ప్రతినిధి సభ-న్యూ ఢిల్లీ

హరికిషన్ వేదాలంకార్
మంత్రి
ఆర్యప్రతినిధిసభ ఆంధ్రప్రదేశ్-తెలంగాణ

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor Vithal Rao Arya • acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, Email : acharyavithal@gmail.com
संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.